॥ जैन शास्त्रकी महिमा ॥ सवैया ३१ ॥

जोईसकौ सूनैतीसै काननकौ हीतकारि, जो ईसकौ सूनैतीसै मंगलकौ मूल है ॥
जोईसकौ पढैताहि ज्ञानतो वीशेष बढै, यादिकरै सो तो पावै भौदधिकौ कूल है ॥
सकल गरंथनीमें सारनीज आतमा है, शुद्ध ऊपयोगमई ताकौ जो न भूल है॥
सोई साध सोई संत सोई सब गूणवंत, लहैजु अनंत सूख नासै कर्मधूल है ॥१॥

ये पुस्तक नाना रामचंद्र नाग इनोने मुंबई निर्णयसागर यंत्रमे छपायके मसिद्ध किया.
मिति चैत्रशुद्ध १ शके १८२२ सन १९००





॥ द्यानतरायकृत चरचाशतक ग्रंथकी अनुक्रमणिका ॥

॥ इति० ॥

॥ अथ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	अशुद्ध	पंक्ति	शुद्ध.
१	धाकमै.	६	धोक मै.
२०	३३१५७।१८	८	३३१५७।१७
३२	१३ दधिमुख.	१६	१६ दधिमुख.

चरचाशतककी किंमत १। रुपया, दस प्रत लेनेवालेको १ प्रत मोफत मिलेगी. सो १०० प्रत लेनेवालेको ७५ रुपया लेगे. शिवाय डाकखर्च.

नाना रामचंद्र नाग.

पुस्तक मिलनेके ठिकाने.

रा. रा. माणिकचंद पानाचंद शेटजी
जव्हेरीबजार, घरनं० ३४० मुंबई.

रा. रा. गांधी बापु पानाचंद.
जिल्हा सातारा, फलटण.

शास्त्री पासू गोपाल फडकुले
जैनपाठशाला, सोलापूर.

शास्त्री. कलाप्पा भरमाप्पा निटवे. नांदणी.
जैनेंद्र प्रेस, कोल्हापूर.

अथ श्रीचरचाशतक द्यानत रायजी कृत प्रारंभ

॥ अर्हंत स्तुति ॥ छंद छप्पै ॥

जय सर्वज्ञ, अलोक लोक इक उडुवत देखैं ॥ हस्ता मलज्यौं, हाथलीक ज्यौं, सरवविशेखैं ॥ छहौं दरव गुण, परज कालत्रय, वर्तमान सम ॥ दरपण जेम प्रकाश, नाशिमल कर्ममहातम ॥ परमेष्ठी पांचौं विघनहर, मगलंकारी लोकमैं मन वचन काय, सिरलाय भुव, आनंदसो द्यो धाकमै ॥ १ ॥

अर्थ– जय कहिये जयवंत रहो, सर्वज्ञ कहिये अरिहंत देव. जैसें आकाशमंडलमैं येक तारा सर्वोंकै दीखै, तैसें सर्वज्ञ देव लोकालोकको प्रत्यक्ष युगपत् देखै और जाने ॥ कैसें देखैं और कैसें जानै; जैसे हाथविखै आवला अथवा हाथकी लीक प्रत्यक्ष दीखै, तैसें सर्व विशेषकरि भले प्रकार देखै है जानै हैं ॥ छह द्रव्य (१ जीव १ पुद्गल १ धर्म १ अधर्म १ आकाश १ काल)कै तीनो कालसंबंधी अनंतानंत गुण अनंता अनंत पर्यायकौं, केवल ज्ञानी वर्तमानके नाई युगपत् देखैं ॥ जैसी आरसीकी निर्मलता पाय घटपट सहज दीखै, तैसे केवलज्ञानमैं इच्छा विना छह द्रव्यके गुण पर्याय प्रत्यक्ष भासैं- चार घातिया कर्म (१ ज्ञानावरण १ दर्शनावरण १ मोहनीय १ अंतराय)का नाश करनेसे केवल ज्ञान प्राप्त होता है तव अरिहंत कहीये ॥ पर कहिये परमात्मा ताकै इष्ट ताते परमेष्ठी कहीये, ते कौन कौन !

१ अर्हंत १ सिद्ध १ आचार्य १ उपाध्याय १ साधु, ये पाचौका नाम कैसा है, परमेष्टी मंत्र है, सर्व विघनौका नाश करनेवाला है अर मं कहिये पाप तिसकौं गालै (नाशकरै) सो मंगल अथवा मंग कहिये सुख, लाति कहिये देवै, सुख देवै सो मंगल, ताके करनेवाले है।। मन वचन काय शुद्ध करिकै, मस्तक पृथ्वीसो लगायकै, बडा हर्षसहित पंच परमेष्ठीकौ वंदौ हो.।।१।।

॥ सर्व जीव राशीकै अनंतवे भाग प्रमाण अनंते सिद्ध हैं तिनकी स्तुती । छप्पै ॥

लोकईश तनुवातशीस, जगदीश विराजैं ॥ येक रूप, वसुरूप गूण, अनंतातम छाजैं ॥ अस्ति वस्तु परमेय, अगुरु लघु द्रव्य प्रदेशी ॥ चेतन अमूर्तिक, आठगुण अमल सुदेशी ॥ उतकृष्ट जघन्य अवगाहना, पद्मासन खरगासन लसै ॥ सब ग्यायक लोक अलोक विधी, नमौ सिद्ध भवभय नसै ॥ २ ॥

अर्थ– कैसे है सिद्ध परमेष्ठी ! तीन लोकके ईश्वर हैं. तीन लोकके ऊपर तनु वात वलयकैं अंतमैं विराजे हैं ॥ बहुरि कैसे हैं सिद्ध परमेष्टी ! सिद्धद्रव्यकी अपेक्षा येकरूप हैं, व्यवहार करि आठगुण (१ सम्यक्त्व १ ज्ञान १ दर्शन १ वीर्य १ सूक्ष्मत्व १ अवगाहना १ अगुरुलघु १ अव्याबाध) मयीं है, अर निश्चय नयतै अनंतानंत गुणकरि विराजमान हैं ॥ १ अनेक वस्तु स्वभावने लीये होय सो अस्तित्व कहीये, १ अनेक वस्तु स्वभावसहित होय सो वस्तुत्व कहीये १ अपनी मर्यादा लीये होय सो प्रमेयत्व कहीये १ न भारी न हालका सो अगुरु लघु

कहीये १ अपने गुण पर्यायने लीये होय सो द्रव्य कहीये १ अपना सत्ताविषै तिठे सो प्रदेशी कहीये ॥ १ अपना चेतनस्वभाव (ज्ञान) लीये होय सो चेतन कहीये १ चेतन स्वभाव (ज्ञान दर्शन) सहित अर पुद्गलके वीस (स्पर्श रस गंध वर्ण) रहित अमूर्तिक हैं. ये आठ गुण निर्मल हैं द्रव्यके स्वाभाविक हैं ॥ सिद्धालयमें सिद्धकी उत्कृष्ट अवगाहना सवापांचसै धनुषकी हैं, अधीक नहीं पाईये, अर आठ वर्षा वालाके केवल ज्ञान उपजे तिसकी साढेतीन हाथकी जघन्य अवगाहना पाइये, यातैं कम न पाइये. सिद्धालयमें दोय आसन हैं, येक पद्मासन येक कार्योत्सर्गासन, सिद्धांतमें ८४ आसन कहे हैं तिनमैं इन दोनौंही आसनतैं मोक्ष हो यहैं और आसनतै मोक्ष नहीं, यह नियम है ॥ लोक अलोकको देखन जाननहारे सिद्धपरमेष्ठी हैं, तिनकौं मै नमस्कार करौ हौ, नमस्कार करनेसे संसारके भव भ्रमणका नाश हो है ॥ २ ॥

॥ आचार्य उपाध्याय सर्व साधु तीनौं मुनीनकी स्तुती ॥ छप्पै छंद ॥

आचारिज उवझाय साध, तीनौ मनध्याऊ ॥ गुण छत्तीस पचीस वीस अरु
आठ मनाऊ ॥ तीनौकौं पद्साध, मुगतिकौं मारग साधै ॥ भवतन भोग विराग,
राग सिवध्यान अराधै ॥ गुण सागर अविचल मेरुसम, धीरजसौ परि
सह सहैं ॥ मै नमौ पाय जुगलाय मन, मेरौ जिय वांछित लहैं ॥ ३ ॥

अर्थ— १ दर्शनाचार १ ज्ञानाचार १ चारित्राचार १ तपाचार १ वीर्याचार ये पांच आचार आप आचरैं अर औरकौं अचरावैं सो आचार्य मुनी हैं. ग्यारा अंग, चौदा पूर्व, जिनवाणीकौ

आप कंठ पढै अर औरकौ पढावैं सो उपाध्याय मुनी हैं. पांचौ इंद्रिय अर छठा मन वश्य करैं सो साधु मुनि कहीये. इन तीनौं मुनीनकौं मनमैं ध्याऊं हूं ॥ कैसै हैं ये तीनौं साधु ! आचार्य मुनीके गुण छत्तीस (बारा प्रकारें तप, छह आवस्यक क्रिया, पांच अचार, दश लक्षणधर्म, तीन गुप्ति) हैं. उपाध्याय मुनीकें गुण पचीस (११ अंग १४ पूर्व कंठ पढै) हैं. साधु मुनीकें मूल गुण अठाईस (५ महाव्रत ५ सुमति ५ इंद्रिय वस्य करना ६ आवस्यक्रिया, १ केशलोच १ वस्त्रत्याग १ स्नानत्याग १ भूमीपै सोवन १ दंत धोवाका त्याग १ खडेसे भोजन १ येकवार अल्प भोजन.) हैं. इनमैं येक गुण कम हुवा तो वो मुनी नहीं है, अठाईस मुख्य गुण पालैं अर चौरासी लाख उत्तर गुणोंकों अंगीकार करै हैं, ऐसें मुनिराजकों मैं वारंवार चिंतवन करूं हूं॥ आचार्य उपाध्याय साधु ये तीनौं मुनी मोक्षमार्ग (सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक् चारित्र) साधैं तातै तीनौको साधु कहीये ॥ कैसें हैं ये तीनौं साधु ! भवसंसार, शरीर, पांचों इंद्रियके विषय, इनतैं अत्यंत विरक्त हैं. येक मोक्षपै राग (प्रीति) है; औरपै नाहीं अर धर्मध्यानके चार भेद, शुक्ल ध्यानके चार भेद आराधे हैं ॥ गुणके समुद्रहै इन समान और निमैं येकभी गुण नाही, ध्यानमैं अडोल मेरू समान हैं, बडे धैर्यवान् है २२ परीषह सहै है, उपसर्गादिकतैं कदाकाल नेकमात्रभी चीगै नाहीं॥ ऐसें साधुके चरणकमलनिकों मै मनलायकै नमस्कार करूंहूं तातैं मेरा जीव वांछित फल पावै ॥ ३ ॥

इति पंचपरमेष्ठी स्तुती संपूर्ण ॥ १ ॥

॥ अथ पुन्य पुरुष कथन प्रारंभ ॥ प्रथमतः जिनमतकी श्रद्धा कथन ॥ छंद छप्पै ॥

तिहूंकाल, षटदरव, पदारथ नव, तुम भाखै ॥ सप्ततत्व, पंचास्ति काय, षट कायक राखै ॥ आठ करम, गुण आठ भेद, लेश्या षटजाने ॥ पंच पंचव्रत. समिति, चरित, गति, ज्ञान, वखाने ॥ सरधै प्रतीति रुचि मनधरै मुकति मूल समकित यही ॥ पदनमौ जोरिकरसीसधर धन सर्वज इह विधि कही ॥ ४ ॥

अर्थ– तीनकाल–अतीत, अनागत, वर्तमान. छहद्रव्य– जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल. नवपदार्थ– जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये सप्ततत्व हैं इनमें पुन्य, पाप, गिणना तव नव पदार्थ होहै ऐसे सर्वज्ञने कह्या है ॥ पंचास्तिकाय–पृथ्वीकाय, आपकाय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पतीकाय, ये ५ अर छट्टा त्रस (द्वींद्रियादि पंचेंद्रीपर्यंत जीव) इनकी दया करनी रक्षा करनी ॥ आठ करम– ज्ञान आवरण, दर्शन अवरण, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम, गोत्र, अंतराय. सम्यक्तके आठ गुण– निःशंका, निःकांक्षा, निर्विचिकित्सा, अमूढ दृष्टी, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावना. सिद्धाचे आठ गुण– अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सौख्य, अनंत वीर्य (शक्ती) क्षायक सम्यक्त, अव्याबाध, अमूर्तिक, अगुरुलघु. छहलेश्या–कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ॥ पांचव्रत– अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रहत्याग. पांच सुमती– ईर्या, भाषा, एषणा, आदान निक्षेपना, प्रतिष्टापना. पांच चारित्र– सामायिक, छेदोप स्थापना, परिहार विशुद्धी, सूक्ष्म सांपराय, यथाख्यात. पांच गति–

मनपर्ययज्ञान, केवलज्ञान ॥ इतनी कथनीकौ जे जीव मन वचन कायकरि सत्यमाने विश्वासकरै रुची से प्रीतिकरै चित्तमें धारन करै; यही मोक्षका मूल येक सम्यक दर्शन है, ऐसा सर्वज्ञ देवने कह्या है ॥ तिस सर्वज्ञ देवके चरणकमलनिकौ मस्तकपरि हाथ धरिकै नमस्कार करूंहूं· ते सर्वज्ञ देव धन्य है, जिनोने दिव्य ध्वनीमें यह विधि साक्षात बताई ॥ ४ ॥

॥ छहकाल, छह संहनन, चौदा गुणस्थान कथन ॥ छप्पै ॥

प्रथम द्वितिय अर तृतिय कालमें पहला जानो ॥ चौथे षटसंहनन, पंचमें
तीन वखानों ॥ करम भूमितिय तीन, येक छट्टेके माही ॥ विकल चतुष्कै
येक, येक इंद्रीकै नाही ॥ षटकहे सातगुण स्थानलग, तीन इग्यारेलौ
लहै ॥ इक क्षपक श्रेणी गुण तेरहै, धन जिनवाणीमें कहे ॥ ५ ॥

अर्थ–पहिला काल च्यार कोटा कोटी सागरका है, इसका नाम सुखमा सुखमा (अतिसुख) है दूसरा काल तीन कोटाकोटी सागरका है; इसका नाम सुखमा है इसमें सुखही है, तीसरा काल दोय कोटाकोटी सागरकाहै, इसका नाम सुखमा दुखमा (आदि सुख अंती दुख) है, इन तीनौं कालके जीव मरिकरि देवगतीमें जाय और गतीमें नजाय यह नेंम है, सम्यक दृष्टी सौधर्म, ईशान स्वर्गमें जाय अर मिथ्या दृष्टी भुवनत्रिकमें उपजै· इन तीनौ कालमै भोगभूमि (कल्पवृक्षका सुख) है· १ वज्रवृषभ नाराच संहनन है ॥ चौथा काल येक कोटाकोटी

सागरकौ बियालीस हजार वर्ष घाट हे, इसका नाम दुखमा सुखमा (आदि दुख अंती सुख,) हे, जेसे, किसाण पहले कष्टसे खेती करै तब पीछे सुखसुं खाय. चौथे कालमें ६३ शलाका पुन्य पुरुष उपजे हैं, चौथे कालमें छहू संहनन पाइये. पांचमा काल एकवीस हजार वर्षकाहै इसका नाम दुखमा (आदि अंत दुःख) है, पंचम कालमें अर्द्धनाराच, कीलक, स्फाटिक, ये तीनू संहनन पाईये और नाहीं ॥ अर कर्मभूमीके स्त्रीके येही तीन संहनन पाईये और कोई संहनन नपाईये. छट्ठाकाल एकवीस हजार वर्षका हैं इसका नाम दुखमा दुखमा (अती दुःख) है. छट्ठाकालमें येक स्फाटिक संहन पाइये और पांच संहनन पाईये नाही ॥ विकल चतुष्क (बेइंद्री, तीन इंद्री, चौइंद्री,) अर असंज्ञी पंचेंद्री इनिकौं १ स्फाटिन ही है. येकेंद्री (पृथ्वी, आप, तेज, वायु, वनस्पती.) ये पांच स्थावरकौ संहनन (हाड) नाही ॥ छहौ संहननवाले सातमे गुणस्थानतक पाइये, गुणस्थान नाम परिणामका है. अर अर्ध नाराच, कीलक, स्फाटिक, ये सातमें गुणस्थानके ऊपर न जाय. वज्रवृषभ नाराच, वज्रनाराच, नाराच, ये तीनू संहननवाले ग्यारमें गुणस्थानपर्यंत पाईये; वज्रनाराच, नाराच, ये ग्यारमें गुणस्थानके ऊपर नजाई सकै ॥ वज्रवृषभ नाराच, संहननवाला क्षपक श्रेणी माडे. और पांच संहननवाले न माडे. तेरमे गुणस्थानतक वज्रवृषभ नाराच संहनन है, आगै संहनन (हाड) नाही, ऐसा जिनवानीमें कह्या है ती वानी धन्य है ॥ ५ ॥

॥ छह संहनवाले जीवमरिकरी कहां कहा जाय सो कथन ॥ छप्पै ॥

छहौ तीसरे जाइ, पांच चौथे पंचमलग ॥ चारि संहनन छटे, इक
सात नरक मग ॥ छहौं आठमे स्वर्ग, पंच वारम सुरजावे ॥ चारि
सोलमे लोक, तीन नौ ग्रीवक पावे ॥ दो संहनन नउ नउत्तरे, इक
पंचपंचोत्तरे ॥ इक चरम शरीरी शिवलहै, वंदों जैन वचन खरे ॥ ६ ॥

अर्थ– छहों संहननवाले जीव मरिकरी, पहलेते तीसरे नरकपर्यंत जाय (उपजे) है. स्फाटिकविना पांच संहननवाले पांचमें नरकपर्यंत जाय, ३ रेके आगे स्फाटिक जाय नही ॥ कीलक, स्फाटिकविना ४ संहननवाले छटे नरकतक जाय, कीलक पांचके आगे न जाय. येक वज्रवृषभ नाराच संहननवाला सातवे नरकमें जाय और पांचे संहनन जाय नहीं ॥ भावार्थ– स्फाटिक संहनन वाला तीसरें नरकतक जाय आगे जाय नही. कीलक संहननवाला पांचमें नरकतक जाय आगे जाय नहीं. अर्धनाराच, नाराच, वज्रनाराच, ये तीन् छटे नरकतक जाय आगे जाय नहीं. येक वज्रवृषभ नाराच सातवे नरके जाय, और कोइ न जाय. छहो संहननवाले जीव मरकर आठमें स्वर्गतक उपजे, स्फाटिकवाला ८ के ऊपर न जाय. स्फाटिकविना पांच संहननवाले वारमे स्वर्गतक जाय, कीलक १२ के ऊपर जाय नहीं ॥ स्फाटिक, कीलकविना चार संहननवाले सोलमे स्वर्गपर्यंत जाय, अर्ध नाराच सोलमेके ऊपर न जाय, नाराच, वज्रनाराच, वज्रवृषभनाराच, ये तीन् संहननवाले नौ

ग्रीवेयक पर्यंत जाय, नाराचवाला नौग्रीवेयकके ऊपर न जाय ॥ वज्रनाराच, वज्रवृषभनाराच ये दोनू संहननवाले अनुदिश विमान पर्यंत जाय, वज्रनाराचवाला अनुदिश विमानके ऊपर न जाय, येक वज्रवृषभनाराच संहननवाला पांच अनुत्तर विमानमै जाय उपजे; वज्रनाराचवाला न जाय ॥ जो जीव चरम शरीरी होय तिसकों वज्रवृषभ नाराचही संहन होय और संहनन होय नाहीं, चरम शरीरी कहिये! संसारके अंतका शरीर है, फेर संसारमे शरीर धरैगा नाही. चरम शरीरी तद्भव मोक्षही जाय यह नियम है. जिनेश्वरके वाणी (जैनशास्त्र) कौं भाव सहीत वंदूहूं ये वाणी सत्य है प्रमाण है, जैन वैन विना ऐसा सत्य मारग कौन दिखावे॥६॥

टीप– जिसकैं हाड अर हाडकी सांधी अर ऊपरका वेष्टन वज्रका है, सो वज्रवृषभनाराच संहनन है. जिसकैं हाड अरकीली वज्रकी होय अर ऊपरका वेष्टन सामान्य होय सो वज्रनाराच है. जिसकैं कीली वज्रकी होय, हाड अर वेष्टन सामान्य होय सो नाराच संहनन है. जिसकैं हाडकै सांधीमें कीली पार न गई होय आधी पैटी होय सो अर्धनाराच है. जिसकैं हाडकै संधीमें कीली हैं नाही परंतु ऊपरके वेष्टन कीली सा जकरबंध लगा है सो कीलक है. जिसकैं हाड जुदा जुदा होय परंतु नस अर चामकरी जकडबंध है सो स्फाटिक है संहनन नाम हाडका है वृषभ नाम ऊपरके वेढनेका है नाराच नाम संधी कीलीका है.

॥ १६९ पुन्यपुरुषका कथन ॥ छप्पै ॥

चोवीसौ जिनराय पायवंदौ सुखदायक ॥ कामदेव चोवीस ईस सुमरौ शिव नायक ॥ भरत आदि चक्रेश दुदश, दुहु सुर नरके स्वामी ॥ नारद पदम

मुरारि और प्रतिहरि जगनामी ॥ जिन मात तात कुलकर पुरुष, शंकर उत्तम जियधरो ॥ कछु तदभव कछु भव धरत मुकतिरूप वंदन करौ ॥ ७ ॥

अर्थ– चोवीस तीर्थंकरनिकें चरणकमलकों वंदौ हूं, ते केसे हे २४ तीर्थंकर महासुखदायक हैं ॥ २४ कामदेव शिव (मोक्ष) गये है तिनकौं सरण करूं हूं, कामदेवकों तद्भव मोक्ष होयहै ॥ भरत आदि १२ चक्री (छह खंडके स्वामी, नव निधि, चौदा रत्नके अधिपती) भये तिनमें आठ चक्री मोक्षगये है. दोय चक्री स्वर्गको गये, दोय चक्री नरकको गये, तेचारूभी येकभव धारण करी मोक्षकौ जासी ॥ ९ नारद, ९ नारायण· ९ प्रतिनारायण· ११ रुद्र· ये आधोगती (नरक) गये· है, परंतु कछु भव धरके मोक्षको जायगे. नव ९ पदम (बलिभद्र) भये तिनमें आठ मोक्षकौ गये अर अंतके १ बलिराम स्वर्गकौ गया है, वो येक भव धरके मोक्षकौ जायगा. ये पुरुष जगमें नामी भये ॥ चोवीस जिनश्वरकी माता पिता· १४ कुलंकर ये सब १६९ जीव उत्तम भये इनमें ६३ शलाकापुरुष भये ॥ इनमे केई जीव तद्भव मोक्ष गये अर केई जीव भवधरिके मोक्ष जायगे तिनकौ मोक्षरूप वंदना करू हूं ॥ ७ ॥

॥ बारह १२ प्रसिद्ध पुरुषके नाम ॥ छप्पै ॥

वंदौ पारसनाथ, नमौं बलि रामचंद्र वर ॥ कामदेव हनुमंत, प्रगट रावण मानीनर ॥ दानेश्वर श्रेयांस, शीलमैं सीतानामी ॥ तप बाहूबली नाम, भाव भरतेश्वर स्वामी ॥ जग महादेव हे रुद्रपद, कृष्णनाम हरि-

भीमवली भुज मानिये ॥ ८ ॥
जानिये ॥ द्यानत कहे, कुलकरमें नाभिनृप

अर्थ– चोवीस तीर्थंकरोमें तेविसमे पार्श्वनाथ स्वामी प्रसिद्ध भये· नव बलिभद्रमें आठवे बलिभद्र रामचंद्र प्रसिद्ध भये ॥ चोवीस कामदेवमें १८ वे हनुमान प्रसिद्ध भये· मानी पुरुषमें आठवा प्रतिनारायण रावण प्रसिद्ध भया ॥ दान देनेमें हस्त नागपुरका राजा श्रेयांस अर पतिव्रतानिमें सीताराणी प्रसिद्ध भई ॥ तप करनेमें बाहूवली प्रसिद्ध भये एकवर्षपर्यंत कायोत्सर्ग (खडे) रहै· मनके परिणामके निर्मलताविषे आदिश्वरका पुत्र भरत चक्रवर्ती विख्यात भया, अंतर मुहूर्तमें केवल ज्ञान उपज्या ॥ ग्यारा रुद्रमें पार्वतीकंत ११ वा महादेव प्रसिद्ध भया· नव नारायणमें नवमा कृष्ण प्रसिद्ध भया ॥ द्यानतराय कहे १४ कुलंकरमे नाभिराजा· अर बलमें कुंती पुत्र भीमवली प्रसिद्ध भया ॥ ८ ॥

चोवीस तीर्थंकरौके शरीकावर्ण ॥ छप्पै ॥

पुष्पदंत प्रभुचंद, चंदसम सेत विराजे ॥ पारिसनाथ सुपार्श्व, हरित पन्नामय छाजे ॥ वासुपूज्य अरु पदम. रकत माणिकदुति सोहे ॥ मुनि सुव्रत अरुनेमि, स्याम सुंदर मनमोहे ॥ बाकी सोले कंचन वरन, यह विवहार शरिर धुत ॥ निहचै अरूप चेतन विमल, दरसन ज्ञान चरित जुत ॥ ९ ॥

अर्थ– आठवे चंद्रप्रभ, नववे पुष्पदंत· इन दोनु तीर्थं करके शरीरका वर्ण स्वेत (चंद्रसम) है ॥ सातवे सुपार्श्वनाथ· तेवीसमा पार्श्वनाथ· इन दोनोके शरीरका वर्ण हरित पन्नासम है ॥

छट्ठा पद्मप्रभ. बारमा वासुपूज्य. इन दोनोका वर्ण पद्मराग मणी समान लाल है ॥ वीसमा मुनि सुव्रत. बावीसमा नेमिनाथ. इनका वर्ण नीलमणी समान स्याम हे. अति शोभायमान हे ॥ बाकी सोला तीर्थंकरोके शरीरका वर्ण सुवर्णसमान है. यह व्यवहार करी शरीरका वर्णन कीया, स्तुति करी ॥ निश्चय नय करीकै आत्मस्वरूपी हैं. चैतन्यमइ हैं. अरूपी है. अति निर्मल हैं. बहुरि कैसे हैं, परमात्मा हैं. क्षायिक दर्शन, क्षायिक ज्ञान, स्वस्वरूपाचरण (क्षायिक चारित्र) इनकरि संयुक्त रत्नत्रयकरि विराजमान हैं ॥ ९ ॥

॥ चोवीस तीर्थंकरोके बीचका अंतरकाल ॥ ३१ सा ॥

पचास, तीस, दस, नौ, कीरोर लाख, निवै, नौ सहसकोर, नौसेकोर, निवै,
नौकोर है ॥ सो सागर वर्षलाख छ्यासठ सहस छवीस घाटि को,
सागर. चौवन, तीस, और है ॥ नव, चारि तीन घाट पौणपल्ल, अर्द्ध,
पावघाट, लाखौलाख वर्ष लाखौ लाख जोर है ॥ चौवन, छ, पांचलाख,
सहस पौने चोरासी, पांव अंतरा जीनेशगावे नीसिभोरहे ॥ १० ॥

अर्थ—तीसरे कालके तीनवर्ष, साडेआठ महिने बाकी रहै तब आदितीर्थंकर (ऋषभदेव) निर्वाण भये, पीछे पचासलाख कोटी सागर वर्ष व्यतीत भये तब अजितनाथ तीर्थंकर उपजै.

२ अजित नाथ तीर्थंकर मोक्ष गये पीछे तीसलाख कोटि सागर वर्षसे संभवनाथ उपजै.

३ संभवनाथ मोक्षगये पीछे दशलाख कोटि सागर वर्ष गये नंतर अभिनंदन उपजै.

४ अभिनंदन मोक्षगये पीछे नवलाख कोटि सागर वर्षसे सुमतिनाथजी उपजे.

५ सुमतिनाथ मोक्षगये पीछे निव्वै हजार कोटि सागर वर्षते पद्मप्रभु उपजे.

६ पद्मप्रभु मोक्षगये पीछे नवहजार कोटि सागर वर्ष गये तब सुपार्श्वनाथ उपजे.

७ सुपार्श्व निर्वाण भये पीछे नवसै कोटि सागर वर्ष नंतर चंद्रप्रभु उत्पन्न भये.

८ चंद्रप्रभु निर्वाण गये पीछे निव्वै कोटि सागर वर्ष नंतर पुष्पदंत तीर्थंकर उपजे.

९ पुष्पदंत मोक्षभये पीछे नवकोटि सागर वर्ष गये तब शीतलनाथजी उपजे.

१० सीतलनाथ मोक्षगये पीछे, ६६२६००० वर्षघाट, ९९९९०० सागरको श्रेयांसनाथ उपजे.

११ श्रेयांसनाथ मोक्षगये पीछे चौवन ५४ सागर नंतर वासुपूज्य उपजे.

१२ वासूपूज्य मोक्षगये पीछे तीस सागरकाल गया तब विमलनाथ उत्पन्न भये.

१३ विमलनाथ मोक्षगये पीछे नव सागर काल गया तब अनंतनाथ तीर्थंकर उपजे

१४ अनंतनाथ मोक्षभये पीछे चार सागर कालगया तब धर्मनाथ तीर्थंकर उपजे.

१५ धर्मनाथ मुक्तिगये पीछे पाउण पल्य घाट, तीन सागर नंतर शांतिनाथ उपजे.

१६ शातिनाथ मोक्षभये पीछे अर्धपल्यका कालगया तब कुंथुनाथजी उपजे.

१७ कुंथुनाथ मोक्षगये पीछे हजारकोटिवर्ष घाट, पाव पल्यसे अरहनाथजी उपजे.

१८ अरहनाथ मोक्षगये पीछे हजार कोटि वर्ष गये तब मल्लीनाथ तीथकर्र उपजे.

१९ मल्लीनाथ मोक्षगये पीछे चौवन ५४ लाख वर्षसे मुनी सुव्रतजी उपजे.

२० वे मुनीसुव्रत मोक्षगये पीछे छह लाखवर्षसे नमीनाथ तीर्थंकर उपजे.
२१ वे नमिनाथ तीर्थंकर मोक्षगये पीछे पांचलाख वर्षसे नेमिनाथ तीर्थंकर उपजे.
२२ वे नेमिनाथ तीर्थंकर मोक्षगये पीछे पौणाचौरासी हजार वर्षसे पार्श्वनाथ उपजे.
२३ पार्श्वनाथ तीर्थंकर मोक्षगये पीछे आढाईसे वर्षसे वर्धमान तीर्थंकर उपजे.
२४ वर्धमान तीर्थंकर मोक्षगये तव चौथेकालके तीन वर्ष साडे आठ महिने रहे थे.
महावीर (वर्धमान) मोक्षगये पीछे ६०० वर्षसे विक्रमांक राजा हुवा.
यह ४२००० बियालीस हजार वर्ष घाट, एक कोटाकोटी सागरका अंतराल कहा है ॥

आठस्थानमें निगोदनाही, चार स्थानमें सासादान जीवनजाय, तीर्थंकरसत्ता
जहां न पाईये, तिनका कथन ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

भूमी, नीर, आगि, पौन, केवली, औ आहारक, नर्क, स्वर्ग, आठमें नीगोद नाही पाईये ॥ सूक्षम, नरक तेज, वायमें न सासादन. भौनत्रीक पशूमै न तीर्थंकर पाईये॥सबही सूक्षम अंग कहै है कापोतरंग, कारमान देहकों सूपेद रंग गाईये॥ वीपूलमति मनःपर्यय, पर्मावधि. सर्वावधि. ठीक लहै मोक्ष ईतै सीस नाईये॥११॥

अर्थ–पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अगनिकायिक, वायुकायिक, केवली भगवानके पर मौदारिक शरीर, अप्रमत्त ७ वे गुणस्थानवर्ति ऋद्धी धारक मुनीके प्रगट भयाजो आहारक शरीर, नारकीके शरीर, देवके शरीर, इन आठोशरीरमें निगोदिया जीव न पाईयें

सूक्ष्म जीव (पृथ्वी, जल, नित्य निगोद, इतर निगोद) सातो नरकमें, अग्निकायिक सूक्ष्म बादरमें, पवन कायक सूक्ष्म बादरमें) इन चार स्थानमें, सासादन गुणस्थानमें मरणकरि सासादन गुणलीया नही जाय है॥पातालवासीदेव, व्यंतरदेव, ज्योतिषीदेव, भोग भूमिया अर कर्म भूमिया पशू, इनिमें तीर्थंकरकी सत्तासहीत जीव जाय नाही (तीर्थंकर गोत्रका बंध जिसकूं हुवा वो जाय नही) भुवन त्रिक देवमें वा पशूमें तीर्थंकरकी सत्ता नाही ॥ ऊपरकहे छप्रकारके सबही सूक्ष्म जीवके शरीरका कापोत (कबूतर) वर्ण है. अर विग्रह गतीमें जो कार्मांण देह है ताका स्वेतवर्ण है ॥ विपुलमती मनःपर्यय ज्ञानके धारकमुनी, अर परमावधि अर सर्वावधि ज्ञानके धारकमुनी, ये तद्भव मोक्षगामी हैं तिनकौ मैं नमस्कार करूं हूं ॥ ११ ॥

एक इंद्रीय आदि सैनी पंचेंद्रीय पर्यंत इंद्रीयके उत्कृष्ट विषयकी सीमा कथन छप्पै ॥

फरस च्यारसै धनुष, असैनीलौ दुगुना गिनि ॥ रसना चौसठधनुष, घ्रा-
णसो ते इंद्रीभनि ॥ चख जोजन उनतीस शतक चौवन परवानो ॥ कान
आठसै धनुष सुनै, सैनी सोजानो ॥ नवयोजन घ्राण, रसना फरस कान
दुवादश योजना ॥ चख सैतालिस सहस दुसै तेसठि देखे जिनभणा ॥१२॥

अर्थ–एक इंद्रीय जीवकै, एक स्पर्शन इंद्रिय है, ताका उत्कृष्ट विषय ४०० धनुष्य तक पृथ्वीमें विषयकू स्पर्शे है अर स्पर्शनादि विषय असैनी पंचइंद्रीतक दुगुना दुगुना जानना ॥ वेइंद्रीकै स्पर्शन इंद्रीका विषय ८०० धनुष्यका अर रसनाका विषय ६४ धनु है. तीन इंद्रीकै स्पर्शका विषय

१६०० धनुष्यका, रसनाविषय १२८ धनु, नाशिका विषय १०० धनु है ॥ चौइंद्रीके स्पर्शन विषय ३२० धनु. रसन विषय २५६ धनु. नाशिका विषय २०० धनु. अर नेत्र इंद्रियका विषय २९५४ गुणतीससे चोवन जोजनका है ॥ असैनी पंचइंद्रीके स्पर्शन ६४०० धनुष्यका. रसना विषय ५१२ धनुष्यका. घ्राणेंद्रिय ४०० धनुष्यका. नेत्रेंद्रिय विषय ५९०८ धनु. कर्णेंद्रिय ८०० धनुका है ॥ सैनी पंचेंद्रीय जीव नाशिका इंद्रियसे सुगंध नव योजन पर्यंत जानै. अर स्पर्शन, रसन, घ्राण, इन तीन इंद्रियका विषय बाराबारा योजनपर्यंत जानै. अर नेत्रेंद्रियसें ४७२६३ योजन तक दूरवर्ति पदार्थ देखै. सैनी पंचेंद्रिय जीवमें पंचइंद्रिका उत्कृष्ट विषय चक्रवर्त्तिके है. और सामान्य जीवको नाही है. ऐसा श्रीजिनेंद्र देवने, येकेंद्रीयसे सैनी पंचेंद्री पर्यंत छहजीवेक इंद्रियाका उत्कृष्ट विषय कह्या है ॥ १२ ॥

येकेंद्रिसे पंचेद्रीतक, सब जीवकी उत्कृष्ट आयु वर्णन ॥ सवैया ३१ ॥

॥ मृदु भूमी बारै, खरभू बाईस, जलसात, वाततीन, तरू, कायकी
दस हजार है ॥ पंखीकी बहत्तर सहस, बीयालीस साप, आग
दीन तीन, बेइंद्री वरष बार है ॥ तेइंद्री दीन उनचास, चौइंद्री
छहमास, सीरी सर्प पूरवांग नव आउ धार है ॥ मच्छ कोटि पू
रव, मनुष्य पशू तीन पल्ल, सागर तेतीस देव नारकी कीसार है १३

अर्थ—गेरु, हडताल आदि कोमल पृथ्वी कायिककी उत्कृष्ट आयु १२ हजार वर्षकी है.

रत्न पाषाणादि कठोर पृथ्वी कायककी उत्कृष्ट आयु २२ हजार वर्षकी है. जल कायिककी आयु ७ हजार वर्षकी है. अर पवन कायिककी आयु ३ हजार वर्षकी है. तरु (वनस्पती) की आयु १० हजार वर्षकी है॥ पंखी (पखेरू)की आयु ७२ हजार वर्षकी है. सर्पकी उत्कृष्ट आयु ४२ हजार वर्षकी है अर अग्नि कायिककी उत्कृष्ट आयु ३ दिनकी है. शंख आदि बेइंद्रीकी आयु १२ वर्षकी है ॥ वीचू गोभिकादि तेंद्रिकी उत्कृष्ट आयु ४९ दिनकी है. भ्रमरादि चौइंद्रीकी आयु ६ महिनेकी है. सिरीसर्पकी आयु ९ पूर्वांगकी है ॥ मच्छकी तथा कर्म भूमिया मनुष्य अर पशुकी उत्कृष्ट आयु १ कोट पूर्वकी है. भोग भूमिया मनुष्य अर पशु इनकी आयु तीन पल्यकी है. देवकी तथा नारकीकी उत्कृष्ट आयु ३३ सागरकी है ॥ १३ ॥

१ सात हजार छप्पन परार्धवर्षकी हैं. ७०५६०००००००००००००००००. मध्यम अर जघन्य आयूके अनेक भेद है.

अंतर्मुहूर्तमें ६६३३६ वार जन्म अर मरणकरै ताका कथन ॥ सवैया ३१ सा ॥

भू जल पावक पोन साधारण पंच भेद सूक्षम बादर दस परतेक
ग्यार है ॥ छ हजार बारै बारै जामन मरन धारै, बे ते चौ इंद्री
अस्सि साठ चालिस धारहै ॥ चोवीस पंचेंद्रि सब छ्यासठ सहस
तीनसै छत्तीस. सैतीससे तेहत्तर सास है॥ छत्तीससै पिसिसी स्वास
अधिक तीजा अंस, नमोनाथ मोही सब दूखसौ उधारे है ॥ १४ ॥

अर्थ–जो जीव एक स्वासमें अठारा वार जन्मै अर अठारावार मरे है, येक आहार पर्याप्तभी

पूरानकरै सो अलब्धि पर्यास कहै है, तिनका जुदा जुदा कथन करै है.

१ पृथ्वी कायक जीव १ जलकायक १ अग्निकायक १ पवनकायक १ साधारन वनस्पतीकायक, इनि पांचोके सूक्ष्म अर साधारण भेदसे दसभेद भये है, अर प्रत्येक वनस्पतीका १ ऐसें ११ स्थानकके इतर निगोदिया अलब्धी पर्यास्ति येकेंद्री जीव है, ते कषायके प्रचुरतासै अंतर्मुहूर्तमे जुदे जुदे छ हजार बारा, छ हजार बारा, जामन मरण करै, तब सब एकेंद्रीके

६६१३२ जामन मरण भये ॥ बेंद्रीके ८० तीन इंद्रीके ६० चौइंद्रीके ४० ऐसें

१८० जामन मरण अंत मुहूर्तमें विकल त्रय करै ॥ पंचेंद्री अलब्ध पर्यास जीव

२४ वार जामन मरण करै, येकेंद्रीसे पंचेंद्रितक सब इकठे करिये तब

६६३३६ भये. ऐसा छ्यासठ हजार तीनसे छत्तीस जन्ममरन अंतर्मुहूर्तमे होते है.

सैतीससै तिहत्तर ३७७३ स्वासका एक प्रमाण मुहूर्त होय है, सो स्वास किसके लेना ! बाल न होय, वृद्ध नहोय, खासीनहोय, धनवान होय, अलस्यरहित होय, निरोगी होय, स्थिरतामें सुखसुं बैठा होय, ऐसा मनुष्यके स्वास लेना ॥

एक स्वासके कालमें अठारा वार जन्म मरन होय, सो ६६३३६ जामन मरण कौ छतीससै पिच्यासी श्वास अर एक स्वासका तीसरा भाग अधिक येता काल लागे है, ३६८५ $\frac{1}{3}$ सासका एक प्रमाण अंतर्मुहूर्त होय है.

भो वीतराग देव आपकौ मैं नमस्कार करूहूं, मोही इन जन्म मरणके दुःखतैं उधारो ॥ १४ ॥

॥ चौरासी लाख जातीके प्रत्येक वर्णन ॥ सवैया ३१ ॥

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख आपकाय, सातलाख तेजकाय,
सात लाख वात है ॥ सात लाख नित्य, और इतर सात, साधारन,
दसलाख प्रत्येक येकइंद्रि गातहै ॥ बेते चव, इंद्रि दोदो. मानूष चौदह
लाख, नर्क, स्वर्ग, पशु, चार चार लाख जातिहै ॥ चवऱ्यासि लाख
जाति मोऊपरि क्षमाकरो. हमहूने क्षमाकरि. वैरकीये घातहै. ॥१५॥

अर्थ–७ लाख जाती पृथ्वी कायकी, ७ लाख जाती जलकायक जीवकी.
७ लाख जाती अग्निकायकी. ७ लाख जाती पवन कायक जीवकी है ॥
७ लाख जाती नित्य निगोदकी. ७ लाख जाती साधारन (इतर निगोद) की
१० लाख जाती प्रत्येक वनस्पतीकी, ऐसें येकेंद्रि जीवकी ५२ लाख जाती है ॥
२ लाख जाती बेंइंद्री जीवकी· २ लाखजाती तेइंद्री जीवकी है
२ लाख जाती चौइंद्रीजीवकीहै, ऐसें विकल त्रयकी ६ लाखजातीहै.
१४ लाख जाती मनुष्यकीहै. ४ लाख जाती नारकी जीवकी है.
४ लाख जाती देवकी है अर ४ लाखजाती पंचेंद्रीपशूकी है ॥ऐसें पंचेंद्रीकी २६ लाखजाती है
सब ८४ लाख जाती ह्मारेपर क्षमा करो, हम भी तापर क्षमाकरे है. वैरभावका कारण
भव भवमें महादुःखदाई है ॥ जातीनाम माता पक्षका है ॥ १५ ॥

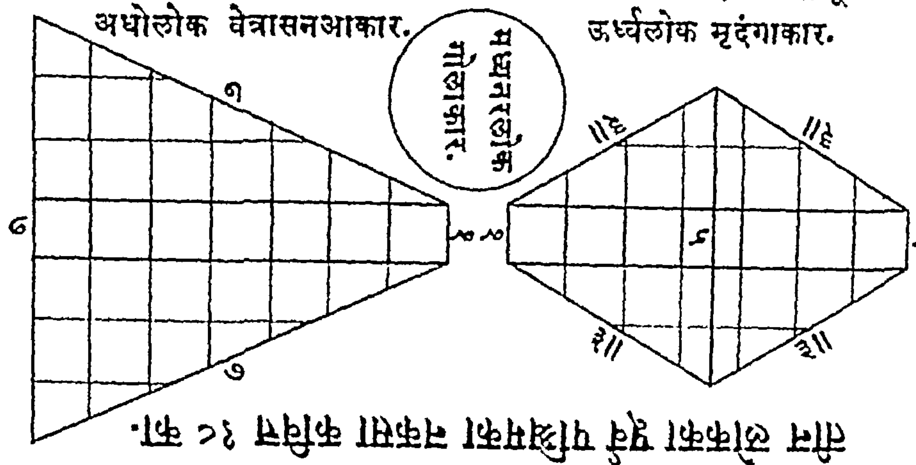
॥ एकसो साडे निन्याणवै लाख कोट कूलवर्णन ॥ ३१ सा ॥

पृथ्वी कायवीस दोय, जलसात, तेजतीन, वाउसात, तरुवीस आठ परवानीये ॥ बे ते चव इंद्रि सात, आठ, नव. खगबारै, जल चर साडेबारै, पशुदश जानीये ॥ सीरिसर्पनव, नारकि पचीस, नरचौदै, देवता छवीस लाख कोटि कूल मानीये ॥ दोय कोडाकोड माहि आध लाख कोडनाहि. सवकौ निहारिकैजु दयाभव आनीये ॥ १६ ॥

२२ लाखकोट कूल पृथ्वी कायककेहै.	७ लाखकोटि जल कायकके कूल है.
३ लाखकोटि अग्निकायकके कूलहै.	७ लाखकोटि पवन कायकके कूलहै.
२८ लाखकोटि वनस्पतीके कूलहै.	७ लाखकोटि वेइंद्रीजीवके कूलहै.
८ लाखकोटि तेइंद्रीजीवके कूलहै.	९ लाखकोटि चौइंद्रीजीवके कूलहै.
१२ लाखकोटि पंखीजीवके कूलहै	१२ ॥ लाखकोटि जलचर जीवके कूलहै.
१० लाखकोटि चौपद पशूके कूलहै.	९ लाखकोटि गोह आदि सिरीसर्पके कूलहै.
२५ लाखकोटि कूल नारकी जीवकेहै.	१४ लाखकोटि कूल मनुष्यके है.

२६ लाख कोटिकूल देवताके है. सबमिलेतब, एकसो साडे निन्याणवै लाखकोटि कूल होय है. ॥ दोय कोटाकोटको पन्नास लाखकोटि कमहै, इन सबकौ देखिकै इनकी रक्षा करनी.

॥ कुलनाम पितापक्षकाहै ॥ १६ ॥ इति शलाका वर्णन समास ॥ २ ॥



तीन लोकका पूर्व पश्चिमका नकसा कवित्त १८ का.

तीन लोकका दक्षिणोत्तरका नकसा, १८ कवित्तका.

४२

	१													घो	
३	१													घ	३
	१													त	
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	नाडी १३	त्रस १४	१
	१													घो	
३	१													घ	३
	१													त	

१४

दक्षिणोत्तर डोरी ४२ राजू त्रसनाडी १४ राजू उच्च १ राजू चौकोर कवित्त २० का

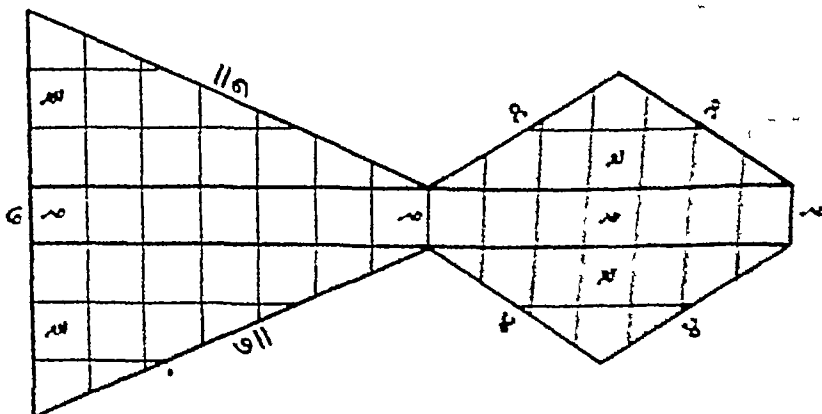
तीन लोककौ ३ वात लपट रहै है ताका नकसा, कवित्त २६ का.

चरचा० ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

घनोदधि २० ह० योजन

घनवात २० ह० योजन

तनुवात २० ह० योजन



तीन लोक ३४३ राजू घनाकार नकसा कवित्त २२ का.

॥ अथ अलोकाकाश का वर्णन प्रारंभ ॥ छंद छप्पै ॥

अमल अनादि अनंत अकृत अनमित अखंड सब ॥ अचल अजीव अरूप पंच नहि, इक अलोक नभ ॥ निराकार अविकार, अनंत प्रदेश विराजै ॥ शुद्ध सगुण अवगाह, दसौंदिशि अंतन पाजै ॥ ज्या मध्य लोक नभ तीन विधि, अकृत अन मिट अन ईसरो ॥ अविचल अनादि अनंत, सब भास्यो श्री आदीश्वरो ॥ १७ ॥

अर्थ—कैसाहै अलोकाकाश ! अत्यंत निर्मल है. अनादि कालकाहै जाकी आदि नाही. अनंत कालपर्यंत रहेगा जाका अंत नाही. काहू करि कीया नाही, मर्यादा रूप नाही, अनंत है. येक अखंड है, जाका दूजा खंड नाहोसकैं, सब जागा फैलि रहाहै ॥ चलाचल नाही, शाश्वत है. चेतनस्वभावतैं रहित, अजीव है. अमूर्तिक है. पांचद्रव्य (१ जीव १ पुद्गल १ धर्म १ अधर्म १ काल)के रूपसे नही है. जामै पंचद्रव्य पाइये सो लोकाकाश है, और सब अलोकाकाश है ॥ जिसका गोल तिकोना चौकोना इत्यादि आकार नाही, जिसमै कोई विकार नाही, शुद्धहै. अनंत प्रदेश करी विराजमान है ॥ जिसकै शुद्ध गुण हैं, अशुद्धता है नाही. जिसकी अवगाहनां सर्वत्र दसौंदिशीं फैलि रही है, जिसका अंत नाहीं. ऐसा अनंत काल शाश्वत रहेगा ॥ इस अलोकाकाशके मध्य लोकाकाश तीन प्रकारे (अधोलोक, मध्यलोक, उर्ध्वलोक) है. सो स्वयं सिद्धहै, चलाचल नाहि, अचलहैं. कोई ईश्वर याका कर्त्ता नाही. ये लोका काश अनादि कालकाहै, अनंत कालपर्यंत रहैगा. ऐसा श्री आदिजिन वृषभदेवने कहा है ॥१७॥

॥ तीन लोकका स्वरूप वर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

पूरव पश्चीम सात नर्क तलैं राजु सात आगैं घटा मध्य लोक राजु येक रहाहै ॥
उंचे बढिगया ब्रह्मलोक राजुपांच भया आगै घटा अंत येक राजु सरदहाहै ॥
दक्षीण उत्तर आदिमध्य अंत राजुसात उंचा चौदे राजु षट दरवसे भरा है ॥
असंख्यात परदेश मूरतीक कीयो भेष करै धरै हरै कौन स्वयंसिद्ध कहा है ॥ १८॥

अर्थ–सातवे नरकके तले एक राजू उंचीमें नित्य निगोद भराहै, तहां पूर्व पश्चिम चौडाई सात राजूकी हैं. सातवे नरकतै लेय मध्य लोकपर्यंत अनुक्रमतैं घटा है, मध्यलोकतै मेरुकी चूलिका पर्यंत पूर्व पश्चिम येकराजू रहा है ॥ मेरूकी चूलिकातै लेय ऊपर ब्रह्मलोक (पांचवा स्वर्ग) पर्यंत अनुक्रमतै बढा है, तहां पूर्व पश्चिम चौडाई पांच राजूकी है. आगै पंचम स्वर्गतै ऊपर सिद्धालयपर्यंत अनुक्रमतै घटाहै, तहां पूर्व पश्चिम येक राजू चौडाहै, इसभांति जानना. यह चौडाई पूर्व पश्चिमसंबधी जाननी ॥ निगोद तलेते लैकरि सिद्धालयपर्यंत दक्षिणोत्तर चौडाई ७ राजूकी ही है. अर लोका काशकी उंचाई चौदा राजू है, षट द्रव्यसे भराहै ॥ लोकाकाश असंख्यात प्रदेशी है, येक परमाणू जितनी जागा रौकै तिसका नाम प्रदेश है. अधलोक, मध्यलोक, उर्ध्व लोक, ऐसें तीन भेदसे लोककौं व्यवहार करी मूर्तिक कहीयेहैं. निश्चयकरि अमूर्तिक है. लोकका कर्ता ब्रह्मादिक नाही, इस लोकका पालन कर्ता विष्णू आदिक कोई नाही, तैसेहि शंकरादि कसे इसका नाश होय नाही, ऐसा लोक है. आपहीतै निष्पन्न है, काहूने कीया नाही ॥ १८ ॥

॥ पुनः लोकस्वरूपवर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

तीनौं लोक तीनौ वात वलै वेढै सबठोर वृक्षछाल अंडजाल तनचाम देखिये ॥
अधोलोक वेत्रासन मध्यलोक थालिभन ऊरध मृदंग घन ऐसोही विसेखिये ॥
करकटि धारि पाऊकौं पसारि नराकार डेढ मूरज आकार आविनासि पेखिये ॥
घर मांहि छीकोजैसें लोकहै अलोक वीच छींकेकौं आधार यह निराधार लेखिये १९

अर्थ– तीनौ लोक, तीन वात वलयकरी वेष्टित है. पहला घनोदधि वात वलय, दूसरा घन वात वलय, तीसरा तनुवात वलय, जैसै वृक्षकै सर्व जागा छाल लपटि रहै है, अथवा अंडाकै ऊपरी चामजाल सर्वत्र वेढि रहैहे, अथवा शरीरको सर्वांग चाम है, तैसें तीन लोककौ तीनौ वात वलय सर्वजागा वेढि रहा है, अच्छादि रहा है ॥ तहां अधोलोक वेत्रासनकै आकार जडमें चौकोर है. मध्यलोक थालीकै आकार वलयाकार है, थंडिल भूमी चौकोरहै. उर्धलोक मृदंगकै आकार उचाई रूपहै. यह कथन भले प्रकार जाननां ॥ दोनूं हाथ कंवरपरी धरिकै दोनूं पाव पसारीये ऐसें मनुष्यकै आकार है. अथवा आधा मृदंग सुधा धरिकै, ताऊपर सारा मृदंग धरिये, ऐसें डेड मृदंगके आकार तीनौ लोकहै. अविनासी शाश्वता है ॥ जैसै घरमाही छीका लटकैहै तैसें अनंत प्रदेशी अलोकाकाशके बिचि, असंख्यात प्रदेशी लोकाकाश तिष्टैहै. छीकेकौ कडीका आधारहै अर यह लोकाकाश निराधार है, किसीके आधार नाही. स्वयंसिद्ध है अपनेही आधार है इसभांति जानना ॥ १९ ॥ इसिका नकाशा ११।१२ पृष्ठमें है, तहां देखो.

३४३ राजू घनाकार सब लोकका वर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

तीनसै तेताल राजु घनाकार सबलोक घनोदधिघन तनुवातकेआधारहै ॥ तामै
चोदे चौंकूटि त्रसनालिं त्रसथावर परैं तीनसैंउनतीस थावर सदारहै ॥ दक्षीण
उत्तर डोरि बीयालीस राजु सब, पूरव पश्चिम उनतालको विचारहै ॥ राजू
अंस विसासौ तेतालीस अधीक है लोकसीस सिद्धनीकूं मेरा नमस्कारहे ॥ २०॥

अर्थ—येक राजू चौडा, येक राजू लंब, येक राजू उंचा, खंड कल्पना कीजिये तो, सब लोकका घनरूप ३४३ खंडहोय हैं. सात राजू चौडाई है; ताकौं सात राजू लंबाई सूं गुणिये तो, गुणचास राजू भये, ताकौ सात राजू उंचाईसूं गुणिये तो, तीनसैं तेतालीस राजू सबलोकका घनाकार होहै. कैसा है सर्वलोक! घनोदधि वात वलय जल अर पवन मिश्र है ताकै आधार है. अर घनोदधि वात वलय, घन वात वलयके आधार है. अर घन वात तनुवातके आधारहै. अर तनु वात वलय निराधारहै, यह आधार व्यवहार कल्पनाहै, निश्चय नयतै सबही आप आपके आधारहै, किसिकौ किसीका आधार नाही॥ अनंत अलोका काशकै बीचाबीच लोकाकाशहै अर लोकाकाशके बीच चोदह राजू उंची, येक राजूचौडी, येक राजूलंबी, चौकोर स्तंभा के आकार त्रस नाडी है, तिसमै त्रस अर थावर जीव भरे है. त्रस नाडीके बाहिर ३२९ राजूमें लोकाकाश फक्त थावर जीवनि करी भऱ्याहै, तहां त्रसजीव नाहीं हैं ॥ सब लोकाकाशकी दक्षिण उत्तर डोरी ४२ राजूकी है, लोकके तले सात राजू अर ऊपर (अंतमे) सात राजु,

और दोनू तरफकी उंचाई चौदह चोदह राजू है, सब मिलिकै बियालीस राजू भये. सब लोकाकाशकी पूर्व पश्चिम दिशादिशा संबंधी डोरी ३९ राजूकी है, पूर्व पश्चिमकी उचाईमे तो घडाव वढाव नहीं है, परंतु चोडाईमे घटाव वढाव है. पूर्व पश्चिम लोकके तलै राजू सात है. अर तलैतै लेइ मध्य लोकपर्यंत ऊचाई राजू साढे सात है, दोऊ तरफके १५ राजू भये, मध्यलोकतै पांचमा स्वर्गपर्यंत ऊचाई राजूचार है, दोऊ तरफके ८ राजू भये, स्वर्गतै लोकके अंत तक ऊचाई राजू चारहै, दो तरफके ८ राजू भये, अर लोक अंतमे पूर्व पश्चम चौडाई राजूयेकहै, सब मिलि आठ स्थानकें गुणचालीस राजू भये ॥ (इनका नकाशा पृष्ठ ११ । १२ में हैं तहां देखो) ऐसे लोकके अग्रभाग तनुवात वलयमे अनंत सिद्ध है, तिनकौ मेरा नमस्कार है ॥ २० ॥

॥ पुन लोक स्वरूप वर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

ऊखलमें छेकवंशनाल लोकत्रसनालि उंचिचौदे चौरियेक राजु त्रस भरिहै ॥
यामैत्रस बाहिर थावर आउ बांधि कहुं मरण सो आगा गयो त्रसचाल करिहै ॥
बाहीर थावरकोय त्रस आव बांधिहोय मर्न समै कारमाण त्रसरीति धरिहै ॥ केवल
समुदघात त्रसरूप तहांजात तीनौभांति ऊहात्रस जीनवानि खरिहै ॥ २१ ॥

अर्थ– जैसैं ऊखलमैं बांसकी भूंगली धरिये तैसै लोकाकाशकै बीचि त्रस नाली है, वासकी नली पोलीहै अर त्रस नाली त्रस और स्थावर जीव करी भरीहै, त्रसनाली सामान्यपणे चौदा राजू उंची है अर विशेषपने किंचित ऊन तेराराजूकी उंची है, भावार्थ॥ जिसमें त्रसजीव पाइये

सो त्रसनालीहै· निगोदमैं येक राजू माहि त्रसजीव नाही, अर सर्वार्थ सिद्धीतै उपर इकईस जोजन माही त्रसजीव नाही, तातै किंचित ऊन तेरा राजू उंच त्रसनालीहै, ऐसा त्रिलोक प्रज्ञप्तिमैं कह्याहै· त्रसनाडी आदितै अंतताई येक राजूकी चौडी चौरस खंववतहै, त्रस (वेइंद्रि, तेइंद्री, चौइंद्री, पंचेद्री, संज्ञी असंज्ञी) स्थावर (येकेंद्री सूक्ष्म वादर) ऐसें त्रस थावर सवही जीव त्रस नालीमैं है, केवल त्रसही हैं अरथावर नाही ऐसा नाहीहै, त्रसकी प्रधानतातैत्रस नाली कहैहै ॥ भुज्यमान (वर्तमान) आयुके दोय भाग वितीत भये तव परभवके आयुवंध-की जोग्यता होहै, सो आठ अपकर्षण तक जोग्यता है आगै नाही· अर वर्तमान आयु अंतर्मुहूर्त वाकी रहै तवतक परभवकी आयु आवस्य वांधेही, परभवकी आयु वांधेविना मृत्यु होयनाही यह सिद्धांतहै· कोई त्रसजीवनै मरणतै अगाऊ थावर संवंधी आयुवांधि मारणांतिक समुद्घातकरि आत्म प्रदेशोको त्रसनाली वाहिर थावर सेती तांतू पऱ्या तातै इसन्याय करि त्रसनालीतै वाहिर त्रसजीव पाईये ॥ अथवा त्रसनालीकै वाहिरकै थावर जीवनै त्रिभंगी[1] करिकै त्रस जीवकी आयुवांधै तिस जीवकै मरणसमै कार्माणरूप निकलै सो त्रससेती तांतू पूरै इस न्यायतै त्रसनालीके वाहिर त्रस जीव पाईये॥ केवली समुद्घात करै तव आत्म प्रदेश १ दंड १ कपाठ १ प्रतररूप होय है, पीछै लोकपूर्णमें सर्व लोकविषै आत्माका प्रदेश विस्तरै तव त्रस नालीतै वाहिर त्रसजीव पाईयै है· अक त्रस जीवके प्रदेश त्रसनालीके वाहिर गये,

---

१ आयुके दोन भाग संपूर्ण वीतेहै तव तीसरे भागमें परभवकी आयु बांधेहै सो त्रिभंगी कहीये·

इस ज्ञगतीसौं तीनौं भांती त्रसनालीतै बाहिर त्रसजीव पाइये है, और भांति नाही· ऐसा जिनवाणीमैं सत्यार्थ व्याख्यान हूवा है, सो श्रद्धान करना ॥ २१ ॥

॥ तीन लोक तीनसै तेतालीस राजूका घनाकार है, ताका समुच्चै फैलावट कथन ॥ छप्पै ॥

पूरव पश्चिम तलैं सात मध्ययेक वखानी ॥ पंच स्वर्गमैं पांच अंतमैं
येक प्रवानी ॥ चहूं मिलाय चहूं अंश तीनसाढे परमानो ॥ दक्षिण
उत्तर सात साढे चोवीस वखानो ॥ उंचाचौदै राजू गुणौं अधिक
तेतालीस तीनसै ॥ यहु घनाकार तिहु लोकमैं केवल ज्ञान विखै लसै॥२२॥

अर्थ– लोककै तले निगोदमाहि पूर्व पश्चिम सात राजू चौडाहै, अर क्रमहानीके सद्भावसे मध्यलोकविषै पूर्व पश्चिम येक राजू चौडा है॥ क्रमवृद्धीके सद्भावतै पांचमा ब्रह्म स्वर्गविषै पांच राजू चौडाहै, अनुक्रमतैं हानीके सद्भावतै लोककै अग्रभागविषै पूर्व पश्चिम येकराजू चौडाहै ॥ चारी ठोरके मिलाइये तव ७।१।५।१) चौदाराजू भये । इनके चार अंश (भाग) कीजे तव साढा तीन भये ॥ इनकौं दक्षिणोत्तर सात राजू चौडाईसे गुणिये तव साढे चोवीस राजू भये ॥ इनकौं चौदा राजू ऊचाई सौं गुणिये तव ३४३ तीनसै तेतालीस राजू भये ॥ इसभांति तीन लोकका घनाकार कथन केवल ज्ञानमैं प्रत्यक्ष भासै है ॥ २२ ॥

॥ सबलोक ३४३ राजू है तिसमै अधो लोक १९६ राजू है, ताकै घन फल कहै है ॥ छप्पै ॥

पूरव पश्चिम तलै सात, मध्य यके गाई ॥ उभय मिलैसे आठ, अर्ध

करि चारि बताई ॥ दक्षिण उत्तर सातगुणौ, अठाइस राजू ॥ उंचा
राजू सात, सतक छयानवै भयाजू ॥ यह अधोलोकका सब कहा घना-
कार, जिन धरममें ॥ मति परो नरकमें पापकरी रहो सुमारग परममें ॥२३॥

अर्थ—इसकी गिणती पापाणके गिणती माफकहै. लोकके तलै पूर्व पश्चिम सात राजूचौडा है अर मध्यलोकमैं येकराजू है ॥ ; सातमें येक मिलाये तब आठ भये, इनके आधे करिये ४ भये ॥ इनकौ दक्षिण उत्तर सात राजू चौडाईसे गुणिये तब अठाईस राजूका प्रतर क्षेत्र भया॥ निगोदतै लेय मेरुकी जडताई सात राजू उंचा अधोलोकहै, ये ७ राजूसे प्रतर क्षेत्र (२८ राजू) कौ गुनिये तब येकसौ छिनवै राजूका घनाकर हुवा ॥ इस भांति अधो लोकका घनाकार जिन धरममें कह्याहै ॥ चित्रा भूमिके नीचै जल वहल, थलवहल, पंकवहल, सातौ नरक, निगोदपर्यंत, अधोलोक (पाताल) कहीये है अधो लोकमें गति पापके उदयतै होतीहै. ऐसा जानकै पापकरिकै नरकमें मति परो; परिणामकी उज्जलता करिकै वीतराग देवका उपदेशा जिन धर्म मार्गमैं प्रवर्त्तो, अंगिकार करौ, तातै परम सुखपावोगे ॥ २३ ॥

॥ मेरुकी जडतै लेय सिद्धालय पर्यंत उर्ध्वलोक १४७ राजू घनाकार है, ताका कथना ॥ छप्पै ॥

मध्यलोक इक ब्रह्मपांच दुहुमिली भयेषट ॥ पूरव पश्चिम दिशा अर्ध
करि तीनराजु रट ॥ दक्षिण उत्तर सात गुणी इकईस वखानी ॥ उंचा
साढेतीन साढ तिहत्तरि जानी॥ साढ तिहत्तर विधियही लोक अंत सौ

ब्रह्मलग ॥ राजू इकसौ सैतालिस धरम करै पावै सु मग ॥ २४ ॥

अर्थ–मध्य लोकमैं मेरुकी जडतलै पूर्व पश्चिम येक राजू चौडाई हैं; पांचमा ब्रह्म स्वर्गमै पांच राजू चौडाईहै, ये दोनू मिले छह राजूभये ॥ इनको आधे करिये तब तीन भये ॥ मेरुके जडतै पांचमा स्वर्गतक दक्षिणोत्तर सात राजू है, सातकौ तीननै गुणिये तब इकईस राजू भये ॥ मेरुकी जडतै लेय पांचमा स्वर्गतक साढे तीन राजू उंचाहै, वे इकवीस राजूकौ साढै तीननै गुणिये तब साढे तिहतरि राजू घनाकार पांचमा स्वर्गपर्यंत हूवा है, सो पृष्ट ११।१२ नकाशा देख जानना ॥ इसी विधि साढे तिहत्तर राजू घनाकार, पांचमा स्वर्गसे ऊपर सिद्धालयपर्यंत है ॥ ७३॥. ७३॥. ये दोन्यू साढेतिहत्तर साढेतिहत्तर मिले तब येकसौ सैतालीस राजू घनार उर्ध्व लोक हुवा, जे जीव धर्म (देव पूजा, गुरुभक्ति, स्वाध्याय, संयम, तप, दान) करै ते जीव शुभोपयोगतै स्वर्गजाय, शुद्धोपयोगतैं मोक्षजाय है ॥ २४ ॥

॥ तीनसै तेतालीस राजू लोकका जुदाजुदा कथन ॥ छप्पै ॥

छियालीस, चालीस, और चौतीस, अठाई ॥ बाइस, सोलै, दस, उनीस
साढे बतलाई ॥ साढै सैतीस, साढे सोला, साढे सोलह भनी ॥ आगै दोदो
हीन अंत ग्यारा राजू गिनी ॥ इम सात नरक आठो जुगल ऊपरि, सोलै
थानमैं ॥ राजू तेतालिस तीनसें घनाकार कहि ग्यानमैं ॥ २५ ॥

अर्थ–निगोदके तलै पूर्व पश्चिम सात राजू चोडा है, ऊपर सातवा नरक तक ६ राजू है. दोनू

मिलाये १३ भये, इनके आधे ६॥ कौ, दक्षिणोत्तर लंबा ७ राजूंसूं गुणिये तब ४५॥ भये अर

दोनूका आधा राजू वधाया तब ४६ भये.			मेरूकी जडते पहिले दूसरे स्वर्गतक राजू १९॥		
निगोदतै सातमे नरकतक घनाकार राजू		४६	दूसरे स्वर्गते ३।४ तक घनाकार राजू		३७॥
सातमेतैं छठे नरक तक	,,	४०	चौथेते ५।६ स्वर्ग तक	,,	१६॥
छट्टेसे पाचमें नरक तक	,,	३४	छट्टे ते सातमे आठमें तक	,,	१६॥
पांचमे नरकते चौथे नरक तक	,,	२८	आठमे ते नवमे दसमे तक	,,	१४॥
चौथेसे तीसरे नरक तक	,,	२२	दसमे ते ११।१२ स्वर्गतक	,,	१२॥
तीसरेसे दूसरे नरक तक	,,	१६	वारमे तें १३।१४ स्वर्गतक	,,	१०॥
दूसरेसे पहिले नरक तक,,	,,	१०	चौदमेते १५।१६ स्वर्गतक	,,	८॥
ऐसा पाताल लोक राजू–	,,	१९६	सोलमे स्वर्ग ते सिद्धालय तक	,,	११
					१४७

पाताल लोक १९६ अर उर्ध्वलोक १४७ राजू, दोनु मिलके ३४३ राजू घनाकार भया.

॥ तीनौ लोक तीन वातसे लिपटि रहै है तिनका जुदा जुदा कथन ॥ सवैया ३१ सा ॥

तलै वातवलै मोटे जोजन सहस साठि उंचायेक राजुलों साठिसहस धारनै ॥ आगै सातपांच चार तीनु सोला जोजनके मध्यपांच चार तीन बारके विचारनै ॥ ब्रह्म-

लोक तीनों सोल अंतमाहि तीनो बारै सीस दोय कोश येक कोशके विचारनैं ॥
तनुवात धनूष पौने सोलैसे ताके भाग पंद्रहसै सिद्धयेक भागमैं निहारनै ॥२६॥

अर्थ– लोककै तलैते लेकरि येक राजू उंचा निगोदतक तीनौ वातवलयकी मोटाई वीस वीस
हजार जोजनकी है, तीनौके साठ हजार जोजन भये ॥ आगे (ऊपर) पहला घनोदधि
वात सात योजनका है, दूसरा घनवात पांच योजनकाहै, तीसरा तनूवात चार योजनका है
ऐसें तीनूवात सोला जोजनके मोटे, मध्य लोकतक चले आये है. अर मध्य लोककें बगलोमैं
पहिला वात पांच योजनका, दूसरा वात चार जोजनका, तीसरा तीन योजन ऐसें बारा
योजनके मोठे (जाडा) है॥ मध्यलोकतै ऊपर पांचमा स्वर्गतक पहिला वात सात योजनका.
दूसरा पांच योजनका अर तिसरा चार योजनका ऐसे सोला योजनका मोटा है, अर पांचमा
स्वर्गतै ऊपर लोक अंततक घनोदधि पांच योजनकाहै, घनवान चार योजनका अर
तनुवात तीन योजनका है, ऐसे बारा योजनकी मोठाईहै. अर लोकके सीसपर चाकके आकार
घनोदधि वातकी मोठाई दोय कोसकी है अर घनवातकी मोठाई येक कोसकी है, ये कोस
वडे (प्रमाण) जानने ॥ तनुवात वलयकी मोठाई पौने सोलासे धनुष्यकी है, ये धनुष्य वडे
(प्रमाण) जानने, तिन पौने सोलासे धनुष्यके पंद्रहसै भाग साटेके आकार ऊपर ऊपर करिये,

१ सबलोककौ पहला घनोदधि वात वलयने वेढाहै, घनोदधिवातकौ घनवातने अर घनवातकौ तनवातने वेढा है.
प्रथम घनोदधिवात जल अर पवनकाहै, दूसरा घनवात बहोत पवनका है, तनुवात थोडे पवनकाहै.

तिस अंतकेयेक भागमें उत्कृष्ट अवगाहनाके अनंते सिद्ध विराजै हे अर पौंते सोलासे धनुष्यके नवलाख भाग करिये तिस अंतके येक भागमें जघन्य अवगाहनाके अनंते सिद्ध विराजै है, मध्य अवगाहनाके नानाभेदहै. एक सिद्धकी अवगाहना विपै अनंते सिद्धका समावेश पाइये इसभांति जानना ॥ २६ ॥

॥ सव द्वीप समुद्रके बीचा बीच जंबुद्वीप लक्षयोजनका है उसकी पूर्वपश्चिम गिणती ॥ ३१ सा

जंबूद्वीप येकलाख मेरु दसही हजार भद्रशाल वन दो सहस छीयालीसके ॥ बाकी
छीयालीस आधोआध दोनूही विदेह देवारण्यवन ऊनतीससै बाईसके ॥ तीनू
नदी पौनेचारसत चारौहीवक्षार दो हजार आठौही विदेह वच ईसके ॥ सतरै
सहस सात सत तीन योजनके नमौ चार तीर्थंकर स्वामी जगदीशके ॥ २७ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप पूर्व पश्चिम १ लक्ष महायोजन लंबाहै उसकी गिणती कहैहै. जंबुद्वीपके मध्य सुदर्शन मेरु है उसकी जड जमी पै दस हजार जोजनकी मोठी चौडीहै, अर मेरूके पूर्व पश्चिमको दो भद्रशाल वन बाईस बाईस हजार जोजनके चौडे है. मेरूकी जडकी चौडाई दसहजारकी अर दो भद्रशाल वनकी चौडाई चवालीस हजारकी ऐसे चौवन हजार जोजन भये ॥ अब छीयालीस हजार जोजन रहे, उसीमे तेईस हजार योजनका पूर्व विदेह अर तेईस हजार योजनका पश्चिम विदेह है ऐसा येक लक्ष योजनकी पूर्व पश्चिम गणती है. भद्रशाल वनके तटसे लवण

१ दोय हजार कोसका येक महायोजन. अर चार कोसका येक लघु योजन होय है.

समुद्रके तट (वेदिका) तक विदेह क्षेत्र है सो कहै है. पूर्व विदेहमे लवण समुद्रके तटकेपास देवारण्य वन उनतीतसै बाईस योजनका चौडा है ॥ अर विदेहमें तीन विभंगा नदी ३७५ योजनकी है, येक येक नदीका १२५ योजनका पाट है. अर चार वक्षारगिरी (पर्वत) २००० योजनके है, येक येक पर्वत ५०० योजनका चौडा है, अर आठ विदेह क्षेत्र है; वो १७७०३ योजनके है, येक येक क्षेत्र २२१२ ७/८ योजनका चौडा हैं. इस पूर्व विदेहके वन, नदी, पर्वत, अर क्षेत्रका चौडाईका जोड करनेसे २३००० जोजन भया. वैसेही पश्चिम विदेहके वन, नदी, पर्वत, अर क्षेत्र २३००० योजन के है. नाममे मात्र भेद है, ओर सर्व गणती पूर्व विदेहके समान है. नीलवंत पर्वत पर केसरी नामा द्रह (सरोवर) से सीता नदी दक्षिण मुखकर निकली है, सो माल्यवंत गजदंत पर्वतमेसे निकलकर सुदर्शन मेरुकों अर्ध चक्कर दे फेर पूर्व वाहिनि होके पूर्व विदेहमेसे लवण समुद्रको जाय मिली है, इससे पूर्व विदेहके आठ क्षेत्रके सोला क्षेत्र जाणे जाते है. ऐसेही पश्चिम विदेहमेसे सीतोदा नदी गई है, उसे पश्चिम विदेहमे आठ क्षेत्रके सोला क्षेत्र जाणे जाते है. पूर्व विदेहके सोला अर पश्चिम विदेहके सोला ऐसे जंबूद्वीपमें ३२ विदेह क्षेत्र है, तिनमें पूर्व विदेहमें १ श्रीमंद १ युगमर अर पश्चिम विदेहमें १ बाहु १ सुबाहु ऐसे चार तीर्थंकर शाश्वत रहै है, ताकों मैं नमस्कार करूं हूं, वो तीन लोकके ईशहे ॥२७॥

॥ जंबुद्वीप दक्षिणोत्तर १ लक्षयोजनका है, उसीका कथन ॥ ३१ सा ॥

जंबूद्वीप दक्षीण उत्तर लाख जोजनकौ, भाग येकसो निवे, येक भरत भाईयो ॥

दोय हीमवान शैल, चार हेमवत खेत, महा हीमवान आठ, सोलै हरि गाईयो ॥
बत्तीस नीषध है, ये त्रेसठ, उधै त्रेसठ बीचिमें वीदेह भाग चौसठ बताईयो ॥
भाग पांचसै छव्वीस, कलाछह, उन्नीस कि. अठत्तर चैताले है सदासीस नाईयो २८

अर्थ– जंबुद्वीप दक्षिणोत्तर येक लक्ष योजनका चौडा है. उसीके १९० भाग करिये, उसीमें येक भाग ५२६।६ पांचसे छव्वीस योजन छह कलाका भरत क्षेत्र धनुष्याकार है ॥ भरत क्षेत्रके उत्तर दिशाकौ हिमवान पर्वत है, सो भरत क्षेत्रसे दूना (१०५२।१२) चौडा है अर सौ १०० योजन उंचा है, सोना वर्ण है, पूर्वसे पश्चिम लवण समुद्रतक पडा है. इसके ऊपर ११ कूट है अर १ पद्मनामा द्रह है, इसिमेसे ३ नदी निकली है, उत्तराभिमुखसे १ रोहितास्या नदी निकलकर हेमवत क्षेत्रमे शब्दपाती वृतवैताढ्य पर्वतकौ अर्थ चक्करदे पश्चिमाभिमुख होके लवण समुद्रकौ मिली है, अर पूर्वाभिमुखसे गंगानदी निकलकर फिर दक्षिणाभिमुख होकै भरत क्षेत्रेमे वैताढ्य पर्वतमेसे जाय लवण समुद्रकौ मिली है. अर पश्चिमाभिमुखसे सिंधुनदी निकली है वोही दक्षिणाभिमुख होकैं भरतक्षेत्रमे वैताढ्य पर्वतमेसे जाय लवण समुद्रकौ मिली है. गंगा सिंधू दोनूनदी भरत क्षेत्रमेसे जाती है उससे भरत क्षेत्रके २ खंड (भाग) दीखे है अर भरत क्षेत्रके मध्य पचास योजन उंचीका वैताढ्य पर्वत है, सो रूपामय पूर्व पश्चिम लवण समुद्रतक है उससे भरत क्षेत्रके ६ खंड दीखे (५ म्लेंछ १ आर्य) है, वैताढ्य पर्वत पर ९ कूट है, इहां विद्याधरनिका निवास है. हिमवान पर्वतके उत्तर दिशाकौ हेमवतनामा क्षेत्र २१०५।५ योजन

चौडा है, तहां जघन्य भोगभूमी है, वहां कल्पवृक्षादि सुख है. हेमवत क्षेत्रके उत्तर दिशाकौ महाहिमवान पर्वत ४२१०।१० योजन चौडा है २०० योजन उंचा, सोनेका है. इसपर ८ कूट है अर १ महापद्मनामाद्रह है. इसमेसे दोय नदी निकली है. दक्षिणाभिमुखसे रोहितास्या नदी निकलकर हैमवत क्षेत्रमें शब्दपाति वृत वैताड्य पर्वतकौ अर्ध चक्कर (घेर) देके पूर्वाभिमुखहो लवणसमुद्रकौ मिली है अर उत्तराभि मुखसे हरिकांता नदी निकली है सो हरि क्षेत्रमें गंधावती वृत वैताड्य पर्वतकौ अर्ध प्रदक्षिणादे पश्चिमाभिमुख होके लवणसमुद्रकौ मिली है. महाहिमवान पर्वतके उत्तरदिशाकौ हरिक्षेत्र ८४२१।१ योजन चौडा है तहां मध्यम भोग भूमी है वहां कल्पवृक्षादि सुख है. हरि क्षेत्रके उत्तरकौ निषध पर्व १६८४२।२ योजनका चौडा है अर ४०० योजन उंचा है, लाल सोनेका है, इसके उपर ९ कूट है अर १ तिगिंछनामाद्रह है उसमेसे दोय नदी निकली है, दक्षिणा मुखसे हरि नदी निकलकर हरिक्षेत्रमे गंधावती वृत वैताड्य पर्वतकौ अर्ध घेरदेके पूर्वाभिमुख होके लवण समुद्रकौ मिली हैं अर उत्तराभिमुखसे सीतोदा नदी निकलकर देवकुरु उत्तम भोगभूमीमेसे जाय विद्युत्प्रभ गजंदत पर्वतमेसे भद्रशाल वनमेसे जाय सुदर्शन मध्यमेरू पर्वतकौ अर्ध चक्करदे पश्चिमाभिमुख होके पश्चिम विदेह क्षेत्रमेसे जाय पश्चिम लवण समुद्रकौ मिली है. ऐसा मेरूपर्वतके दक्षिणदिशाका (लवणसमुद्रसे विदेहक्षेत्र पर्यंत) त्रेसठ भाग (३३१५७।१७) का वर्णन कीया. वैसाही मेरूके उत्तरदिशाका (लवण समुद्रसे विदेह क्षेत्र पर्यंत) क्षेत्र, पर्वत, नदी, द्रह, इत्यादि दक्षिणदिशाके

पूर्वलवण समुद्रसे पश्चिमलवण समुद्रतक जंवूद्वीप एक लक्षयोजनका है, उसका हिसाब नीचे मुजब.

मध्यमेरुके पूर्वदिशाके विदेह क्षेत्र अर पर्वतकी चौडाई.		महायोजन	उंची	जिनग्रह
लवणसमुद्र.				
देवारण्यवन	भूतारण्यवन	२९२२	०	०
१ कच्छक्षेत्र	९ वच्छक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
चित्रकूट वक्षारपर्वत	चित्रकूटवक्षारपर्वत.	५००	,,	२
२ सुकच्छक्षेत्र	१० सुवच्छक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
ग्राहवतीनदी	ततांतरनदी.	१२५	०	०
३ महाकच्छक्षेत्र	११ महावछक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
ब्रह्मकूटवक्षार.	वैश्रवणवक्षारपर्वत.	५००	,,	२
४ कच्छावर्तक्षेत्र	१२ वत्सावर्तक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
द्रहवतीनदी.	मतांतरनदी	१२५	०	०
५ आवर्तक्षेत्र.	१३ रम्यविदेह.	२२१२।७/८	०	२
निलनी व क्षारपर्वत	अंजनकूटवक्षारपर्वत.	५००	,,	२
६ मंगलावतीक्षेत्र	१४ रम्यकक्षेत्र	२२१२।७/८	०	२
वेगावतीनदी.	उन्मतांतरनदी	१२५	०	०
७ पुष्करक्षेत्र	१५ रमणीकक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
येकशैल्यपर्वत	मातंजनवक्षार कूट	५००	,,	२
८ पुष्कलावर्तक्षेत्र	१६ मंगलावतीक्षेत्र.	२२१२।७/८	०	२
भद्रशालवन	भद्रशालवन	२२०००	०	१
लवणसमुद्र, ऐरावतादि ३ क्षेत्र मेरुपर्वत.	लवणसमुद्र, भरतादि ३ क्षेत्रे	१००००	१लक्ष.	

सीतानदी

भद्रशालवनसे लवणसमुद्रतक पूर्व विदेहकी चौडाई २३ हजार योजनकी है

लवणसमुद्रसे भद्रशालवनतक पश्चिमविदेहक्षेत्रकी सब चौडाई २३ हजार योजनकी है

भद्रशालवन	भद्रशालवन	२२०००	१
१७ वप्रक्षेत्र	२५ पद्मक्षेत्र.	२२१२॥७/८	२
चंद्रकूटवक्षारपर्वत	अंकावतीवक्षारपर्वत.	५००	२
१८ सुवप्रक्षेत्र.	२६ सुपद्मक्षेत्र.	२२१२॥७/८	२
उन्मीलिनीनदी.	खिरोदानदी.	१२५	०
१९ महावप्रक्षेत्र	२७ महापद्मक्षेत्र	२२१२॥७/८	२
सुरकूटवक्षारपर्वत	पद्मावर्तवक्षारपर्वत.	५००	२
२० वप्रावतीक्षेत्र.	२८ पद्मावर्तक्षेत्र.	२२१२॥७/८	२
गंभीरमालिनीनदी.	सीतस्रोतांतरनदी	१२५	०
२१ वल्गुक्षेत्र.	२९ शंकक्षेत्र.	२२१२॥७/८	२
नागकूटवक्षारपर्वत.	अशीविषवक्षारपर्वत	५००	२
२२ सुवल्गुक्षेत्र	३० नलिनक्षेत्र	२२१२॥७/८	२
फेममालिनीनदी.	अंतरवाहिनीनदी	१२५	०
२३ गंधीलक्षेत्र.	३१ कुमुदक्षेत्र	२२१२॥७/८	२
देवकूटवक्षारपर्वत	सुखावहवक्षारपर्वत	५००	२
२४ गंधिलावतीक्षेत्र.	३२ नलीक्षेत्र	२२१२॥७/८	२
भूतारण्यवन.	देवारण्य	२९२२	०
लवण समुद्र (सीतोदा नदी)		१०००००	५०

॥ जंबुद्वीपके बीच सुदर्शन मेरुपर्वत येक लक्ष योजनका उंचा है सो कहे है ॥ ३१ सा ॥

मेरूलाख येक जड,उंचा निन्यानौ हजार, चूलीका चालीस,वाल अंतर विमानहे ॥
नीचे भद्रशालवन दीशाचारि जीनभौन, पांचसै पै नंदन चैत्याले चार वान है ॥

साढेसासठ हजार है सौमनसवन चौ चैत्याले उंचे सहस छत्तीस वखानहे ॥
तहां बन पांडूक चैत्याले चार, सब सोलै, मन वच काय सेति वंदौ पापहानि है॥२९॥

अर्थ–चित्रा भूमीके नीचे मेरूपर्वतकी जड १ हजार योजनकी है अर चित्राभूमीपै भद्रशान वन है, इस वनैंते लेकै पांडुकवन पर्यंत मेरू निन्यानैव हजार योजन उंचा है, अर तिस पांडुक वनके बीच ४० योजनकी उंची मेरूकी चूलिका इंद्रनील मणीकी है, तिस चूलिकाकी मोटाई तलेमें १२ योजन, मध्यमें ८ योजन, अंतमें ४ योजन है, अर तिस चूलिकाके ऊपर बालके अंतर सौधर्म इंद्रकी पहिले सभाकास्थान (ऋजुविमान) ४५ पैतालीस लाख योजनका चौडा है ॥ मेरूके जडपै चित्रापृथ्वीपर भद्रशालवन है ते अनादि कालके शाश्वत है, इस भद्रशाल वनमे मेरूकै चारी दिशाकौ ४ अकृत्रिम जिनचैत्याले उत्कृष्ट (१०० योजन लंबे, ५० योजन चौडे, ७५ उंचे) है. इस भद्रचाल वनतै पांचसै योजन उंचापै मेरूकै चारी दिशाकौ चार नंदन वन है, तहां उत्कृष्ट अकृत्रिम जिनचैत्याले ४ है ॥ अर नंदन वनतै साढे बासठ हजार योजन उंचा पै मेरूके चारी दिशाकौं चार सौमनस वन है, तिस वनमें अकृत्रिम जिन चैत्याले ४ है ते मध्यम गिणतीके (५० योजन लंबे, ३७॥ योजन उंचे, २५ योजन चौडे) है. सौमनस बनतै छत्तीस हजार योजन उंचापै मेरूके चारी दिशाकौ चार पांडुकवन है, इस चारी वनमें ४ अकृत्रिम जिन चैताले जघन्य गिनतीके (२५ योजन लंबे, १२॥ योजन चौडे-१८॥ योजन उंचे,)है. तिन सब १६ कौ नमस्कार करूहूं॥२९॥

॥ मेरू पर्वतकी उंचाई, चौडाई घटाई अर वनकी चौडाई कथन ॥ सवया ३१ सा ॥

मेरू गोल जडतलै दस हजार निव्वै कौ, भूपै है हजार दस, नंदनपै लहाहै ॥
नौ हजार नौसे चौवन भाग कहै, तहां सौमनस बीयालीससै बहत्तरि रहाहै ॥
पांडुक हजार येक, बीचे बारह चूलिका, चारीसै चौरानु बन, पांडुक सर्दहा है ॥
सौमनस नंदन है, पांचसेके भद्रशाल, बाईस हजार पूर्व पश्चीममे कहा है ॥३०॥

अर्थ–मेरुगिरी गोल है. चित्रापृथ्वीके नीचे मेरूकी तलेमें चौडाई दस हजार नव्वे जोजनकी है. जडके तलेतैं लेय येक हजार उंचे-(चित्रापृथ्वी) पर भद्रशाल वन है, तहांतक मेरु अनुक्रमसे ९० योजन घटा है. मेरूके पूर्व पश्चिमको भद्रशाल वन वाईस बाईस हजार योजनके चौडे है, अर दक्षिणोत्तर पांचसे पांचसे योजनके चौडे है. भद्रशाल वनतै पांचसे योजन उंचापे नंदन वनहै तहांतक मेरू किंचित कम ४६ योजन घटा, तहां मेरूके दोबाजूके नंदनवनकी चौडाई पांचसे पांचसे योजनकी अर मेरूकी चौडाई ८९५४$\frac{6}{11}$ जोजन ऐसा ९९५४$\frac{6}{11}$ है, नंदन वनसे दसहजार योजन उंचातक मेरूकी चौडाई इकसार है अर उसकै ऊपर साढा बावन हजार योजन उंचातक मेरू क्रमसे ४६८२$\frac{6}{11}$ योजन घटाहै, ४२७२ रहा. नंदन वनतै साढा बासठहजार योजन उंचापै सौमनस वन पांचसै पांचसै जोजनके चौडे है अर मेरू पर्वतकी चौडाई ३२७२ योजनकी है ॥ सौमनस वनतै ३६ हजार योजन उंचापै २ पांडुक वन है, उसी छतीस हजार योजनमे ११ हजार जोजन उंचा तक मेरूकी चौडाई ३२७२ योजनकी इकसार है अर ऊपर पचीस

हजार योजन उंचा तक क्रमसे २२७२ योजन घटाहै· तहापांडुक वनकी चौडाई ४९४।४९४ योजनकी है, अर मेरूकी चौडाई १२ योजन ऐसा १००० की है· पांडक वनमें मेरूके चारी दिशाको सौ सौ जोजन लंबी, पचास पचास जोजन चौडी, आठ आठ जोजन जाडी, ऐसी ४ पांडुक सीला अर्धचंद्रमाके आकार है, इस सीलापर भरतऐरावत तथा पूर्व पश्चिम विदेहके तीर्थंकरनिका जन्माभिषेक होय है ॥३०॥ पृष्ट २७ में मेरू पर्वतका नकसा है तहातै देखलेना

॥ जोतिष मंडलकी ऊंचाई कथन ॥ छप्पै ॥

सात शतक अरु निवे तासपर तारे राजे ॥ ताऊपर दसभान, असी परचंद विराजे ॥ चार नखत, बुध चार, तीनपर शुक्र बतायो ॥ तीन गुरू, कुजतीन, तीनपर शनी ठरायो ॥ इम नौसे योजन भूमिते जोतिष चक्र वखानिये ॥ इकसौ दस जोजन गगनमें फैलि रह्यो परमानिये ॥ ३१ ॥

अर्थ–चित्रा पृथ्वीतै ७९० योजन उंचापर सब तारे निके विमान है ॥ तारेके ऊपर ९ योजन उंचेपर केतूका विमान है, अर केतूके विमानते १ योजन उंचा सूर्यका विमान है, सूर्यते ८९ योजन उपर राहूका विमान है, राहूते १ योजन ऊपर चंद्रक विमान है ॥ सूर्य चंद्रके विमान अग्निवर्णके है अर राहू केतूके विमान नीलवर्णके है, जिस वक्त सूर्य अर केतूके वा चंद्र अर राहूके विमान बरोबर चालत है, उसवक्त ऊपरके विमान छिप जाते है, (नीचे वालेको नही

१ उसे ग्रहण कहते है. उसवक्त मिथ्या त्वीलोक स्नान करैहै, दान करैहै, तैसा जैनधर्मीको करनेकी जरूरी नही.

दीखते) चंद्रमातै ४ योजन उपर अठाईस नक्षत्रोके विमान है, नक्षत्रतै ४ योजन ऊपर बुधका विमान है, बुधतै ३ योजन ऊपर शुक्रका विमान है॥शुक्रतै ३ योजन ऊपर गुरु (बृहस्पती) का विमान है, गुरुतै ३ योजन ऊपर कुज (मंगल) का विमान है, मंगलतै ३ योजन ऊमर शनीका विमान है ॥ चित्रा पृथ्वीतै वा भद्रशाल वनतै शनीके विमानतक नवसे ९००योजन उंचाई है, भूमीतै ७९० योजन उंचाईतक शून्य आकाशही है, अर इसके ऊपर कहिये तारेके विमानतै शनीके विमान तक ११० योजनमें जोतिष मंडल फैलि रह्याहै॥ अढाई द्वीपमें जितना जोतिष मंडल है तितना ध्रूके तारे विना मेरू पर्वत कौ ११२१ योजन छोड दूरसे प्रादक्षीणा करे है, रात्रंदिन भ्रमण करे है, किंचित विश्रांती नही है· अर अढाई द्वीपवीना असंख्यात द्वीप समुद्रमेके सब जोतिष मंडल जहाके तहां अवस्थित (स्थीर) है, तहां रात्र दिनका भेद नही है. अढाई द्वीपके वाह्य मेरूपर्वत नही है, सर्व जोतिष मंडल के विमान अनादि कालके है अर अनादि काल ताई रहेगा, इसीका अंत (नाश) नहीहै, परंतु जोतिषी विमानमें जो देवहै उसीका आयु १००००० वर्षका है, वो पूराहोय जब उसका अंतकाल होय तब तत्क्षणी कोई मिथ्या दृष्टी जीव मिथ्या तीर्थयात्रा करके भ्रमणे वाला मरके जोतिषी देव होय तहां उपजे है, सम्यक्ती जीव भुवनत्रक (भवन वासी देव, व्यतरवासदेव, जोतिषदेव,) में नही उपजे है, सम्यक्तका उत्पात स्वर्ग मे मुख्य देव होयहै· वाहानीक देवमे, सेवक देवमे, नहीहोय है· भावार्थ—जोतिषी देव सम्यक्त ग्रहण करिसकै परंतु सम्यक्त जीव मरकरके जोतिषीमें नही उपजे है· जिस जोतिषी

देवकौ सम्यक्त भया है सो आपके विमानमेंके अकृत्रिम जिन चैत्यालयमेंके प्रतिमाकी पूजा स्तुति वंदना भक्ती करै है. अर जिसकौ सम्यक्त नभया सो नही करै है. ॥ ३१ ॥

॥ अढाई द्वीपमें जो जोतिष मंडळ है तिनकी संख्या ॥ कवित्त ॥

इकचंद इकसूर्य अठासी ग्रह, अठाइस नखत्र बखान ॥ छयासठ सहस नवसे पिचहत्तर कोडाकोडी तारे जान ॥ इकसौ बत्तिस चंद इही विधि ढाइ द्वीपमध्य परवान ॥ सब चैताले प्रतिमा मंडित बंदन करौ जोरि जुगपान ॥३२॥

अर्थ—जोतिषीदेव पांच प्रकारके, (चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारका,) है, उसीमें चंद्र इंद्र है अर सूर्य प्रतींद्र है१ चंद्र १सूर्य ८८ग्रह २८ नक्षत्र ६६९७५ कोटा कोटी (कोटसंख्यकौ कोटसंख्यने गुनना उसकौ कोटा कोटी कहते है) तारे है, ये सब येक चंद्रमाका परिवार है, ऐसाही सब चंद्रमाका परिवार है, सो सबका हिसाबसे जानना ॥ अढाई द्वीपमे १३२ चंद्र अर १३२ सूर्य है इसका हिसाब आगेके कवित्तमें है तहांते देखिलेना ॥ सब जोतिषी देवताके विमाननमें येक येक अकृत्रिम जिनमंदिरहे तिनमें १०८।१०८ रत्नमय पदमासन अतिसुंदर जिनप्रतिमा है तिनकौ मै दौनौ हाथ जोडिके नमस्कार करूं हूं ॥ ३२ ॥

॥ सर्वद्वीप समुद्रके चंद्रमाकी गिणती ॥ ३१ सा ॥

जंबुद्वीप दोय, लवणांबुधीमें चारचंद, धातुखंड बारे, कालोदधि बीयाळीस है ॥
पुष्करके भागदोय ईधर बहत्तरि है, उधै बारेसे चौसठ भाखै जगदीस है ॥

पुष्कर जलधिसार दोसत ग्यारै हजार, आगै आगै चौगुने वखाने जगदीस है ॥
जेते लाख ते ते वले दूने दूने अधीक है, सब असंख्य चैताले वंदत मुनीस है ॥३३॥

अर्थ–जंबुद्वीपमें २ चंद्र है. लवण समुद्रमें ४ चंद्र है. धातकी खंडमें १२ चंद्र है. कोलादधिमें ४२ चंद्र है ॥ पुष्कर द्वीपमें मानुषोत्तर पर्वत पडा है मानुषोत्तर पर्वतके ऐली (अर्धपुष्कर) भागमें ७२ चंद्र है. इहांतक अढाई द्वीप हैं, इसीमें १३२ चंद्र है ॥ अर मानुषोत्तरके पैली (अर्ध पुष्कर) भागमें १२६४ चंद्रहै ॥ अर पुष्कर समुद्रमें– ११२०० चंद्र है, तिसते आगे आगे समुद्रते चौगुने समुद्रमें है. अर द्वीपते चौगुने द्वीपमें है. ऐसें असंख्यात द्वीपसमुद्रतक जानना. इन असंख्यात तारेके सव विमाननमें अकृत्रिम जिन चैत्यालय है तिनीमेकें जिनबिंबकौ मुनीसदा वंदन करै है ॥ ३३ ॥

॥ लवण समुद्रमें १००८ बडवानल (कूप) है तिनका कथन ॥ सवया ३१ सा ॥

लवणोदधि बीच चारि दीशामाहि चारकूप कहे मृदंग जेम तीनको प्रमान है ॥
पेट और उंचे येक येक लाक जोजनके, नीचे उंचे मूखाकौ दस हजार मान है ॥
चारि बिदीशामैं चार, पेटहे उंचे दशहजार, येक नीचै उंचे मूखको वखान है
अंतर दीशा हजार, पेट उंचै है हजार, नीचे उंचे मूखसौ कोधन्य जैन ज्ञान है॥३४॥

अर्थ–जंबुद्वीप येकलक्ष योजनका है गोल है, उसकौ सबठोर (तर्फ) दोयदोय लाख योजन लवण समुद्रका घेरा है, लवण लसुद्र येक हजार योजन उंडा है.

भरत क्षेत्रमे शाश्वत महानदी १४ है सो लवण समुद्रको मिली है. अर धातकी खंडमे शाश्वत महानदी २८ है, उसिमे १४ नदी लवण समुद्रकौ मिली है, १४ नदी कालोदधीकौ मिली है, लवण समुद्रके बीच चारी दिशाकौ ४ वडवानल (बावडी) है. ॥ इनकी ऊंचाई येक येक लाख योजनकी है अर बीचमें पेट येक येक लाख योजनका चौडा है, नीचेका अर ऊपरका मुख दस दस हजार योजनका चौडा है ॥ और चार विदिशामें ४ वडवानल हैं, इनका पेट अर ऊंचाई दस दस हजार योजनकी है, नीचेके अर ऊपरके मुखकी चौडाई येकयेक हजार योजनकी है ॥ आठ अंतर दिशामें येक हजार वडवानल है (येकयेक अंतर दिशामें १२५।१२५ वडवानल हैं) इन येकयेक वडवानलका पेट अर ऊंचाई येकयेक हजार योजनकी है, नीचेका अर ऊपरका मुख-सौ सौ योजनका चौडा है. चारदिशामे ४ चारविदिशामे ४ अर आठ अंतर दिशामे १००० ऐसे १००८ वडवानल है, ऐसा जिनेंद्रभगवाननै केवलज्ञानमें कह्या है सो निराबाध ज्ञान धन्य है ॥ ३४ ॥ [सब वडवानलका आकार मृदंग समान है] वडवानलकी गिणती लघु योजन (४ कोशकी येक योजन) जानना

॥ मानुषोत्तर पर्वत वलयाकार (कंकणआकार) है तिसका कथन ॥ कवित्त ॥

मानुषोत्तर पर्वत चौराई भूपर येक सहस बाईस ॥
मध्य सातसे तेईस जोजन, ऊपर चार शतक चोवीस ॥
सतरहसै इकवीस उचाई, जडा चारसै पाव रु तीस ॥

ऋजु विमान कहि भाति मिल्यो है जोजन लाख कह्यो जगदीस ॥३५॥

अर्थ—जंबुद्वीप १ लाख योजनका है, उसकौ लवण समुद्रका ४ लाख योजनका वेढाहै, प्रत्येक दिशाकौ दोय दोय लाख योजन लवण समुद्र है. अर लवण समुद्रकौ धातकी खंडका ८ लाख योजनका वेढा है, प्रत्येक दिशाकौ चार चार लाख योजन धातकीखंड है. अर धातकी खंडकौ १६ लाख योजन कालोदधी समुद्रका वेढा है, सब दिशाकौ आठ आठ लाख योजन कालोदधि है. अर कालोदधि कौ १६ लाख योजनका अर्ध पुष्कर द्वीपका वेढा है, सब दिशाको आठ आठ लाख योजन अर्ध पुष्करद्वीपहै. इहां तक अढाई द्वीप (१ जंबुद्वीप १ धातकीद्वीप, ॥ अर्ध पुष्कर द्वीप) ४५ लाख योजन (१ जंबुद्वीप, ४ लवण समुद्र, ८ लाख धातकी खंड, १६ लाख कालोदधी, १६ लाख अर्ध पुष्करद्वीप) है. इस अढाई द्वीपमें ही मनुष्य है,इसीके बाह्य मनुष्य नही अर कोईही मनुष्य जाय सकै नही. अढाई द्वीप कहिये मनुष्य क्षेत्रके बाह्य यो पर्वत है तातै मानुषोत्तर पर्वत कहे है. मानुषोत्तर पर्वतकी जड चित्रा पृथ्वीमै ४३०।¼ चारसे सवातीस (उचाई चौथाहिसा) योजन है, अर पृथ्वीपर येक हजार बाईस योजनका चौडाहे ॥ ऊपर अनुक्रमसे घटाहे सो मध्यमें सातसे तेईस योजनचौडा रहाहै अर उसके ऊपर अनुक्रमसेघटाहै सो अंतमें चारसे चोईस योजन चौडा रहा ॥ मानुषोत्तर. पर्वतकीउंचाई सतरासें इकवीस योजन है. इसीके ऊपर चारी दिशाकौ ४ अकृत्रिम जिन मंदिर है इहां देवता आय पूजा वंदना करे है, इहां कोई मनुष्य जायनसकै, विद्याधर दूर तै वंदे है

कोई जीव ऐसी शंका करे है की? ऋजु विमान (पहिलास्वर्गका भाग) कपनीके आकार पडा है सो मानुषोत्तर पर्वत कौ आय लगा है इसे अढाइ द्वीपके बाह्य मनुष्य नजायसकै, सो यह बात झूट(गलत) है, मध्य लोकतै १ लाख योजन उंचापर ऋजु विमान है अर मध्य लोकतै १७२१ योजन उंचा मानुष्योत्तर पर्वत है, दोनूमें बहोत अंतर है, वो कैसा मिलेगा. अढाई द्वीपकौ सबठोर मानुषोत्तर पर्वतका वेढा वलयाकार (कंकणाकार) है सो जानना ॥ ३५ ॥

॥ अष्टम नंदीश्वर द्वीपका कथन ॥ ३१ सा ॥

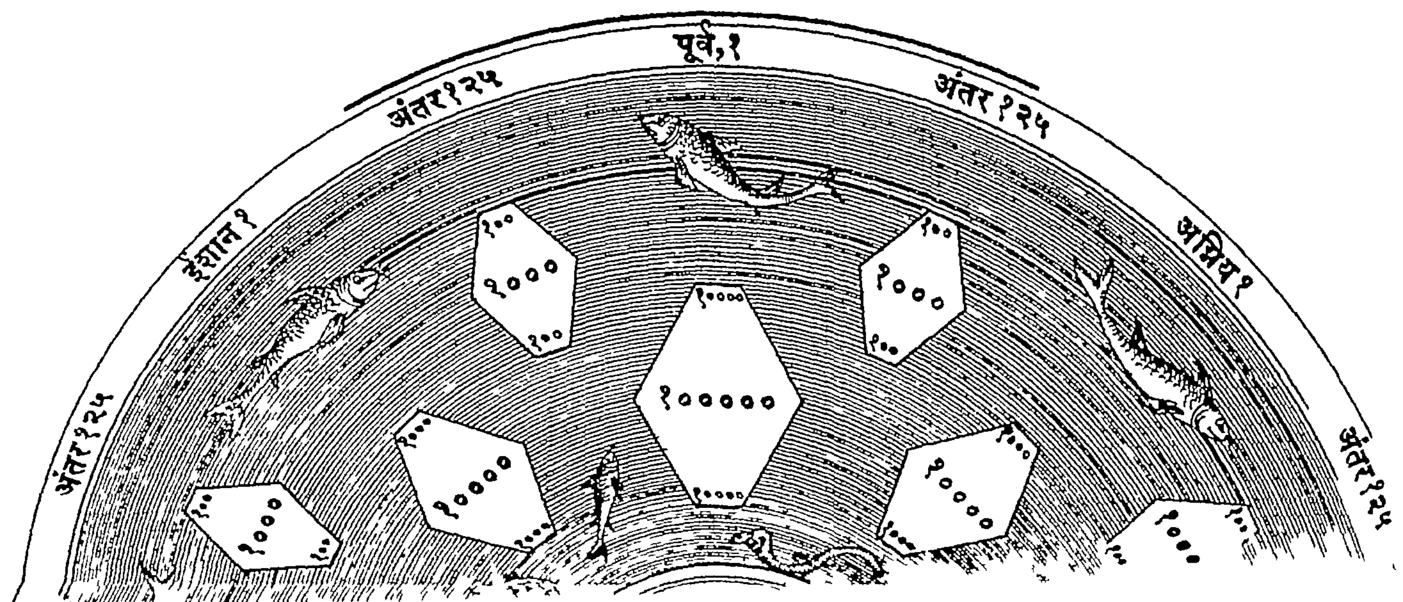
ईकसो त्रेसठ कोडि चवरासि लाखजोडि जोजनका चौडादीप, बावन पहाड है॥
दीशाचारि अंजन हजार चवऱ्यासि, सोले दधिमूख जोजन हजार दस उंचे है
रतीकर है बत्तीस जोजन हजार येक, लंबे चौरे उंचे सब ढोलके आकार है॥
सबपरि जीन भौन बावन वीराजत है, वर्षतीनवार देवकरै जै जै कार है ॥ ३६ ॥

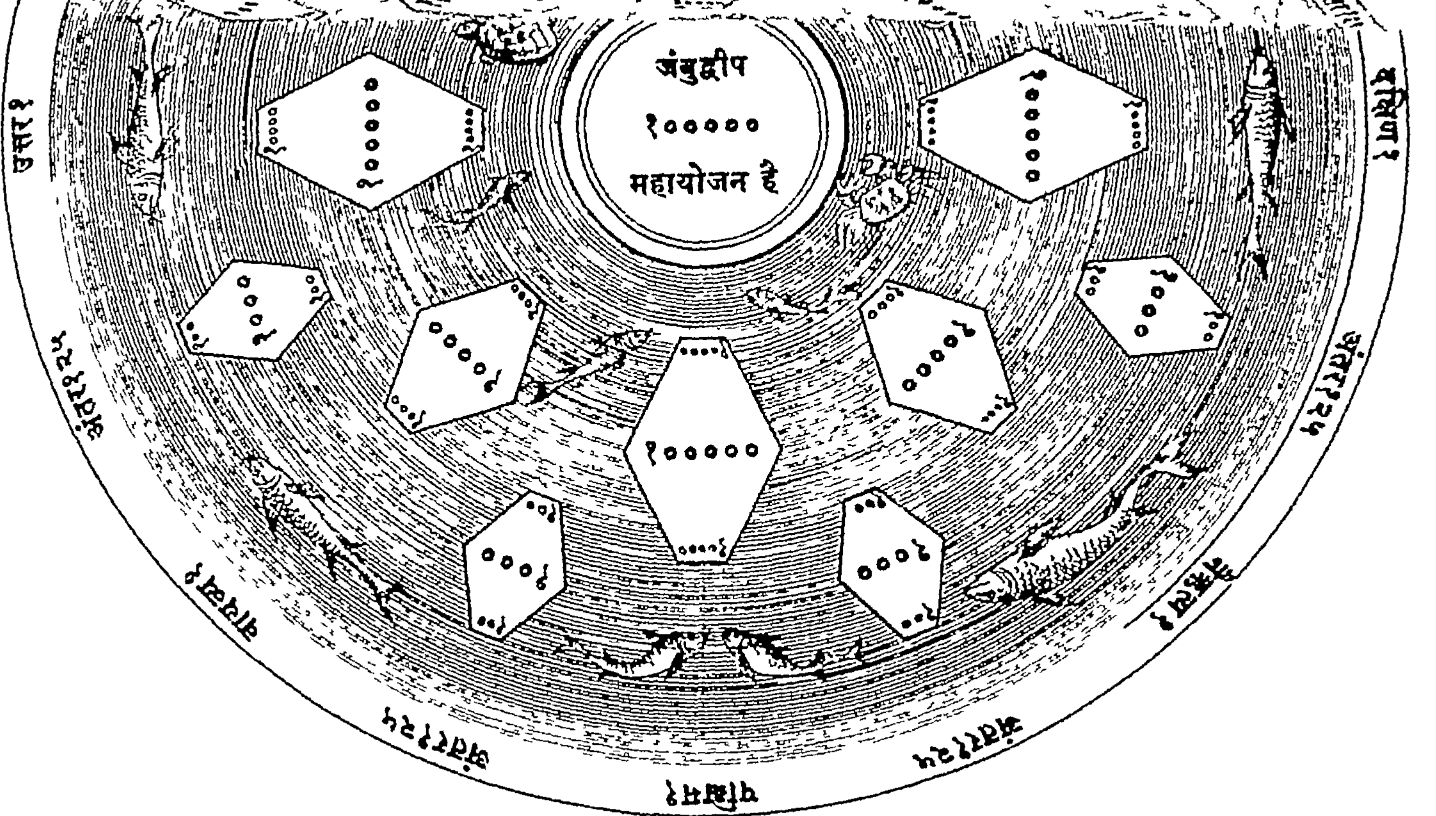
अर्थ–अष्टम नंदीश्वर द्वीप येकसौ त्रेसठकोटि, चवऱ्यासी लाख जोजनकौ चौडा है, तापर ५२ पर्वत है सो कहै है ॥ नंदीश्वर द्वीपमें चारी दिशाकौ ४ अंजनगिरि पर्वत शामवर्णके है, भूमीतै ८४ हजार योजन उंचेहै अर इतनेही लंबे चौडे है, आदि मध्य अंतमे इकसार है, येक हजार योजन भूमीमें जड है. अर येकयेक अंजन गिरीके चारीदिशाकौ येकयेक चौकोर बावडी लाख लाख योजनकी लंबी चौडी, अर येक येक लाख योजनकी उंडी है, इसबावडीमें येकयेक दधि मुखनामा सफेत वर्णका पर्वत है, चार अंजन गिरीको १३ दधिमुख पर्वत है, ते दसदस हजार

लवणसमुद्रमध्यें,

१००८ वडवानल है, तिस

वडवानलका नकसा.




जंबुद्वीप
१००००० महायोजन है
दक्षिण १
अंतर१२५
नैऋत्य १
अंतर१२५
पश्चिम१
अंतर१२५
वायव्य १
अंतर१२५
उत्तर १
१०००००
१००००
१०००

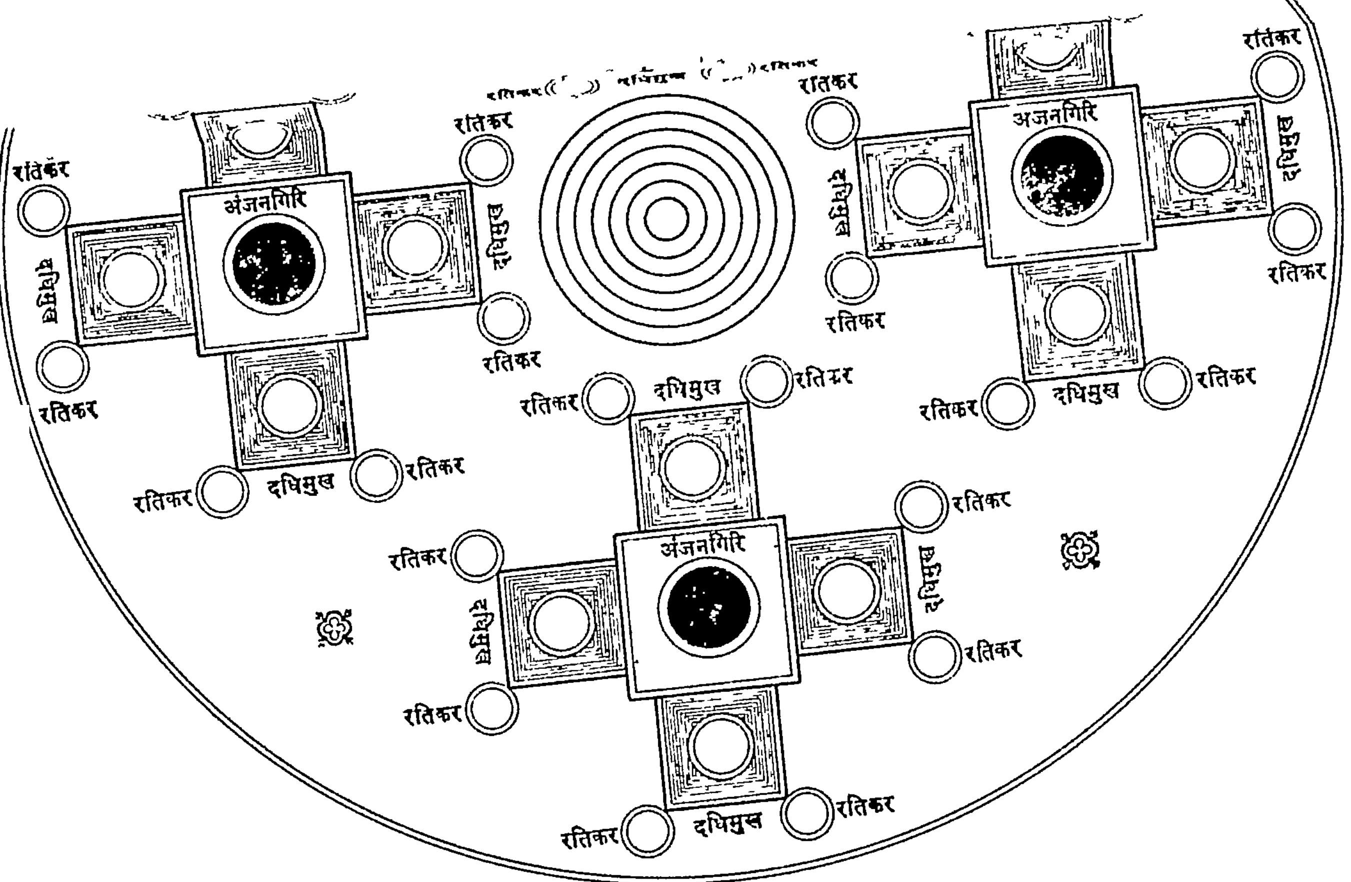
अष्टम नंदीश्वर द्वीपका नकसा.

१ जंबुद्वीप
१ लवणसमुद्र
२ धातकीद्वीप
२ धातकीसमुद्र
३ पुष्करद्वीप
३ पुष्करसमुद्र
४ वारुणिवरद्वीप
४ वारुणिवरसमुद्र
५ क्षीरद्वीप
५ क्षीरसमुद्र
६ घृतवरद्वीप
६ घृतवरसमुद्र
७ इक्षुद्वीप
७ इक्षुसमुद्र
८ नंदीश्वरद्वीप

अर ५२ अकृत्रिम जिन मंदिर.
प्रत्येक दिशामें १३।१३

पूर्व

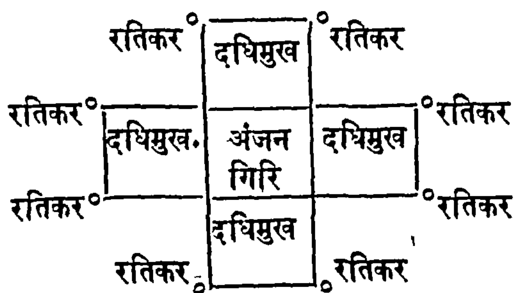
अंजनगिरि
दधिमुख
दधिमुख
दधिमुख
दधिमुख
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
दधिमुख
दधिमुख
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर
रतिकर



चरचाशतक
॥ ३४ ॥

योजनके उंचे, दसदस हजारके लंबे है इतने ही चौडे है १ हजारजड है ॥ जिसबावडीमें दधिमुख पर्वत है, उस बावडीके बारले (बाह्यके) दोदोकोनेकौ येकयेक रतिकर पर्वत लाल वर्णका है, सोला बावडीकौ ३२ रतिकर पर्वत है, ते हजार हजार जोजनके लंबे है, इतनेही उंचे अर चौडे है, अढाइसे योजनकी जड है. नंदीश्वरद्वीपमे प्रत्येक दिशाको, १ अंजनगिरी, ४ दधिमुख ८ रतिकर ऐसें १३ पर्वत है, चारी दिशाके ५२ भये ते सव ढोलके आकार है ॥ ऐसें ५२, पर्वत पर ५२ अकृत्रिम जिन चैत्यालय है. तहां वर्षमें तीनवार (अशाढ कार्तिक फाल्गुण) शुक्ल ८ से पूर्णिमा पर्यंत आठौ दिनरात ६४ प्रहर स्वर्गवासी देवताआय नृत्य गानादी महामोत्साह पूजास्तुति करै है. नंदीश्वर द्वीपमें देवता बिना कोइ जासके नही ॥ ३६ ॥

आठवे नंदीश्वर द्वीपमें १ अंजनगिरि, ४ दधिमुख, ८ रतिकर, ऐसे १३ जिन मदिर येकयेक दिशाकौ है, चारू दिशाको ५२ जिन मंदिर है



अष्टम द्वीपके येक दिशाके १३ जिन मंदिरका नकशा

॥ अधो (पाताल) लोकमें सातकोटि बहत्तरलाख अकृत्रिम जिनमंदिर है तिनकी संख्या ॥ कवित्त ॥

चौसट लाख असुर जिनमंदिर, लाख चौरासी नाग कुमार ॥
हेम कुमार के लाख बहत्तर, छहविधिके लख छिहत्तर धार ॥
लाख छानवे वात कुमर है, पाताल लोक भवन दससार ॥
सात कोटि अर लाख बहत्तर, जिन चैताले वंदौ सुखकार ॥ ३७ ॥

अर्थ–पाताल लोकमें असंख्यात जिनचैत्याले है, परंतु इहां फक्त दस कुमारदेवताके कहेहै,

१ असुर कुमार देवताके भुवननमें चौसठलाख जिनमंदिर है, ६४०००००
१ नाग कुमार देवताके भुवननमें चौऱ्यासीलाख जिनमंदिर है, ८४०००००
१ हेम कुमार देवताके भुवननमें बहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७२०००००
१ विद्युत् कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ अग्निकुमार देवता के भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ मेघ कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ उदधि कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तर लाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ द्वीप कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ दिक्कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ वात कुमार देवताके भुवननमें छ्यानवे लाख जिनमंदिर है, ९६०००००

इहविधि दश प्रकारके पातालवासी देवताके भुवननमें सातकोटि ७७२००००० बहत्तरलाख.
अकृत्रिम जिन चैताले है तिनमेंके सब जिन प्रतिमाकों वंदो हों, ताते सुख होय है ॥ ३७ ॥

॥ मध्यलोकमें चारसे अठावन अकृत्रिम जिन चैत्यालय है तिनकी संख्या ॥ छप्पै ॥

पंच मेरुके असी, असी वक्षार विराजे ॥ गज दंतन पै वीस,
तीस कुल पर्वत छाजे ॥ सौ सत्तर वैताढ्य धार, कुरु भूमि दसोत्तर ॥
इक्ष्वाकार पहाडचार, चार मानुषोत्तर पर ॥ नंदिस्वर बावन रुचकमें
चार, चार कुंडल सिखर ॥ इम मध्य लोकमे चारसे ठावन वंदो विघ्न हर॥३८॥

॥ इम मध्य लोकमे चारसे ठावन जिन चैत्यालय हैं सो तिनकी संख्या कहे है ॥

अर्थ—मध्य लोकमें चारसे अठावन अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं सो तिनकी संख्या कहे है ॥
अढाई द्वीपमें पांच मेरूपर्वत है, येकयेक मेरूपै सोला सोला जिनमंदिर है, पाचौंके असीभये, ८०
येकयेक मेरूकोचारचार गजदंत पर्वत है, पाचो मेरूके बीस गजदंतपै बीस जिन मंदिर है, २०
येकयेक मेरूके पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रमे सोला सोला वक्षारपर्वत है, पांचोके ८० पर जिनमंदिरहै, ८०
येकयेक मेरूसंबंधी ६ कुलाचल पर्वत है, पांचौ मेरूके ३० कुलाचलपै तीस जिन मंदिर है, ३०
येकयेक मेरूसंबंधी ३४।३४ वैताढ्यपर्वत है, पांचौमेरूके १७० वैताढ्यपै जिन मंदिर है, १७०
येकयेक मेरूसंबंधी दो उत्तम भोगभूमी है, पांचोके १० भूमि है, उसीमे दहा जंबुचैत्यवृक्ष है, १०
इक्ष्वाकार पर्वतपै ४ मानुषोत्तर पर्वतपै ४ नंदिश्वर द्वीपमे ५२ है, सब जिनमंदिर साठ है, ६०
रुचिक द्वीपमें रुचिक पर्वतपै ४ जिनमंदिर अर कुंडल द्वीपमें कुडगिरीपै ४ जिनमंदिर है, ८

इसप्रकारे मध्यलोकमें ४५८ अकृत्रिमजिनमंदिरहै तिनकौं वंदिवेतै विघ्नदूर होय है ॥
१३ वो कुंडल द्वीपके बाह्य असंख्यात द्वीप समुद्रहै परंतु तहां अकृत्रिम जिनचैत्यालय नही है ३८

॥ अठाईस नक्षत्रोंके विमाननके अकृत्रिम जिन चैत्यालयकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

षट पांच तीन येक षट तीन षट चार, दोदो पांच येकयेक चौ षट तिन लहैं ॥
नव चौंचौ तीनतीन पाच येक सौग्यारह, दोय दोय बत्तीस पांचतारे तिनल है ॥
कृत्तीकादी ठाईसकै सब दोसै ईकताल, ईकईकके ग्याराग्यारहसे सरद है ॥
दोयलाख सतसठ हजार नवसे ब्यानु, हैचैताले प्रतिबिंबजीन वानीमें कहे ३९

अर्थ—कृत्तिकादि अठाईस नक्षत्रोके २४१ तारे है, येकयेकमें ११११ तारे है ॥ सबका जोड करिये तब २६७९९२ तारे होहै. इनि सबतारेमें अकृत्रिम जिनचैत्यालय है, ऐसा जिनवानीमे कह्याहै ॥३९॥

अठाईस नक्षत्रोके तारे संख्या					
१	कृत्तिकाके.	६	१५	अनुराधाके	६
२	रोहिणीके	५	१६	जेष्ठाके	३
३	मृगके	३	१७	मूळके	९
४	आरद्राको	१	१८	पूर्वापाढाके	४
५	पुनर्वसूके	६	१९	उत्तरापाढाके	४
६	पुष्यके	३	२०	अभिजितके	३
७	अश्लेषाके	६	२१	श्रवणके	३
८	मघाके	४	२२	धनिष्ठाके	५
९	पूर्वाके.	२	२३	शततारकाके.	१११
१०	उत्तराके	२	२४	पूर्वाभाद्रपदा	२
११	हस्तके.	५	२५	उत्तराभाद्रपदा.	२
१२	चित्राको.	१	२६	रेवतीके	३२
१३	स्वातीको	१	२७	अश्विनीके	५
१४	विशाखा	४	२८	भरणीके	३
अठाईस नक्षत्रोके तारे संख्या.					२४१
येक येकतामेंरें					११११
सब तारेका जोड					२६७९९२ भये

॥ ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग) में अकृत्रिम जिन चैत्याले है, तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

प्रथमवत्तीस, दूजेंअष्ठावीस, तीजेंबारें, चौथेंआठ पांचैं छटैं चौलाख विख्यात है ॥
सातें आठेमें पच्चास, नौमेंदसमें चालीस, ग्यारें बारें छ हजार चारसत सात है ॥
अधों येकसत ग्यारे, मध्यें येकसतसात, ऊरध इक्यानुं नव नऊत्तरें जात है ॥
पंचपंचोत्तरें चवन्यासि लाख सत्यानु हजार तेईस चैत्याले वंदौ अघघात है ॥४०॥

अर्थ—सौधर्म स्वर्गमें ३२ लाख हैं अर ईशान स्वर्गमें २८ लाख अकृत्रिम जिन मंदिर हैं. सनत्कुमार स्वर्गमें १२ लाख हैं अर माहेंद्र स्वर्गमें ८ लाख अकृत्रिम जिन मंदिर हैं. ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर स्वर्गमें ४ लाख है अर लांतव, कापिष्ठ स्वर्गमें पचास हजार जिनमंदिर हैं. शुक्र, महाशुक्र स्वर्गमें ४० हजार हैं अर शतार, सहश्रार स्वर्गमें ६ हजार जिनमंदिर है. आनत, प्राणत, आरण, अच्युत. इन चार स्वर्गमें ७०० अकृत्रिम जिन मंदिर है. अधो ग्रैवेयकमै १११ हैं. मध्य ग्रैवेयकमें १०७ है. ऊर्ध्व ग्रैवेयकमें ९१ जिन मंदिर हैं. नव अनुदिशि विमाननमें ९ चैत्याले हैं ॥ पांच पंचोतर विमाननमें ५ जिन मंदिर हैं ऊर्ध्व लोकके सव चैत्यालयका जोड करिये तव ८४९७०२३ चौरासी लाख, सत्यानं हजार, तेईस. अकृत्रिम जिन चैत्यालय होय है. तिनकौ वंदिवेतै पापका क्षय होय है ॥ ४० ॥

॥ तीन लोक (पाताल, मध्य, स्वर्ग,) मेंके अकृत्रिम जिन चैत्यालयकी संख्या ॥ सवया २३ सा ॥

सात किरोड, बहत्तर लाख पताल विषैं जिनमंदीर जानो ॥ मध्यहि लोकमें चारसे

ठावन, व्यंतर जोतीकके आधिकानो ॥ लाखचोरासि, हजार सत्तानवै, तेईस ऊरध
लोक वखानो ॥ ईकीकमें प्रतिमा शतआठ, नमै तिहुजोग त्रिकाल शहानो ॥४१॥

अर्थ–चित्रा पृथ्वीके तले भवन वासी देव दस प्रकारके है, तिनकै भवनमें सात कोटि, बहतर लाख अकृत्रिम जिनचैत्याले हैं. सो सब वर्णन २७ कवित्तमें कह्या हैं, तहांतै देखना ॥ मध्य लोकमें जंबुद्वीपसें रुचक कुंडलगिरी तेरमा द्वीप पर्यंत ४५८ अकृत्रिम जिनमंदिर है, रुचक गिरिकुंडल गिरीके आगै असंख्यात द्वीप समुद्र हैं परंतु उसीमें जिनचैत्याले नही है. अर व्यंतर देवके जिनचैत्यालयनितै जोतिषी देवके अकृत्रिम जिन चैत्याले असंख्यातगुणा है ॥ सौधर्म स्वर्गतै लेय सर्वार्थसिद्धीपर्यंत अकृत्रिम जिनचैत्याले ८४९७०२३ है ॥ इन सब येकयेक अकृत्रिम जिनचैत्यालयनिमें, येकसो आठ, येकसो आठ, अकृत्रिम जिन प्रतिमाजी पद्मासन पंचरत्नमयी है, पांचसै पांचसै धनुषकी उंची, शाश्वत विराजमान है. इन सब जिन प्रतिमाजीकौ मन वचन काया शुद्धकरिकै त्रिकाल नमस्कार करूं हूं ॥ ४१ ॥

मानस्तंभऊपर अर समव सरणमें गंधकुटीपर अर अकृत्रिम चैत्यालयमे जिन प्रतिमा पद्मासन रहै, कायोत्सर्ग नही रहै है.

॥ तीन लोकमें अकृत्रिम चैत्याले है तिनमेके जिन प्रतिमाजीकी संख्यारूप स्तुती ॥ छपै ॥

वंदौ आठ किरोड, लाख छप्पन सत्यानौ ॥ सहस, चारसें, असीयेक, जि
न मंदिर जानौ ॥ नवसै पचीस कोटि, लाख त्रेपन, सत्ताइस ॥ वंदौ

प्रतिमा सवै सहस नौसै अठतालिस ॥ व्यंतर जोतिक आगनित सकल
चैत्याले प्रतिमा नमौं ॥ आनंदकार दुखहार सब फेरनही भववन भमौं ॥४२॥

अर्थ– तीन लोकमें अकृत्रिम जिनचैत्याले आठकोट, छप्पन लाख, सत्यानवै हजार, चारसेइक्यासी हैं ॥ येकयेक मंदिरमें येकसो आठ, येकसो आठ, जिन प्रतिमाजी है. सवका जोड करिये तव ९२५५३२७९४८ नवसे पचीस कोटि, त्रेपन लाख, सताईस हजार, नवसै, अठचालीस. जिन प्रतिमा अकृत्रिम हैं । तिनको नमस्कार करूहूं ॥ व्यंतर देव अष्ट प्रकारके (किंनर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच,) हैं इनके भवनमें असंख्यात अकृत्रिम जिन चैत्याले हैं. अर जोतिषी देव पांच प्रकारके (चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा,) है, इनके विमाननमें असंख्यात अकृत्रिम जिन चैत्याले है तिनमेंके असंख्यात जिन प्रतिमाकों बंदो हो ॥ कैसी है जिन प्रतिमाजी आनंदकी करनहारी है, अर सब दुःखका नाश करने वाली हैं, इनकों वंदिवेतै संसार वनमें भ्रमण होयनाहि ॥ ४२ ॥

टीप–तीन लोकमें अकृत्रिम जिन चैत्याले है इनकी पूजा करनेकी होयतो, जिन मंदिरमें वैठके अव्हाननकर पूजन करना. पृथ्वीकी वा सूर्यादि ग्रहकी पूजाकरना सो मिथ्यात्व है.

॥ तीन लोकमें ११२ पटल हैं तिनका कथन ॥ छप्पै ॥

येक तीन पन सात और नव ग्यार तेर जिय ॥ इकतीस सातसु चार दोय
इक इक तीन तिय ॥ तीन तीन अरु तीन एक इक पटल बताये ॥ इक सौ

बारै सरब वीस थानकके गाये ॥ सब सात नरक आठौ जुगल त्रयग्रीवक
द्वय उत्तरे ॥ उन चास नरक, त्रेसट सुरग धन दोन्यौ समकित भरे ॥ ४३ ॥

अर्थ–सातमे नरकमें १ पटलहे, छट्टेमें ३ पटल हैं, पांचमेनरकमें ५ पटल हैं, चौथमें ७ पटल है, तीसरेनरकमें ९ पटल हैं, दूसरेमें ११ पटल हैं, पहलेनरकमें १३ पटल हैं, ऐसे सात नरकमें ४९ पटल हैं ॥ सौधर्मस्वर्ग, ईशानस्वर्ग, इनदोस्वर्गमें ३१ पटल हैं. सनत्कुमार, माहेंद्र, ये दो स्वर्गमें ७पटल हैं. ब्रह्म, ब्रह्मोत्त, इनदोय स्वर्गमे ४ पटल हैं. लांतव, कापिष्ठ, ये दोयस्वर्गमें २ पटल हैं शुक्र महाशुक्र, ये दो स्वर्गमें १ पटल हैं. शतार, सहस्रार, ये दो स्वर्गमें १ पटल है. आनत, प्राणत, ये दो स्वर्गमें ३ पटल है. आरण, अच्युत, ये दो स्वर्गमें ३ पटल हैं ॥ तीन ग्रैवेयक (अधो३ मध्य३ उर्ध३) में ९ पटल हैं. नवअनुदिश विमानमें १ पटल है. पांच अनुत्तर विमान में १ पटल है. ऐसें ६३ पटल सोला स्वर्गके अर ४९ पटल सातनर्कके सब मिलके ११२ पटलहैं. इन वीस स्थानमें जो सम्यक्ती जीव है सो धन्य है ॥ ४३ ॥

टिप–७ नरकके, ८ युगल स्वर्गके, ३ ग्रैवेयकके, १ अनुदिशका १ कनुत्तरका ये वीस स्थातकके

॥ आधोलोक (पाताल लोक) में श्रेणीबद्ध विले है तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

सातनर्क भूमि ऊनचास पाथडे नीवास इंद्रकभि ऊनचास बीचमाहि बीले है ॥
पहलेसीमंतक चारिदीसा सेनि ऊनचास चारि वीदिशामें आठतालीस बीले हैं ॥

आठदीशा श्रेणिबद्ध तीनसे आव्यासिभये आगैघटै आठआठ अंतिचार मीले हे॥
सब छ्यानवैसे चारि जोजन असंख्यधारि दयाधर्मकरै तीन्हे नर्कदुःख टलेहै॥४४॥

अर्थ–सातनरकमें ४९ पाथडे हैं, तिसयेकयेकपाथडेमें येक येक बिला (इंद्रक) है, ते आधे कूवेके आकार गोल है ॥ प्रथमनरकमें १३ पाथडे हैं, तिनमें पहलो सीमंतक नामा इंद्रक पैतालीस लाख योजनका चौडा हैं. इनके चारो दिशामें श्रेणीबद्ध बीले ४९।४९ हैं, चारो दिशाके १९६ बिले अर विशामें ४८।४८ है ॥ ये १९२ ऐसे ३८८ है, ऐसा येक पटल का वर्णन कह्या.आगै४८ पटल रहै, उसी येक येक पटलमें आठ आठ घटाइये तब अंतके सातवे नरकमें १ अवस्थान नामा इंद्रक १लाखयोजन है, ताके चार दिशाको ४ बिले है तहां विदिशामें बिले नाहीं ॥४९ पटलके सब बिले ९६०४ है. नरकमें अनंत दुःखहै, जेजीव चित्तमें दया भाव राखे ते इस दुःख से बचे है ॥ ४४ ॥

बीचके इंद्रक बिले संख्यात जोजनके है अर गोल है, दिशा विदिशाके बिले असंख्यात जोजनके है अर चौकोर है

॥ ऊर्ध्व लोक (स्वर्ग) में श्रेणी बद्ध विमान है, तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

ऊरध तीरेसठ पटल कहे आगममें त्रेसठहि इंद्रक विमान बीचि जानीये ॥
पहलो जुगल ताके पहलेहे ऋजुनाम जाकेचारि दीसाश्रेणि बासठ प्रवानीये ॥
चारो दोसै आठताल आगे घटै चार चार अंत रहे चार, उंचे चार ठीकठानीये ॥
श्रेणीबद्ध ठंतरसे सोले, जोजन असंख्य, सिद्धबारे जोजनपै ध्यानमांहिआनीये ४५

अर्थ–ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग) में ६३ पटल है, तिस येक येक पटलके बीचि एक एक इंद्रक विमान है ॥ प्रथम जुगल (सौधर्म ईशान) में ३१ पटल है, तिनमे पहले पटलको नाम ऋजु विमान है, इनके येक येक दिशाकौ ६२।६२ श्रेणी वद्ध विमान है ॥ चारु दिशाके २४८ पटलभये, ऐसा एक इंद्रकका वर्णन कह्या. इनके ऊपर ६२ पटल हैं, तिनमें एक एक पटल में चार चार घटाये (येक येक दिशामे येक येक) तब अंतका जो सर्वार्थ सिद्धिनामा पटल है, ताकौ श्रेणी वद्ध विमान चार रहै, अर बासटवो आदित्यनामा पटलको ही चार हैं ॥ त्रेसठ इंद्रकके सब श्रेणीवद्ध विमान ७८१६ हैं. ते असंख्यात जोजनके लंबे, चौरे, चौकोर है. अंतके सर्वार्थ सिद्धी पटलतै १२ योजन उंचेपर अनंते सिद्ध परमेष्टी है, तिनकौ ध्यान (स्मरण) करीये ॥४५॥

॥ ऊर्ध्व लोकमें ६३ इंद्रक विमान है, ते ऊपर ऊपर है, सो कथन ॥ सवैया ३१ सा ॥

पैतालीस लाखको है इंद्रक ऋजु विमान, सर्वारथ सिद्धि अंतकौ एकका कहा ॥
चवालीस घटेहै तेसठमे, बासठठोर उंचे उंचे एक एक केता घटती लहा ॥
सत्तर हजार नौसे सतसठियोजनहै तेईस अधीकं भाग ईकतीसका गहा ॥
त्रेसठ इंद्रकनाम त्रेसठ हि जीनधाम वंदौमन वच काय तीनकि सोभा महा ॥४६॥

अर्थ–सौधर्म स्वर्गकी सभा (ऋजु विमान) पैतालीस लाख योजनकाचौडा है, अढाई द्वीप बराबरका है. अर अंतका त्रेसठमा सर्वार्थसिद्धी विमान एक लाखयोजनका है, जंबूद्वीप बराबर है ॥ त्रेसठवे इंद्रक विमानतक चवालीस लाख घटे तब एकलाख योजनका चौडा रह्या, ॥ अर

ऋजु विमान विना बासठपटल में एक एक ठोर कितना कितना घट्या? चवालीस लाख बास ठ ठौर घठाना वा बासठका भागदेना ॥ ७०९६७ २३/३१; सत्तर हजार नौसे सडसठ योजन अर एक योजनके ३१ भागकीजे उसमे २३ भागलेना, इतना येक येक पटलमें घटा है ॥ ऐसा त्रेसठ इंद्रक विमानमें शाश्वते अकृत्रिम जिन मंदिर ६३ है, तिननें मन वचन कायसे वंदोहूं. तिनकी शोभा महा रमणीक है ॥ ४६ ॥

॥ सौधर्म इंद्रकी सेना सात प्रकारकी है, तिनकी गिणती कहै है ॥ सवैया ३१ सा ॥

इंद्रसेना सात. हाथि, घोरे, रथ, प्यादे, बैल, गंधरव, नृत्ति, सातसात परकारहै ॥
आदि चौरासी हजार, आगै षट दूनेदूने एककोटि छलाख अडसठ हजारहै ॥
येतेगज तेते तेते छहभेद सबके ते, सातकोट छीयालीसलाख नीरधारहै ॥
सहस छिहत्तरहैं और एकअवतार न्योंगपुन्य कर्मभोगि, मोक्षको सीधारेहै ॥४७॥

अर्थ—सौधर्म स्वर्गके इंद्रकीसेना सात प्रकार (१ हाथी १ घोरे १ रथ १ प्यादे १ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी) है, इन येक येक सैनामें सात सात प्रकार है ॥ पहली सेना में हाथी चौरासी ८४०००हजार है, आगै छह प्रकारके सेनामे हाथी दूनेदूने है. छह प्रकारके सेनामेके सब हाथी १०६६८०००एककोटि, छहलाख, अडसट हजार है इतनेही घोरे है. इतनेही रथ, प्यादे, बैल, गंधर्व नृत्यकी है, ॥ सौता प्रकारके सब सैन्याका जोड ७४६७६००० सातकोटि, छियालीस लाख,

छिहतर हजार है, पुन्ययोगसे ऐसा वैभव मिले है, सौधर्मइंद्र ऐसा सौख्य भोगिके फेर कर्म भूमीमें मनुष्य होय, मुनी दिक्षा ग्रहणकरके ८ कर्मका नाशकर मोक्षको प्राप्त होगा. सोधर्म इंद्र येक भव अवतारी हैं ॥ ४७ ॥

॥ देव देवी संजोग, देव लोक प्रविचार कथन ॥ कवित्त ॥

दोय सुरगमें कायभोगहे, दोय सुरगमें फरस निहार॥ चार सुरगमें रूप निहारे, चार सुरगमें शबद विचार ॥ चार सुरगमें मनको विकलप, आगे सहज सील निरधार ॥ अहमिंद्र सब महा सुखीहे वंदो सिद्धसुखी अविकार ॥ ४८ ॥ ॥

अर्थ– भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी, अर सौधर्म स्वर्ग, ईशान स्वर्ग, इहांके देव देवांगनाको जब भोगकी वांछा उपजै है, तब स्त्री मनुष्यके समान कायासौ भोग करै है, तातै याका नाम काय प्रविचार कहा. इनते ऊपर ३ सनत्कुमार ४ माहेंद्र, इन दोय स्वर्गमेंके देव देवांगना कौ स्पर्शते भोगकी वांछा तृप्त होय है ॥ इनते ऊपर ५ ब्रह्म, ६ ब्रह्मोत्तर, ७ लांतव, ८ कापिष्ट, इन चार स्वर्गमें देव देवीकौ कामरूप दृष्टी देखीकरी भोगकी वांछा मिटिजाय है. इनतै ऊपर शुक्र ९ महाशुक्र, १० शतार ११ सहस्रार १२ इन चार स्वर्गमें काम रूप शब्द बोलिके भोगकी वांछा मिटै है ॥ इनतै ऊपर आनत १३ प्राणत १४ आरण १५ अच्युत १६ इनचार स्वर्गमेके देव देवीको कामकी इच्छाहोय जब मनमें कामरूप कल्पना करै तब भोगकी वांछा मिटै है.

पूरी होजाय है. इन १६ स्वर्गके ऊपरके, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच अनुत्तर, इन देवताकौ देवांगना है ही नाही, तातै ये देवता सहज शीलवंत (ब्रह्मचारी) हैअर अहमिंद्र है, इनमें पारिषादिक (सेवकादि) दश प्रकारके भेद नही है. अहमिंद्र आपना काल (३३ सागर केआयु) धर्मध्यानमे व्यतीत करैहै, येक जीवद्रव्यकी चर्चाकरै है, येसुखी है. इनके ऊपर सिद्ध परमेष्टी हैं ते महासुखी है, अविकारी है. तिनकौ मे वंदौ हूं ॥ ४८ ॥

देवांगना उपजनेकी उसाद शय्या पहले अर दूसरे स्वर्गमें ही हैं, ऊपरले स्वर्गमें नही है. १ सौधर्म अर २ ईशान स्वर्गके उपरके सोला स्वर्ग पर्यंतके देवता तिहां आय अपने अपने नियोगकी देवीकौ लेजाय है. पांचमे ब्रह्मस्वर्गके अंतकौ लौकांतिक देव वसै हैं, तेही ब्रह्मचारी हैं.

॥ सात नरकका, सोलास्वर्गका आवक जावक कथन ॥ ३१ सा ॥

सातते नीकलेपशु छट्टेनर व्रतनाहि, पांचेमहाव्रत, चौथेसेति मोक्षसार है ॥
तीजेदूजे पहिलेते आयजीनराय होय, भवनत्रक सुर्गदोय येकेंद्रिधारहे ॥
द्वादशम स्वर्गताई पंचेद्रि पशुहोय, ऊपरको आयोयेक नरकौ औतारहे ॥
दक्षीणेंद्र सौधर्मराणि, लोकपाल, लौकांतीक, सर्वार्थसिद्धि मोक्षलहे नमस्कारहे ४९

अर्थ—सातवे नरकते मरिकरी निकसिकै जीव महाक्रूर पंचेंद्री पशू होय, मनुष्य नही होय. छट्टा नरकते निकस्योजीव मनुष्य होसकै परंतु महाव्रत ग्रहण करिसकै नाही. पांचमे नरकका निकस्या

मनुष्यहोयके महाव्रत धारण करिसकै परंतु कर्मक्षयकरी मोक्षनजाय यह नियम है. चोथे नरकका निकसो जीव मनुष्यहोसकै, महाव्रत धरिकै कर्मक्षयकरी मोक्षजाय परंतु अचिंत्य विभूतीका धारक तीर्थंकर पद प्राप्त नही होय ॥ तीसरे, दुसरे, पहले, इनतीन नरकका निकस्या जीव तीर्थंकरदेव, होयसकै यामै कोइं बाधा नाही. नरकका निकस्यास्वर्गमे नजाय अर स्वर्गका नरकमें न उपजै यह नियम है ॥ स्त्री मरिकरी छट्टे नरकतक जासकै, सातवे नरकमें स्त्री जाय नही, यहनेम है. भवनवासीदेव, व्यंतरदेव, ज्योतिषीदेव, सौधर्मस्वर्गके अर ईशान स्वर्गकेदेव, इन पांचो ठेरका मरि करी येकेंद्री होसके परंतु अग्निकाय वायुकाय न होय; पृथ्वीकाय जलकाय बनस्पतीकायहोय, सोभीसूक्ष्मनहोय बादर (बडा) होय ॥ तीसरे सनत्कुमार स्वर्गसे बारमा सहस्रार स्वर्ग पर्यंतका देव मरिकरी एकेंद्रीनहोय पंचेंद्री पशू होसकै. अर बारमा स्वर्गते ऊपरके च्यार स्वर्गका, अर नवग्रैवेयक नव अनुदिश, पंच अनुत्तर इहांका आया जीव मनुष्य ही होय और दुसरे गतीमें न उपजे ॥ स्वर्गके आठ युगल है, तिनमे बारा इंद्र है. छह इंद्र दक्षिणके, छह इंद्र उत्तरके, उसीमे दक्षिणके छह इंद्र अर सौधर्म इंद्रकी इंद्राणी जो तीर्थंकरको जन्मसमय प्रसूत ग्रहमेसूं ल्याय इंद्रकौसौंपे सो सची, सौधर्म स्वर्गके चारो लोक पाल (१ सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर) पाचमे स्वर्गके अंतके लोकांतिकदेव, अर सर्वार्थ सिद्धी विमानके सब अहमिंद्र, इह पांच ठिकानेके येक भव अवतारी है. तातै इन सबनिकौ मोक्षरूप मेरा नमस्कार है ॥ ४९ ॥

॥ इति लोक स्वरूप वर्णन समाप्त ॥ ३ ॥

॥ अथ कर्मप्रकृती भेदवर्णन प्रारंभ ॥ ४ ॥

॥ श्री नेमिनाथ बावीसमा तीर्थंकर जीकी स्तुती ॥ छंद छप्पै ॥

वंदौंनेमि जिनंद चंद सबकौं सुख दाई ॥ बल नारायण बंदि, मुगुट मणि सोभा पाई ॥ व्यंतर इंद्र बत्तीस भुवनचालीसू आवै ॥ रवि शशि चक्री सिंह स्वर्ग चोबीसौं ध्यावै ॥ सब देवनिके सिरदेव जिन सु गुरुनिके गुरु रायहौं ॥ हूज्यौं दयाल मम हालपैं गुण अनंत समुदायहौं ॥ ५० ॥

अर्थ—श्रीनेमिनाथ तीर्थंकरकौं भाव सहित वंदौं हौं. कैसे है नेमिनाथ स्वामी ! सरदकालके चंद्रमा समान निर्मल है आज्ञा जिनकी, बहुरि कैसे है नेमिनाथजी ! तीन लोकके सब प्राणी निकौं महा सुखदाई है, ॥ बल कहिये पद्मनामा बलिभद्र अथवा नववा बलदेव, नारायण कहिये कृष्ण त्रिखंडी वा नववा नारायण, ये नेमिनाथजी के चरण कमलनिकौं वंदै है, नेमनाथके चरण कमलनिके किरणनके स्पर्श तें तिस बलभद्र नारायणौंके मुकटमाहि लगे है रतन तिन रतनौंकी अधिक शोभा भई ॥ व्यंतर जातीके देव आठ प्रकार हैं. तहां एक एक जातीमें दोय दोय इंद्र अर दोय दोय प्रतींद्र हैं. सब मिलिके व्यंतर वासी देवमें बत्तीस इंद्र हैं. भवन वासी देव दश प्रकार हैं. येक येक जातीमें दोय दोय इंद्र अर दोय दोय प्रतींद्र हैं; सब मिलिके भवन वासी देवमें चालीस इंद्र हैं ॥ ज्योतिषी देव पांच प्रकारके है, परंतु तिन विषैं इंद्र दोय हैं, रवी कहिये सूर्य प्रतींद्र है अर शशि कहिये चंद्र इंद्र है, मनुष्यानिकौं इंद्र चक्रवर्ति है, छह खंडको धनी,

नवनिधी चवदा रत्नका स्वामी है, तिरचंजका इंद्र सिंह है, सोला स्वर्गमें *चौवीस इंद्र है, सब मिलि के शतइंद्र भये. सो सब १०० इंद्र तीर्थंकरको ध्यावे हैं ॥ सब देवमें श्रेष्टदेव वीतराग है, और दूजा देव नाहि. सब सुगुरूकें गुरु श्रीवीतराग गुरू हैं ॥ हे वीतराग देव! दयाल हूजे, कृपाकीजे, मोकौं संसारतें छुडायके मोक्षपद दीजे, कैसेहो तुम, अनंत गुणोंके समुदाय हो ॥ ५० ॥

* पहिले दुसरेमें २ इंद्र २ मतींद्र, तीजे चौथेमें २ इंद्र २ मतींद्र, पांवा छटामें १ इंद्र १ मतींद्र, सातवा अटवामें १ इंद्र १ मतींद्र, ९।१०।११।१२ में २ इंद्र २ मतींद्र, १३।१४।१५।१६ में ४ इंद्र ४ मतींद्र. ऐसें २४ इंद्र सोला स्वर्गमें है.

॥ श्रीनेमिनाथजीकी स्तुति ॥ छपै ॥

इंद फणिंद नरिंद पूजि, नमि भगति बढावै ॥ बल नारायण वंदि मुकट मणि सोभा पावैं ॥ विनजाने जगवन भमे, जानि छिन सुर्ग वसावै॥ ध्यान आन रिधिवान, अमर पद आप कहावै ॥ सब देवनिके सिरदेव जिन, सुगुरुनिके गुरु रायहो ॥ हूज्यों दयाल मम हालपे, गुण अनंत समुदाय हो ॥ ५१ ॥

अर्थ—इंद्र कहिये स्वर्ग वासीकाइंद्र. फणिंद्र कहिये भवन वासीकाइंद्र. नरेंद्र कहिये चक्रवर्ती, श्रीनेमिनाथ तीर्थंकरकी भक्तिसेतीं पूजाकरैं, नमस्कारकरैं हैं, स्तोत्र पढिके, गुणानुवाद गायके अत्यंत भक्तिबढावैं है ॥ बळरामके अर कृष्णके मुकट जिनके चरण कमल वंदि वेते अधिक शोभा पावै हैं ॥ वीतरागदेवके चरण कमलनकी महिमाकों विनांजाने विना सुमरे, यहजीव संसार वनमें अनंत काल भ्रमण करै है, महा घोरदुःख सहै है, तेदुःख वचन गोचर नाहि, केवली गम्य है.

अर जेजीव श्रीवीतराग देवकी महिमा जाने हैं, भक्तिबढावै हैं, ते जीवकौ; वो भक्ति क्षणेक मांहि स्वर्गमें ले जाय सही ॥ और जे जीव श्रीअर्हंत देवको ध्यावैं, भाव सहित स्मरें, सो जीव संसारीक सुख (ऋद्धि सिद्धि इंद्र चक्रवर्ति इनके पद) भोगिके पीछे मोक्षपावे हैं ता मोक्षमें अतींद्रिय सुख हैं, फेर संसार विषे आवे नांहीं. तातें अमर कहीये ॥ सब देवमें श्रेष्ठ श्रीवीतराग देव है. अर अन्य सब इंद्रादिदेव विषय कषाय करी मोहित हैं, पराधीन हैं कर्माधीनहैं, ते देव नाहीं; एक जिन वीतराग देव आहारादि अठारा दोष रहित छीयालीस गुण सहित हैं, इनमें दोषकी रंचमात्रभी निशाणी नाहीं; सब सुगुरूके वीतरागदेव गुरू हैं ॥ हे वीतराग देव दयाल हूजे कृपा कीजे, मोकों संसारतें छुडायके मोक्षपद दीजे. कैसे हो तुम, अनंत गुणोंके समुदाय हों, पूज्य हों, अनंत गुण तुममें साक्षात प्राप्त भये हैं ॥ ५१ ॥

॥ मिथ्यात्वी मुक्त नहोय, सम्यक्त्वी मुक्त होय सो कथन ॥ ३१ सा ॥

एक समै माहि एक समै परबद्धबंधै, एक समै एकसमै परबद्ध झरैहे ॥ वर्गना
जघन्यमें अभव्यसो अनंतगूणि, उतकीष्ट सिद्धकों अनंत भाग धरैहे ॥ जैसे
एक गास खाय सातधात होय जाय, तैसे एक सातकर्म रूप अनुसरे हे ॥ यौन
लहे मोक्षकोई ज्याके ऊरग्यान होई, एक समै बहु खोई, सोई सीव वरैहे ॥५२॥

अर्थ—जबताईमिथ्यात परिणाम वर्ते तबताई कर्मनीते आत्मा नछूटै, अर जब सम्यक् परिणाम वर्ते तब आत्मा कर्मते छूटै मुक्त होय है, सो कहे है. किसीयेक मिथ्यादृष्टी जीवने मिथ्यात्वप-

रिणामके बलकरी येकसमयमें अनंत कर्म वर्गना ग्रहणकरी (बांधी) वो वर्गना दूसरे समयमें आधीखिरी (क्षपी) इस भांति द्व्यर्धगुणकरी समय समयमें अनंत बांधी अर समयसमयमें झरे थोडी ॥ जैसे कोई पुरुष सचिक्कण अन्नका एक ग्रासखाय जब पचै तब सोई ग्रास सात धात(हाड- चाम- मांस- नाडी- मज्जा- शुक्र- शोणित-) रूप होय, तैसें मिथ्यात परिणाम करके बांधी अनंत वर्गणासो आयुकर्म विना सात कर्मरूप समान अंश परनवैहे ॥ समय समयमें बांधे घनी अर झरै थौडी, याहीतै जीव मोक्ष पावता नाही, क्यों! टोटा वहुत अर नफा थोडा- जिस जीवकै हृदयमें भेद विज्ञान होय, सो जीव सम्यक् ज्ञानके बलकरिकै समय समयमें कर्म बांधे थोडा अर तिसतै अनंत गुणा क्षपावै- अथवा भेदविज्ञानी (सम्यक्दृष्टी) आत्मा भेदज्ञानके बल करिकै अनंत भवके बांधे कर्म येक समयमें क्षपावै, सोही सम्यक्दृष्टी जीव मोक्ष वरैहे ॥ ५२ ॥

अभव्य जीव, जघन्य युक्तानंत प्रणाम हैं तिनतै अनंत गुणीहै- अर उत्कृष्ट करिकै सिद्धनिकै अनंतवै भागहै, अनंतके अनंत भेदहै- समय समयवांधै सो समय प्रवद्ध कहीये!

॥ आठ कर्मके ८ दृष्टांत कहैहै ॥ सवैया ३१ ॥

दैवपै पर्‍योहै पट रूपकोन ज्ञान होय, जैसै दरवान भूप देखनौ निवारेहै ॥ सहत लपेटि असिधारा सूख दूखकारा, मदीरा ज्यो जीवनीकौ मोहनि विथारेहै ॥ काठमै दीयोहै पाव करै थीतिको सुभाव, चित्रकार नानानाम चित्रको समारेहै ॥ चक्रीउंचनीचकरै, भूपदीयो मना करै, येहि आठकर्महरै सोहि हमैतारैहै ॥ ५३ ॥

अर्थ—१ देव पर वस्त्र डारिये तव देव दिखाई नदे, तैसें ज्ञानावर्णीकर्म आत्माका ज्ञानगुण रोकेहै.
१ दरवाजाका चोपदार राजाका दर्शन होने नदे, तैसै दर्शनावर्णी कर्म आत्माको दर्शन न होनेदे॥
१ सहत लपेटिके खांडा जीभ परिधरीये तव मिष्टलागे जीभकटे तैसे वेदनी कर्म सुख दुखदेवे.
१ जैसे मदिरा पीयेते बावला होजाय, तैसें मोहिनी कर्म आत्माकौ गहिला बनावे है॥
१ चोरके पावमे वेडी डालनेसे कही नजायसके, तैसें आयुकर्म भव भवमे स्थीरकरैहे ॥
१ चित्रकार चित्रकौ नानाप्रकारे नामधरे, तैसे नामकर्म येकेंद्रियादि नाम धरावे है ॥
१ कुंभकार छोटे वडे बासन वनावे. तैसे गोत्रकर्म नीच उंच कूलमे उपजावे हे ॥
१ राजादे अर भंडारि मनाकरै तैसें, अंतराय कर्म मतलबसाध्य न होनेदे, लाभ न होनेदे ॥
ऐसे आठ कर्मकौ जिसने नाशकियाहै, सोही आत्मा हमकौ तारक(मोक्षमार्ग दिखानेवालाहै)॥५३॥

॥ आठ कर्मके १४८ भेद कहेहै ॥ छप्पै ॥

ज्ञानावरणकि पांच, दरशनावरणी नौविधि ॥ दोय वेदनी जानि, मोहनी
आठाविस मिलि ॥ आयुच्यार परकार, नामकि प्रकृती तिरानौ ॥ तथा
येकसो तीन, गोत्र दोयभेद प्रवानौ ॥ कही अंतरायकी पांच, सव सो अठता
ल जानिये ॥ इम आठ करम अठतालसौ, भिन्नरूप निजमानिये ॥ ५४ ॥

अर्थ—ज्ञानआवरणीय कर्मके ५ भेदहै. दर्शन आवरणीय कर्मके ९ भेदहै ॥ वेदनीय कर्मके २ भेद है. मोहनीय कर्मके २८ भेदहै ॥ आयुकर्मके ४ प्रकारहे. नामकर्मकी ९३ प्रकृती है,

गोत्रकर्मके २ भेदहै, अंतराय कर्मके ५ प्रकारहै. सबमिलि १४८ जानना. आठ कर्ममें दोय भेद है, चार घातिया कर्म है, चार अघातिया कर्महै. चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृतिहै, अर चार अघातिया कर्मकी १०१ प्रकृतिहै. ऐसी १४८ प्रकृतिहै, आठकर्मसे भिन्न आत्माकारूप जानना ५४

॥ चार घातिया कर्मोंके ४७ भेद कहेहैं ॥ सवैया ३१ ॥

मति, श्रूति, औधि, मनपरजै, केवल ज्ञान, पांच आवरण ज्ञानावर्णि पंचभेद है ॥
चक्षु, औ अचक्षु, औधि, केवल, दरस चार, आवरण चार. निद्रा निद्रानिद्रा खेदहै ॥
प्रचला प्रचला प्रचला थान गृद्ध नौ भेद, दरसनवर्णी. मोह अठाईस भेदहै ॥
दान, लाभ, भोग, उपभोग, बल, अंतराय पांच. सब सैतालिस घातिया निषेधहै ५५

अर्थ—५ ज्ञानावर्णि ९ दर्शनावर्णि २८ मोहनीय ५ अंतराय ऐसे घातिया कर्मकी ४७ प्रकृति है.
१ मतिज्ञान आवर्ण कर्म, आत्माकौ मतिज्ञान न होनेदे १ श्रुतज्ञान आवर्ण श्रुतज्ञान न होनेदे.
१ अवधिज्ञान आवर्ण, अवधिज्ञान न होनेदे. १ मनपर्ययज्ञान आवर्णसे, मनःपर्यय ज्ञान नहोय.
१ केवलज्ञान आवर्ण कर्म, केवल ज्ञान न होनदे. ज्ञानके ये पांच आवर्ण (पडदे) कर्महै॥
१ दर्शन आवर्ण कर्मसे नेत्रशक्ती खुले नाही १ अचक्षुअवर्णसे चार इंद्रियके विषय रोके है ॥
१ अवधिदर्शनावर्णि कर्म अवधि दर्शन रोकेहै. १ केवल दर्शनावर्णि केवल दर्शन न होनेदे.
१ खेद(अळस) दूर करनेकूं सोवना वो निद्राकर्महै १ जागिके फेर सोवना वो निद्रानिद्रा कर्महे.

१ निद्रामें मुखतैं लाळ गळे वो प्रचला निद्राहै १ चालतेही निद्रा आवे वो प्रचला प्रचला निद्राहै.
१ निद्रामें अशक्त होय, निद्रामेही आप कार्य करै अर निद्रा दूर भये कार्यकी यादि (स्मरण) न रहै, भूल जावे वो स्थान गृद्धी निद्राहै. ये दर्शन आवर्ण कर्मकी ९ प्रकृति (स्वभाव) है.
१ देनेकी इच्छाहै परंतु दीया जाता नाही, वो दानांतराय कर्महै.
१ वहोत उद्यम करतेभी लाभ न होय वो लाभांतराय कर्महै.
१ षटरस व्यंजनादि प्राप्त होतेभी सेवन करने नदे वो भोगांतराय कर्महै.
१ बलवृद्धीके पदार्थ खातेभी शक्ती न बढें, रोगी रहवोकरै वो वीर्यांतरायकर्महै.
१ स्त्रीअलंकारादि होतेभी भोगीन जाय सो उपभोगांतराय कर्महै.
ये ५ प्रकृती अंतरायकर्मकी है, सब मिलीके चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृति होहै. ये चार कर्म आत्माके गुणकौ सर्वथा घाते है, तातै इनिकौ घातिया कर्म कहीये. इनिका नाश करनेते आत्माकौ केवल ज्ञान प्राप्त होय है, अनंत चतुष्टय प्राप्त होय है, तब अर्हंत (भगवान) कहावै है ॥ ५५ ॥

॥ मोहनी कर्मके २८ भेद कहे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

मिथ्यात, समै मिथ्यात, समै प्रकृती मिथ्यात, तीनौ दरसन मोह. दर्शनकौ
चोभ है ॥ अनंतानुबंधि, औ अप्रत्याख्यानि, प्रत्याख्यानि संज्वलन, चारौ.
क्रोध, मान, माया लोभ है ॥ हास्य रति, अरति, शोक, भय जुगुप्सा,
नारि नर षंड, ये पचीस चारीत को छोभे है ॥ अठाईस मोहनि जीव

नीकौ मोहत है, नाशै यथाख्यात संजम क्षायककौ शोभे है ॥ ५६ ॥

अर्थ–दर्शन मोहनीयकी ३ प्रकृती अर चारित्र मोहनिकी २५ प्रकृति मिलि तब २८ होय है. १ झूटमें सांच मानना अर दूसरेको झूटा उपदेश दे बहकाना, सो मिथ्यात्व दर्शन मोहनी कर्म है. १ झूट अर साच दोनू येकरूप (मिश्र) मानना सो, सम्यक्त्व मिथ्यात्व दर्शन मोहनी कर्म है. अर्हंतदेव, निर्ग्रंथ गुरु, जिनशास्त्र. इन तीनू विना, कुदेव कुगुरु कुधर्मशास्त्रोकी भक्तिनकरै परंतु यह पोथी, जिनमंदिर, प्रतिमा, मेरी है. इहां पूजाकरो. यह मेरी नही है, इहां पूजा दर्शन नकरो. पार्श्वनाथ स्वामीकी ही पूजाकरनेसे संकट दूर होय, अर शांतिनाथ स्वामीकीही पूजा करनेसे विघ्नदूर होजाय शांति होय, और दूसरे तीर्थंकरकी पूजा करनेसे न होय, ऐसा २४ तीर्थंकरोमे भेदरूप परिणाम करना सो, सम्यक्त्व प्रकृती मिथ्यात्व दर्शन मोहनीकर्म है, इस प्रकार परिणाम करने से सम्यक्तकाघात (नाश) हो है. ये ३ प्रकृती दर्शन मोहनीकी है ॥ १६ कषाय ९ नो कषाय ऐसे चारित्रमोहनीय कर्मके २५ भेद है सो कहै है ॥ अनंत संसारकौ बंधनके कारण सो अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, येचार कषाय कर्म है, ते संसारकेनाशक जे सम्यक्त्व दर्शन (स्वस्वरूपाचरण) न होनेदे. अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, येचार कषाय देशसंयम (अनुव्रत) नहोनेदे. प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, महाव्रत संयमके परिणाम नहोनेदे. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ. यथाख्यात संयम (चारित्र) के परिणाम नहोने दे. ऐसें कषाय चारित्र मोहनीके १६ भेद कहे ॥ अब चारित्र मोहनीके नव कषाय कहे है.

१ जाके उदे हास्यकरे सो हास्यकपायकर्म हे १ परको देखी प्रीतिकरे ते रतिकपाय कर्म है.
१ जाके उदै द्वेषरूप परिणाम होय सो अरति कर्म है. १ शोक कर्म, शोक करावे है.
१ भयकर्म उदे आवे, तव भय उपजै है. १ ग्लानिकर्म उदेसे जुगुप्सा (चिळस) उपजे है.
१ पुरुष सेवनके परिणाम सो स्त्रीवेद है १ स्त्रीकी अभिलापाको पुरुप वेद कहीये.
१ स्त्री पुरुप दोन्युरूप परिणाम सो नपुंसक वेद है. इन सवको नो (किंचित) कपाय संज्ञा है.
ऐसें २५ कपाय चारिमोहनीय कर्मके है, ते आत्माको चारित्र अंगिकार न होनेदे है. दर्शन मोहनी की ३ अर चारित्र मोहनीकी २५ ऐसें २८ प्रकृतीके उदेसे सव संसारी जीव मतवालेके नाई मोहित होरहे है. इन मोहनी कर्मको जो नाशकरे ताको, यथाख्यात क्षायक सम्यक्त अर चारित्र प्राप्त होय है, ऐसे गुणोकरी शोभायमान होय हे॥ ५६ ॥

॥ सोला कपायके दृष्टांत अर फल कहे है ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

पाथरकि रेखा, थंभ, पाथरको वासवीडा, क्रमिरंग, सम चारो नर्कमाहिले धरे॥
हल लीक, हाडथंभ, मेषासिंग, गाडीमल, क्रोध मान माया लोभ तीरजंचमे परे ॥
रथ लीक, काठथंभ, गोमूतर, देहमैल, से कपाय भरे जीव मानूषमें औतरे ॥
जलरेखा, वेतदंड, खूरपा, हलदरंग, द्यानत ये चारिभाव सुर्ग सिद्धीको करे॥५७॥

अर्थ—१क्रोध (स्वपरघात) १ मान (विनयका घात) १माया (दगावाज, कपट) १ लोभ (परिग्रहमें अशक्त) ये ४ कपाय हैं, इनमें परीणामके कम जादासे १६ भेद होय है.

१ अनंत अनुवंधीक्रोध, पाषाण उपरके रेखासमान अनंतकाल रहै है.
१ अनंत अनुबंधी मान, पाषाणके खंभ समान अनंतकाल टीके हे नमै नाहि.
१ अनंत अनुबंधी माया-वासबीडासम वा हरणके सिंगसम गूथ रहै, न खुले अनंतकाल रहै है.
१ अनंत अनुबंधीलोभ - कृमी (लाख)के रंग समान पका वैठे कदापिटृसनहोय, अनंतकाल रहै.
ये ४ कषाय सम्यक्त्व (सत्यतत्वाकाश्रद्धान) न होनेदे अर नरक गतीमें वा निगोदमें लेजायहे.
१ अप्रत्याख्यानी क्रोध-हल(नांगर)के लीक समान छह महिनातक रहै है.
१ अप्रत्याख्यानी मान-हाडके थंभसमान है.
१ अप्रत्याख्यानी माया-मींढाके सिंगसमान लढके घस घसके कम होवे है.
१ अप्रत्याख्यानी लोभ-गाडीके धुरा समान है.
ये ४ कषाय सम्यक्तका नाश नकरे परंतु अनुव्रत ग्रहणकरणे नदे, अर तिरजंच गतीमे लेजाय.
१ प्रत्याख्यानीक्रोध-गाडीके चाकके लीक समान है. १ प्रत्याख्यानी माया-गोमूत्ररंगसमान है.
१ प्रत्याख्यानी मान, काठके थंभ समान है. १ प्र० लोभ-शरीरके उपरके मैल धूल समान है.
ये ४ कषाय महाव्रत ग्रहण करने नदे. ये ४ कषाय पंधरादिन रहैहै अर मनुष्यगतीमें लेजाय है.
१ संज्वलन क्रोध- जलके लीकसमान है, १ संज्वल मान- बेतके छडीसमान है, १ संज्वलन माया- खुरपासमान हे, १ संज्वलन लोभ- हलदीके रंगसमान है. द्यानतराय कहै, ये ४ कषाय देवगतीमें लेजाय है, यथाख्यात चारित्रने होनेदे है ॥ ५७ ॥

॥ चार अघातिय कर्मके १०१ भेद है, सो कहे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

साता औ असाता दोय, वेदनि, नरक,पशु,नर, सूर, अउ चार उंच,नीच,गोत है ॥
नामकि, तीरानु, एकसत एक अघातीया. आदितीन,अंतराय थीति तीस होत है ॥
नाम गोत वीस, मोहनि सत्तरि कोडाकोडि दधि, आउकि सागर तेतीस उदोत है ॥
वेदनि चोवीस घडि, सोलैनाम,गोत,पांचौ अंतर मुहूरत, विनासै ज्ञानजोत है ॥५८॥

अर्थ– २ प्रकृती वेदनीकर्मकी, ४ आयुकर्मकी, २ गोत्रकर्मकी, ९३ नामकर्मकी, सबमिले १०१ होय है. येप्रकृती आत्माके गुणने घाते नाहीं, ताते इनकों अघातिया कर्म कहे है.

१ सुखको वेदे (देवे) सो सातावेदनी कर्म है. १ दुखकोवेदे सो असाता वेदनी कर्म है. ऐसे वेदकर्म २ कहे. आयुकर्म ४ प्रकारके है सो कहे है.

१ नरकगतीमें स्थिरकरे वो नरक आयुकर्म है. १ पशूगतीमें स्थिरकरे वो पशूआयुकर्म है.
१ मनुष्यगतीमें स्थिरकरे सो मनुष्य आयु है. १ देवगतीमें स्थिरकरे सो देव आयुकर्म है.
१ नीचगोत्रकर्मनीचकुलमें उपजावे. १ उंच गोत्रकर्म उंच कुलमे उपजावे. ये २ गोत्रकर्म है.॥
॥ नाम कर्मके ९३ भेद है, ते आगेके ६० वे कवीतमें कहे हैं तहाते देखिलेना ॥

॥ अब आठ कर्मकी जघन्य अर उत्कृष्ट स्थिति कहे है ॥

ज्ञान अवर्णीय कर्म, दर्शन अवर्णीय कर्म, वेदनीय कर्म, अंतरायकर्म. इन चारकर्मको उत्कृष्ट स्थितिबंध तीस तीस कोडा कोडी सागरका है ॥

नामकर्म अर गोत्रकर्म इन दोयकर्मका उत्कृष्ट स्थितिबंध वीस वीस कोडा कोडी सागरका है.
१ मोहनीय कर्मका उत्कृष्ट स्थितिबंध सत्तर कोडा कोडी सागरका है.
१ आयुकर्मका उत्कृष्टस्थितिबंध तेतीस ३३ सागरका है ॥ अबजघन्य स्थितिकहै है. ॥
१ वेदनी कर्मकी जघन्यस्थिति २४ घडी (१२ मुहूर्त)कीहै. नामकर्म, गोत्रकर्मकी, स्थिति १६।१६ घडी की है. ज्ञानावरणीय, दरशनावरणीय, मोहनीय, अंतराय, आयुकर्म. इन ५ कर्मकी जघन्यस्थिति अंतर्मुहूर्तकी अंतरमुहूर्तकी है. इन आठौ कर्मका ४ प्रकारे बंध (१ प्रकृतिबंध, १ स्थितिबंध १अनुभागबंध १प्रदेशबंध,) है, इनका नाश. सम्यक्ज्ञान (केवलज्ञान) जोतिके प्रभावकरि होय है॥५८॥

॥ नामकर्मके ९३ भेद है, सो कहै है ॥ सवैया ३१ ॥

तन, बंधन, संघात, वरण, रस, जाति, पंच; संस्थान, संहनन, षट आठफास है ॥
गति, आनुपूर विहै चार. दो विहायगंध, अंगतीन, पैसठये त्रस, थूल, भास है ॥
पर्यापति, थीर, सूभ सूभग, प्रत्येक, जस सुस्वर, आदर, दो दो. नीरमान स्वास है॥
अपघात, परघात, अगूरुलघु. आताप. उदोत तीर्थंकरको वंदौ अघ नाश है॥५९॥

अर्थ— नामकर्मकी ९३ प्रकृती है —उसीमें पिंडप्रकृति ६५ है, अपिंडप्रकृती २८ है. सो कहै है.
५ शरीरकर्म है —१ औदारिकशरीर १ वैक्रियशरीर १ आहारकशरीर १ तैजसश० १ कार्माणश०
५ बंधन है—औदारिकशरीरबंधन वैक्रियकबंधन, आहारकबंधन, तैजसबंधन, कार्माणबंधन.

५ संघात है–औदारिकशरीरसंघात, वैक्रियसंघात, आहारकसंघात,तैजससंघात, कार्माणसंघात.
३ आंग उपांगकर्म है– १ औदारिकशरीरआंगोपांग, १ वैक्रियआंगोपांग १ आहारकआंगोपांग.
५ पाच प्रकारे वर्णनामकर्म हैं – १कालो, १ पीलो, १ हर्‍यो, १ लाल, १ सुपेद.
५ पांच प्रकारे रस नामकर्म है– १ खाटो, १ मीठो, १ कडवो, १ तीखो, १ कसायलो.
५ पांच प्रकारे जाति नाम कर्म है– १ एकेंद्री. १ बेइंद्री १ तेइंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री.
६ छह प्रकारे संहनन (हाड) नामकर्म है– १ बज्रवृषभनाराच सहनन १ वज्रनाराच सहनन १ नाराच संहनन १ अर्धनाराच संहनन १ कीलक संहनन १ स्फाटिक संहनन.
६ प्रकारे संस्थान (शरीरके आकार) नाम कर्महे – १ समचतुरस्र संस्थान १ न्यग्रोधपरिमंडळसंस्थान १ वामन संस्थान १ वाल्मिकखातिक संस्थान १ कुब्जक संस्थान १ हुंडक संस्थान.
८ प्रकारे स्पर्श नाम कर्म है १ तातो १ शीत १ हलको १ भारी १ नरम १ कठोर १ लूखो १ चिकणो
४ प्रकारे गतिनामकर्म है– नरकगति १ तिर्यचगति १ मनुष्यगति १ देवगति.
४ अनुपूर्वी कर्म है–१नरकगती अनुपूर्वी १ तिर्यचगत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्या० १ देवगत्यानु०
२ प्रकारे विहायो गतिकर्म है–१प्रशस्त (सीधे) गमन, १अप्रशस्त (तेडे वांके) गमन (चाल)
२ प्रकारे गंधकर्म है–१ सुगंध १ दुर्गंध. ॥ सबमिलिके ६५ पिंडप्रकृती भई ॥

॥ अब नामकर्मकी अपिंडप्रकृती २८ कहे है ॥

१ त्रस १ स्थावर १ बादर १ सूक्ष्म १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ सौभाग्य

१ दुर्भाग्य १ प्रत्येक १ साधारण १ जस १ अजस १ सुस्वर १ दुस्वर १ आदेय १ अनादेय १ स्थाननिर्माण प्रमाणनिर्माण १ श्वास उश्वास १ अपघात १ परघात न हलको न भारी १ आताप १ उद्योत १ तीर्थंकर (दर्शनविशुद्धि) ये २८ भई. दर्शन विशुध्यादि षोडशभावनातै तीर्थंकरप्रकृतीका बंध हो है. सो चौविस तीर्थंकरदेवकों मै नमस्कार करू हूं तातै पापका नाश होय॥ ॥ ६२ प्रकृती पुद्गल विपाकी, ४ भवविपाकी ४ क्षेत्रविपाकी, ७८ जीव विपाकी है ॥ ३१ ॥ सा ॥

॥ वरनादीकवीस, संस्थान, संहनन बार बंधन संघात, देह, आंगोपांग ठार है ॥
अगूरुलघु, आताप, अपघात, परघात, नीरमान, परतेक, साधारण, सार है ॥
अथीर उदोतथीर सूभ अशूभ बासठ पुग्गल विपाकि भौविपाकि आउचार है ॥
क्षेत्र विपाकि है चार अनुपूरवि अठत्तर बाकीजीव विपाकी धारे अघटार है ॥६०॥

अर्थ–५ वर्ण, २ गंध, ८ स्पर्श, ५ रस, ६ संस्थान (शरीके आकार) ६ संहनन, ५ शरीर, ५ बंधन, ५ संघात, ३ अंग उपांग १ न हालक्यो न भारी, १ अताप (उष्ण) १ अपघात, १ परघात, १ निर्मान, १ प्रत्येक १ अनंत जीव पाईये सो साधारण है १ धातु रक्तकी चलाचल होय सो अथीर, १ उद्योत (दीपै) १ थीर (धातु मांस रक्त अचल) १ जस भला होना १ अजस बुरा होना. ये ६२ प्रकृती पुद्गलमें उदैआवे, भोगै तातै पुद्गल विपाकी कही है. अर १ नरक आयु. १ तिर्यंच आयु, १ मनुष्य आयु, १ देव आयु. इन चार प्रकृतीका उदय भव (गती) में आवै, तातै भव विपाकी कही है. १ नरकगती अनुपूर्वी. १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १

मनुष्य गत्यानुपूर्वी, १ देवगत्यानु पूर्वी. ये ४ प्रकृतीका बंध भवके पूर्वी होय, तातै पूर्वी कहे अर परक्षेत्रकौ लिजाने वाली है, तातै क्षेत्रविपाकी कही है॥ ५ प्रकृती ज्ञानावर्णीकर्मकी, ९ प्रकृती दर्शनावर्णीकर्मकी, २८ प्रकृती मोहनीकर्मकी, ५ प्रकृतीअंतरायकी. ये ४७ प्रकृती चार घातियाकर्मकी अर २ प्रकृती गोत्रकर्मकी, २ प्रकृती वेदनीकर्मकी, अर २७ प्रकृति नामकर्मकी—

५ प्रकारे जातीनामकर्म—१एकेंद्री १ बेइंद्री १ तेइंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री.

४ प्रकारे गतीनामकर्म—१नरकगती १ तिर्यंचगती १ मनुष्यगती १ देवगती.

२ प्रकारे चाल नामकर्म—१प्रशस्तचाल १ अप्रशस्तचाल. विहायोगती.

१ त्रस १ थावर १ वादर १ सूक्ष्म १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ शुभ १ अशुभ १ सौभाग्य १ दुर्भाग्य १ सुस्वर १ दुस्वर १ आदर १ अनादर १ श्वासोश्वास १ सम्यक्त. ऐसें ७८ प्रकृती जीवविपाकी है. नामकर्मकी २७ प्रकृति जीव विपाकी है, बाकी नामकर्मकी ६२ प्रकृती शरीर विपाकी है, अर ४ प्रकृती क्षेत्र विपाकी है, ऐसे ९३ प्रकृतीनामकर्मकी है. किसी ग्रंथमे १०२ कही है, सो शरीरके ५ भेद है, उसके १५ भेद कहे है, सो गोमट सारमें कर्मकांडतै जानना. ॥

६२ प्रकृती पुद्गल (शरीर) विपाकी, ४ प्रकृती भव विपाकी, ४ प्रकृती क्षेत्र विपाकी, ७८ प्रकृती जीव विपाकी, ऐसें १४८ कर्म प्रकृतीकौ जो धारन (श्रद्धा) करै सो पापतै छूटे है॥६०॥

॥ घातिया कर्मके दोय भेदहै, सर्वघाति २१ देशघाति २६ ॥ ३१ सा ॥

केवलदरस, ज्ञान आवरण, बाकिदोय मिथ्यात, समैमिथ्यात, निद्रापांचभानीये॥

तीनौ चौकरीकि बारै, सर्वघाति ईकइस, संज्जुलनचार, नवनो कषाय मानीये ॥
ज्ञान आवरण चार. दरसनावर्ण तीन. अंतराय पांच. सम्यक मिथ्यात ठानीये ॥
देशघातीया छवीस. बाकि ईकसौ अघाति तीनौ घातकर्मघात आपशुद्ध जानीये ६१

अर्थ—१केवलज्ञान अवर्ण १ केवलदर्शन अवर्ण १ मिथ्यात्व १ समै (मिश्र) मिथ्यात्व. १ निद्रा १ निद्रानिद्रा १ प्रचला १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानगृद्धिनिद्रा ॥ अनंतानुबंधी क्रोध १ मान १ माया १ लोभ, अर प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान १ माया १ लोभ, अर अप्रत्याख्यानी १ क्रोध १ मान १ माया १ लोभ. ऐसा २१ प्रकृति आत्मगुणकौ सर्वथा घातै है. संज्वलन क्रोध, १ मान, १ माया लोभ १ अर नोकषाय १ हास्य १ रति १ अरति १ शोक १ भय १ जुगुप्सा १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद १ नपुंसकवेद. अर ज्ञान अवर्णकी चार १ मति १ श्रुति १ अवधि १ मनपर्यय. अर दर्शन अवर्णकी तीन १ चक्षु १ अचक्षु १ अवधि. अंतरायकी पांच १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य. १ सम्यकप्रकृती मिथ्यात्व. ऐसी २६ प्रकृती आत्माके गुणकौ येक देशघातै, तातै देशघातिया कर्मकी है ॥ देशघातिया २६ सर्वघातिया २१ अघातिया १०१ इन सब (१४८) का नाशकरै तब आत्मा मोक्षकौ जाय हैं ॥ ६१ ॥

॥ पापप्रकृती १०० है, सो कहैहै ॥ सवैया ३१ सा ॥

घाति सैतालीस दुःख, नीच, नरक आयु, पंचसंस्थान, संहनन, वर्ण, रस, मानीये॥
नर्क पशुगति, आनुपूरवि, फरस आठ, गंध दोय, इंद्रिचार. बूरिचालठानीये ॥

अथीर, अपर्यापत, सूक्ष्म और साधारण, परघात, थावर, अशूभ परमानीये ॥
दुर्भग, दुस्वर औ आनादर,आजसरूप,पापप्रकृती सौभेदत्यागि,धर्मजानीये॥६२॥

अर्थ–मन वचन कायकी वक्रता (अशुभ परिणाम) करै सो पापप्रकृतीका बंध होय है चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृतीहै सो सवी पापप्रकृती है अर १ असाता वेदनी १ नीचगोत्र १ नरक आयु ५ संस्थान सम चतुरस्त्रसंथान विना· ५ संहनन वज्र वृषभ नाराच संहननविना. ५ वर्ण ५ रस अर १ नरकगती १ पशूगती· १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यच गत्यानुपूर्वी ८ स्पर्श. १ सुगंध १ दुर्गंध १ एकेंद्री १ वेइंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ अप्रशस्तचाल १ अस्थिर १ अपर्याप्त १ सूक्ष्म १ साधारण १ परघात १ स्थावर १ अशुभ १ दुर्भाग्य १ दुस्वर १ अनादर १ अजस. ये १०० प्रकृती पापकीहै, इनकौ जो मन वचन काय करिकै त्यागै, सोही जीव धर्मात्मा जानीये ॥ ६२ ॥

॥ पुण्यप्रकृती ६८ है, सो कहैहै· ॥ सवैया ३१ सा ॥

सूरनर पशु आव, साता, उंच. भलिचाल, सूरनर आनुपुर्वि नीरमान, स्वास है ॥
बंधन, संघात, देह, वरण, रसन पंच. तीन अंग, शूभ दोयगंध, आठ फास है ॥
अगूरुलघु, पंचेंद्रि, संस्थान, संहन, बादर, प्रतेक, थीर पर्यापत जस त्रस है ॥
आताप उद्योत परघात सुस्वर सूभग आदर तीर्थंकरकौ वंदो अघनाश है ॥६३॥

अर्थ–मन वचन कायकी सरलता (शुभपरीणाम) सै पुण्यप्रकृतीका बंध होयहै. १ देव आयु १

मनुष्यआयु १ तिर्यंच आयु १ साता वेदनी १ उंचगोत्र १ प्रशस्तचाल १ देवगती १ मनुष्यगती १ देवगत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ निर्माण १ श्वासोश्वास ५ बंधन ५ संधात ५ देह औदारिकादि. ५ वर्ण ५ रस. १ औदारिक आंगोपांग १ वैक्रियक आंगोपांग १ आहारक आंगोपांग. १ शुभ १ सुगंध १ दुर्गंध. ८ स्पर्श १ अगुरु लघु १ पंचइंद्री १ सम चतुर संस्थान १ वज्र वृषभ नाराच संहनन १ बादर १ प्रत्येक १ स्थिर १ पर्याप्त १ जस, १ त्रस अताप १ उद्योत १ परघात १ सुस्वर १ सौभाग्य १ आदर १ तीर्थंकर (दर्शन विशुद्धी) सबमिली ६८ पुण्यप्रकृती है. सब पुण्य प्रकृतीमें दर्शन विशुद्धी प्रकृती अचिंत्य महिमाको धारक तीर्थंकर पदके कारण है, तातै तिनको वंदिवेतै पापका नाश होहै ॥ ६३ ॥

॥ कर्मको बंध, उदय, सता, कथन ॥ छंद छपै ॥

बंध एकसो वीस. उदय सो बाइस आवै ॥ सता सौ अठताल, पापकी
सो कहिलावै ॥ पुन्य प्रकृती अठसठि. अठत्तर जीव विपाकी ॥
बासठ देह विपाकि. खेत भव, चवचव. बाकी ॥ इकईस सर्वघाति प्रकृति.
देशघाति छवीस है ॥ बाकी अघात इकशत भिन्न सिद्धसिव ईस है ॥ ६४ ॥

अर्थ—आठ कर्मकी १४८ प्रकृतीमे बंधयोग्य १२० है और २८ प्रकृति इनमें गर्भित है. उदयमें कर्मप्रकृति १२२ आवै है और २६ प्रकृती इनमें गर्भितहै ॥ इसका वर्णन ६६ कवितमें हैं अर सतामें १४८ प्रकृति पाइये है. पापप्रकृती १०० शत है ॥ पुन्यकी प्रकृती६८है. पापपुन्य दोनूकी

प्रकृति १६८ भई, आठ कर्मकी १४८ प्रकृती है अर बीस कैसी बधी सो कहेहै ॥
५ वर्ण ५ रस २ गंध ८ स्पर्श ये २० प्रकृति पापमे गिणी है अर पुन्यमेंभी गिणी है, तातैं वीस बधी. ७८ प्रकृति जीव विपाकीहै, ६२ प्रकृति पुद्गल विपाकीहैं, ४ प्रकृति क्षेत्र विपाकी है, ४ प्रकृती भव विपाकी है. ऐसें १४८ है. वा २१ प्रकृति सर्वघाति, २६ देशघाति, १०१ अघाति ऐसें १४८ है. इन सब कर्मते भिन्न आत्मा सिद्ध है, शिव (मोक्ष) का ईश्वर है ॥ ६४ ॥

॥ पांच त्रिभंगी (१ बंध १ उदय १ उदीरणा १ सत्ता १ विशेषसत्ता) ॥ सवैया ३१ ॥

वर्णादि चार, सोलनाहि, देहादीक पांच, दशनाहि, मिथ्यात एक दोय बंध नाही है॥
सोलै दस दोयवीना बंध एकशत वीस. मिथाउदै तीन दोय बढै उदैयाही है ॥
उदै औ उदीरना एकशत बाईसकि. आठताल, विशेषसत्ता नानाजीव ठाही है ॥
मिथ्या गूण सो छीयाल काहु सत सत्ताईस.पांचौ तीर भंगि सों असंगि आप माहीहै ॥

अर्थ–पांच वर्णमें कोइ एक वर्ण लेना, पांच रसमें कोइ १ रस लेना, दोनो गंधमें कोई १ गंध लेना, आठ स्पर्शमें कोइ १ स्पर्श लेना, इनवीस प्रकृतीमे बंध योग्य ४ प्रकृति है. बाकी १६ प्रकृती गर्भीत है. पांच शरीर, पांच बंधन, पांच संघात, इनपंद्रामें ५ शरीर प्रकृती बंध योग्य है, १० बंध योग्य नही है. ३ प्रकृती दर्शन मोहकी है, उसीमें बंध योग्य १ मिथ्यात्व है, बाकी २ मिथ्यात्व प्रकृति गर्भितहै, बंध योग्यनही है. ऐसें २८ प्रकृति बंध योग्य नही गर्भितहै, तातै २८ विना, बंध योग्य १२० ही प्रकृतीहै. अर उदयमे तीनूही मिथ्यात्व आवै है तातै बंधतै उदयमे २ प्रकृती जादा

है, १२२ उदयमे है ॥ अर १२२ प्रकृती उदय आवै ताका तपके बलसे क्षय करणा सो उदीरना १२२ की है. नानाजीव अपेक्षा सता १४८ प्रकृतीकी पाइये. अर एक जीवकी अपेक्षा कहना सो विशेष सत्ता कहीये ॥ जैसे कोइ एकजीव मिथ्यात्व गुणस्थानमें बहूत सत्ता पाईये तो १४६ अर किसी जीवके १२७ पाईये. इनका विशेष त्रिभंगी सारमें देखना. इन पांचौ त्रिभंगीसे आतमा असंगी (जूदा) है, अपने निजसत्तामें विराजे है ॥ ६५ ॥

॥ कर्मबंध दश प्रकारे है सो कहै है. ॥ छप्पै ॥

जीवकर्ममिलि बंध, देय रस तास उदै भनि ॥ उदीरणा उपाय रहे, जबलौ सत्ता गिणि ॥ उतकर्षण थितिबढै, घटै अप कर्षण कहियत ॥ संक्रमण परूपण उदीरन विन उपशम मत ॥ संक्रमण उदीरण विन निधत, घटि बधि उदीरण संक्रमन ॥ चहुविना निकांचित बंध दस, भिन्न आपपद जानि मन ॥ ६६ ॥

अर्थ–१ जीवनै परकौ आप मान्या तव नूतन कर्म अर आत्मा मिलिके कर्मका बंध होता है.
१ जो प्रकृति उदय आय रसदे है, पुराने कर्म आपना रसदेविना नखिरै सो उदय बंध कहीये
१ आयुकर्म विना बाकी सातकर्मकी प्रकृती तपके जोरतै खिपावै सो उदीरणा बंधहै.
१ कर्म प्रकृतीकाबंधतो हुवा परंतु उदय नहीआया, सत्तामे रह्यो सो सत्तावंध कहीये.
१ जो प्रकृती बांधी तिसको फेर परिनाम निमत्त पाय थिति बढावै सो उत्कर्षण बंध है.
१ वर्तमानआयुविना, कीया बंधकौ फेर परिनाम निमित्त पाय बंधथिति घटावै सो अपकर्षण है.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकौ परिणाम निमित्त पाय दुसरे प्रकृतीमें मिलावै सो संक्रमण वंध है.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकी उदीरणा न होय सो उपशम बंध कहीये ॥

१ जो प्रकृति बांधी वो दूसरे प्रकृतीमे नमिले न उदीरणा होय सो निधत्त वंध कहीये.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकी थिति नघटे नवढे, न उदीरणा होय, न संक्रमण होय सो निःकांचितबंधहै. ऐसें दस बंधरहित आत्माका पद है सो जानना ॥ ६६ ॥

॥ आयुकर्मका नव त्रिभागकारि बंधहोय है, सो कथन ॥ कवित्त ॥

आउ अंस पैंसठिसै इकसठि. इकइससै सित्यासीजानि ॥ सात शतक उनतीस. दोयसै तेतालिस. इक्यासि मानि ॥ सताईस, और नौ, तीन, एक, आठवा भेद वखान ॥ नौमि अंतकालमें बांधै अगली गतिकी आउ निदान ॥ ६७ ॥

अर्थ–जैसै कोऊका आयु६५६१वर्षका है, उसकै त्रिभाग(२१८७)में परभवका आयु वंध होयहै॥ तहां नही होय तो २१८७ के त्रिभाग ७२९ में आगले गतीका आयु बंध होय. तहां नहीवंधै तो ७२९ के त्रिभाग (२४३) मे आगले भवका आयु वंध होय. तहांही आयुबंध नहोय तो २४३ के त्रिभाग ८१ में आगले भवका आयु बंध करे ॥ तहांही आयु बंधनकरै तो ८१ के त्रिभाग २७ में आगले भवका आयु बंध होय. तहांही नही बंधै तो २७ के त्रिभाग ९ में परभवका आयु बंध करै. तहांही आयु नबंधै तो ९ के त्रिभाग ३ में अगले गतीका आयु बांधै.

तहांही बंध नकरे तो ३ के त्रिभाग १ में परभवका आयु वंध करै, ऐसे आठवार त्रिभागकरै. नौमीवार अंतसमै अवस्य त्रिभागकरि निःकांचित्तबंध करै,आगली गतिका आयु वंध होय. यह नेमहै. आगली गतीका आयु बांधै विना, वर्तमान भुज्यमान आयु न सोडे (मृत्यु नकरे) आयु कर्मका बंध त्रिभागमेही होताहै, त्रिभागविना होतानही है यह नेम है. ॥ ६७ ॥

॥ पंच परावर्तन (भाव, भव, काल, क्षेत्र, पुद्गल) कहे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

भाव परा वर्तनअनंतुतै कर जीव. एक भावसौ अनंत भवके परावर्त है ॥
एक भौसेति अनंत काल परावर्त करै कालतैअनंत खेत परावर्त कर्त है ॥ येक
खेततै अनंत पुग्गल परावर्तन. पंचफेरा वीषैआप मिथ्यावस वर्ते है ॥ सातको
वीनाश जीनै सम्यक प्रकाश तेइ दर्व खेत काल भव भावतै निकर्त है ॥ ६८ ॥

अर्थ–संसारमे मिथ्यात्वके वसिहोय इस जीवनै अनंते भाव परावर्त कीये, अनंते काल संसारमें भ्रमण कीया, सो जिनप्रभुभगवानके ज्ञानमें गम्य है. जितने कालमें येक भाव परावर्तन पूराकरे, तितने कालमें अनंते भव परावर्तन होतहै ॥ भावार्थ ॥ येक समयमें मिथ्यात्वभासे बांधेकर्म क्षयकरनेकौ अनंत भव परावर्तन होयहै अर येक भवके कर्म दूर करनेकौ, अनंतकाल परावर्तन होयहै, अनंतके अनंत भेदहै. जितने कालमें येककाल परावर्तन पूराहोय, तितने कालमें अनंत क्षेत्र परावर्तन होयहै. येक क्षेत्रके बांधे कर्म दूर करनेको अनंत पुद्गल परावर्तन होयहै. ऐसे ५ परावर्तनमें अनंतवार जनम्या, अनंतवार मूवा, मिथ्यात्व वसि हुवा जीव अनंतकाल भ्रम्या

अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, अर मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्व. ऐसें ७ प्रकृतीकौ क्षयकरै तब क्षायिक सम्यक्त होय, आतमा पंच परावर्तनसे रहित होय है ॥६८॥

॥ पुनः पंच परावर्तनका स्वरूप कहै है ॥ सवैया ३१ ॥

भाव परावर्तन अनंत भाग भवकाल, भव परावर्तन अनंत भाग काल है ॥ काल
परावर्तन अनंत भाग क्षेत्र कह्यो, खेतको अनंत भाग पुग्गल विशाल है ॥ ता
को आधोनाम अर्ध पुद्गल परावर्त न, फीरनो रह्यो है योहि ज्ञानीज्ञान भाल है॥
ताहि समै सम्यक ऊपजवेको जोग भयो, और कहां सम्यकत लरकौका ख्यालहै६९

अर्थ—१ कषाय अद्य वसाय स्थान, १ अनुभाग बंध अद्यवसाय स्थान, १ जोगस्थान, १ स्थिति-स्थान, ऐसे परिणामकी प्रचुरता (बहुलता) का नाम भाव परावर्तन है. नरक गतीका जघन्य आयु दश हजार वर्षका अर उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरका. १ मनुष्यगती १ तिर्यंच गती. इन दोन्यूगतीका जघन्य आयु अंतर्मुहूर्तका, अर उत्कृष्ट आयु ३ पल्य. देवगतीका जघन्य आयु दश हजार वर्षका अर उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरका है. ऐसें चारौगतीका जामन मरण जघन्यते उत्कृष्ट पर्यंत करै, सो १ भव परावर्तन है, सो भाव परावर्तनकै अनंतवे भाग भव परावर्तनका कालहै, एक भाव परावर्तनके कालमें अनंते भव परावर्तन होजाय है.

भव परावर्तनके अनंतवे भाग काल परावर्तनका काल है, एकभव परावर्तनमें अनंते काल परा-

वर्तन होय है, वीस कोडाकोडी सागरका येक कल्पकाळ होहै, ताकै उत्सर्पिणी १ अवसर्पिणी १ ये दोय भेदहै, वीस कोडाकोडी सागरके जीतने समय होय तिन सब समयकौ अनुक्रमतै जन्म मरण पूरणकरै ताका नाम काल परावर्तन है ॥

काल परावर्तनके अनंतवे भाग क्षेत्रपरावर्तन है, एककाल परावर्तनमें अनंते क्षेत्र परावर्तन होयहै. क्षेत्र परावर्तन दोय प्रकारहै, स्वक्षेत्र परावर्तन, परक्षेत्र परावर्तन. सूक्ष्म निगोद अलब्ध पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवे भागहै, तहांसु लेय अर हजार योजन लंबो, पांचसै योजन चौडो, आढाइसै योजन उंचो, जो महामच्छहै, ताकी उत्कृष्ट अवगाहना पर्यंत येकयेक प्रदेश बधती अवगाहना अनुक्रमतै जन्म मरण पूराकरै सो स्वक्षेत्र परावर्तन है. मेरूकी जडतले मध्यमें आठ प्रदेशहै तिनतै एकएक प्रदेश भिख्याका टाकाकी नाई सरकि सरकि तीन लोकके असंख्यात प्रदेशमें जामन मरण पूराकरै सो परक्षेत्र परावर्तनहै, स्वक्षेत्र परक्षेत्र दोनूका काल इकट्ठा करिये तब एक क्षेत्र परावर्तनका काल होय है.

क्षेत्र परावर्तनके अनंतवे भाग पुद्गल परावर्तन है, एक क्षेत्र परावर्त कालमें अनंते पुद्गल परावर्तन होयहै, ताके दोय भेदहै. १ नो कर्म (पाव) पुद्गल परावर्तन १ कर्म पुद्गल परावर्तन. नोकर्म पुद्गल परमाणू अग्रहीत अनंतावार ग्रहणकरै तब एकवार मिश्र (अग्रहीत ग्रहीत) परमाणू होय ग्रहण करै है. पुनःअनंत अग्रहीत ग्रहण करै फेर दूजीवार मिश्र ग्रहणकरै है, ऐसे मिश्र अनंत होजाय तब येवार ग्रहीत ग्रहण करै तब मिश्र परमाणू होय ग्रहण करै है, ऐसे पूर्वोक्त

विधितै ग्रहीत परमाणूभी अनंत होजाय अनंत अग्रहीत, अनंतमिश्र, अनंतग्रहीत. इन तीनोके ग्रहणमें जे तो काल लागेहै, सो पाव पुद्गल परावर्तनका काल होयहै, इनकौ चोगुणा करिये तब येक पुद्गल परावर्तन (कर्म पुद्गल परावर्तन) जानना ॥

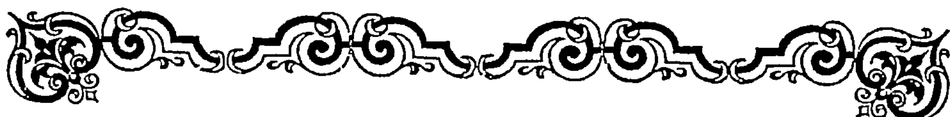
पुद्गल परावर्तन कालके आधाकालकौ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल कहैहै. अर अर्ध पुद्गल परावर्तनका नाम काललब्धिहै, जीव मिथ्यात्व परिणामसे संसारमें अनंतवार अनंत परिवर्तन करेहै, जब उसके, अर्ध पुद्गल परावर्तन प्रमाण संसारका भ्रमण बाकी रहेगा तब ज्ञानी जाने काललब्धी भई है (सम्यक उपजने योग्य भया) है अर अर्ध पुद्गल परावर्तनसे येक समय अधिक संसारमे जिसको भ्रमण रह्याहोय तो तिसकौ सम्यक्त न उपजे यह नियम है. जो जीव सम्यक्त पावै सो जीव अंतर्मुहूर्ततै लेकर अर्ध पुद्गल परावर्तन पर्यंत कभीही मोक्ष जायगा बाधानही. बहूत भ्रमेतो अर्ध पुद्गल परावर्तनसे जादाकाल न भ्रमै. इस भांति सम्यक्त पावै है, अर सम्यक्त कहां लडकोका ख्याल है ! सम्यक्त पावना महादुर्लभ है ॥ ६९ ॥

॥ ६३ प्रकृतीका नाशहोय तब केवलज्ञान उपजै है ॥ ३१ सा ॥

नरक, पशुगति, आनुपूरवि प्रकृति चार. पंचेंद्रि वीना चार, आताप, उदोत है ॥
साधारण सूक्षम, थावर, प्रकृति तेरे नर आव वीना तीन मीलि सोलह होत है॥
सैतालीस घाती याकि त्रेसठ प्रकृति सर्व नाश भये तीर्थंकर ज्ञानमइ जोत है ॥
देवनीकैदेव अरिहंत है परम पूज्य तीनहीकौ बिंबपूजि होहि उंच गोत है ॥७०॥

अर्थ—१ नरकगती १ तिर्यंचगती १ नरकगती अनुपूर्वी १ तिर्यंचगती अनुपूरवी. १ येकेंद्री १ बेंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ आताप १ उद्योत १ साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर ये १३ प्रकृती नामकर्मकी अर १ नरक आयु १ तिर्यंच आयु १ देव आयु ये ३ मिले तब १६ प्रकृति अघातियामेकी है. अर ९ दर्शनावर्णी ५ ज्ञानावर्णी २८ मोहनीकी ५ अंतराय ये ४७ घातियाकी ऐसे ६३ प्रकृतीका नाशहोय जब प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध, प्रदेशबंध, ये सर्व नाश होयहै तब तीर्थंकर देवकौ तीर्थंकर प्रकृतीका उदय होयहै. केवलज्ञान दर्शन ज्योतिमई निजस्वभाव, प्रगट होतहै, तब अर्हंत कहावे है ॥ इंद्रादिक सब देवमें अर्हंत देव श्रेष्ठहै, परम पूज्यहै, तिनके प्रतिबिंबकौ नमस्कारकीयेते पूजनकीयेते उंच गोत्रका बंध होहै, उंच कुलमे उपजेहैं ॥ ७० ॥

॥ इति कर्मबंध वर्णन समाप्त ॥ ४ ॥



॥ अथ चतुर्दश गुणस्थान वर्णन प्रारंभः ॥ ५ ॥

॥ श्री गोमटसारग्रथके आदिमें नमस्कार ॥ छप्पै ॥

वंदौ नेमि जिनंद, नमौ चोवीस जिनेश्वर ॥ महावीर वंदामि, वंदिसव सिद्ध महेश्वर ॥ शुद्धजीव प्रणमामि, पंचपद प्रणमौ सुख अति ॥ गोमटसार नमामि, नेमिचंद आचारजनिति ॥ जिन, सिद्ध शुद्ध, अकलंक वर, गुण मणिभूषण उदयधर ॥ कहूं वीस परूपणा भावसौ. यह मंगल, सब विघन हर ॥ ७१ ॥

अर्थ–श्री नेमिनाथ बावीसमा तीर्थंकरकौ वंदौ हूं, चौवीस जिनेश्वरकौ मेरा नमस्कार होहूं ॥ महावीर स्वामीकौ मेरी वंदना है, सब अनंत सिद्धोंकौ तीर्थंकरके ईश्वरकौ वंदना करूं हूं ॥ ज्ञानमयी शुद्ध जीवने मेरा नमस्कार है, पंच परमेष्ठीकौ मेरा नमस्कार है ॥ गोमट (आत्म). सार ग्रंथकौ मेरा नमस्कार है, नेमिचंद्र आचार्यने मेरा नमस्कार है, जिन है, सिद्धहै, शुद्ध है अकलंक है, वर (विशिष्ट) है, ये सब विशेषण आठठोर मिलायलेने. अर गुण तेही भये रतनमयी आभूषण, तिन करिकै दैदीप्यमान है ॥ नेमिचंद्र आचार्य सिद्धांत चक्रवर्तिनें गोमटसार ग्रंथके आदिमें इन आठ ठोर नमस्कारकरी वीस प्ररूपणा भावसो कही है, इन आठो ठोरका नमस्कार महामंगलकारीहै. सब विघ्नोका हरनेवाला है, ॥ ७१ ॥

॥ चौदा मार्गणामे पांच प्ररूपणा गर्भित कहैहै ॥ ३१ सा ॥

जीवसमास, परजापत, मन वच श्वास, इंद्रि काय मांहि आउगतिमें वखानीये ॥
कायबल, जोगमांहि इंद्रि पांच, प्राणमाहि आहारक, परिग्रह, लोभमे वखानीये॥
क्रोधमांहि भय अरु वेदमाहि, मैथून है; ज्ञान ज्ञानमाहि दर्शदर्शमाहि जानीये ॥
पांचौ प्ररूपणा इह चौदहमें गर्भित है, गूणठाण मारगणा दोय भेद मानीये ॥७२॥

अर्थ– १ जीवसमास १ पर्याप्ति १ प्राण १ संज्ञा १ उपयोग, ये पांच प्ररूपणा चौदा मार्गणामें गर्भित है सो कहैहै. १९ जीव समास, ६ पर्याप्ति, १ मन प्राण १ वचनप्राण १ श्वासोच्छ्वास प्राण १ इंद्रीप्राण, ये काय मार्गणामें गर्भित है. अर आयुप्राण गती मार्गणामें गर्भित है॥ कायप्राण. योगमार्गनामें गर्भित है, अर पांचौ इंद्री, प्राणमें गर्भित है. आहारकसंज्ञा अर परिग्रहसंज्ञा, लोभ कषाय मार्गणामें गर्भित है ॥ अर भयसंज्ञा क्रोधमार्गणामें गर्भित आगई. मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणामें गर्भित आगई. ज्ञानोपयोग ज्ञानमार्गनामें आगया, अर दर्शनोपयोग दर्शन मार्गनामें गर्भित है ॥ ऐसे पांच प्ररूपणा चौदा मार्गणामें गर्भित है अर चौदामार्गणा, पांच प्ररूणा, अरगुणस्थान ऐसे वीस प्ररूणा है; सामान्यपणे दोय भेद है, येकगुणस्थान येक मार्गणा ॥ ७२ ॥

॥ सत्तावन जीव समास कहैहै ॥ छप्पै ॥

भूजबल, पावक, वाउ, नीत, ईतर, साधारन ॥ सूक्ष्म, बादर, करत होत

द्वादश उच्चारन ॥ सुप्रतिष्ठ, अप्रतिष्ठ, मिलि चौदे परवानो ॥ परज, अप-
रज, अलब्ध, गुणी ब्यालीस वखानो ॥ गुण बे, ते, चौ, इंद्री त्रिविधि सर्व एक
पशास भनी ॥ मनरहित, सहित, तिहु भेद सू. सत्तावन धरि दयामनी॥७३॥

अर्थ—जहां जीव पाइये सो जीव समास कहीये· १ पृथ्वीकाय १ जलकाय १ अग्निकाय १ वायुकाय १ नित्यनिगोद १ इतर निगोद (साधारण वनस्पति) इन छहमें सूक्ष्म अर बादर ऐसें दोय दोय भेद है, सब मिलि १२ भये ॥ वनस्पतीमे दोय भेद है सुप्रतिष्ठ, (जिसके आश्रय वहुत जीव होय) अतिष्ठ (जिसके आश्रय और जीव नहोय) ये दोय मिले तब १४ भेद भये ॥ इन प्रत्येकमें पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, ऐसे तीन तीन भेद है. सब मिलि येकेंद्रीके जीवसमास ४२ हुये॥ वे इंद्री, तें द्री, चोइंद्री इन तीनूके पर्याप्त, अपर्याप्त अलब्धि पर्याप्त, ऐसे ९ भेद विकलत्रयके हुवे· संज्ञी पंचेंद्रीमे पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, अर असंज्ञी पंचेंद्रीमे पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, ऐसें पंचेंद्रीके ६ भेदहै. येकेंद्रीस्थावरके ४२ अर विकलत्रयके ९ सब ५७ जीव समास भये· इनपर दयाभाव रखना ॥ ७३ ॥

जिस जीवनै योग्य पर्याप्त (६) पूरीकीनी सो पर्याप्ति कहीये, अर जिस जीवने स्वयोग्य पर्याप्त करनी मांडी जवताई सव पूरी न होय तव ताई अपर्याप्त (निकृत्य ?) कहीये, अर जिस जीवने पर्याप्तका आरंभतो कीया परंतु १ भी पर्याप्त पूरी नकरै सो अलब्ध पर्याप्त कहीये

॥ अठ्याणवै जीव समास कहैहै ॥ ३१ ॥ सा ॥

इक्कावन थानजान थावर विकलत्रयकै, गर्भज दोय तीन सन्मूर्छन गाये है॥
पांचसैनि औं असैनि जल, थल, नभचर, भोग भूमिभूचर खेचर, दोदों पाये है॥
दोदो नारकि है देव, नवविध मनुषहै, चवभोगभू कुभोगभू म्लेंछ बताये है॥
दोय दोय दोय तीन आरजमें राजत है, अठाणवै दयाकरे साधते कहाये हैं ॥७४॥

अर्थ– थावरके जीव समास ४२ है, विकलत्रैके ९ दोनू मिलके ५१ भये, अर पंचेंद्री गर्भज गौआदि थलचर पशुके दोय भेद है १ पर्यास १ अपर्यास, सन्मूर्छन पंचेंद्रीके तीन भेद है १ पर्यास १ अपर्यास १ अलब्ध पर्यास॥ ये पांचौमें दो दो भेद है १ सैनीय १ असैनी, सब दस भेद भये, वैसेही १० भेद मच्छ आदि जलचर पंचेंद्रीकेहै, ऐसेही नभचर पंचेंद्रीके १० भेदहै, ये तीस भेद कर्मभूमीके पंचेंद्री पशूके गर्भज अर सन्मुर्छेके है. भोगभूमीमें जलचर अर सन्मूर्छन जीव नाही. भोगभूमीमें गर्भज पंचेंद्री पशू थलचर, १ पर्यास. अपर्यास पक्षी १ पर्यास १ अपर्यास ये ४ भेदहै. नारकीको १ पर्यास १ अपर्यास, अर देवको १ पर्यास १ अपर्यास. देवमे नारकीमे अलब्ध पर्यास होता नाहीहै. सुभोग भूमीके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास, कुभोग भूमीके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास, म्लेंच्छ खंडके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास आर्यखंडके मनुष्य १ पर्यास १ अपयसि १ अलब्ध पर्यास. ये मनुष्यके जीव समास ९ है, देवके २ है नारकी २ है, पंचेंद्री पशूके ३४ है, विकलयके ९ है, थावरके ४२ है, सब मिलके ९८ जीव समास है. इनपर दयाभाव करे सो साधु कहावे है ॥ ७४ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ५३ भाव त्रिभंगी कहैहै ॥ कवित्त ॥

चौतिस वत्तिस तेतिस छत्तिस इकतिस इकतिस इकतिस जान ॥ अठाइस अठाइस बाइस बाइस बाइस वीस बारमे थान ॥ तैरे चौदे अंतमे स्थानक पंचभाव सिद्धाले जान ॥ सम्यक् ज्ञान दरस बल जीवित निहचैसो तू आप पिछान ॥ ७५ ॥

अर्थ–भावके मूले भेद पांच है, १ उपशम १ क्षायिक १ मिश्र १ उदइक १ पारिणामिक.

उपशमके भाव दोय– १ उपशम सम्यक्त १ उपशम चारित्र.

क्षायकके भाव भेद नव है,– १ क्षायिक सम्यक्त्व १ क्षायिकज्ञान १ क्षायिकदर्शन १ क्षायिक चारित्र १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य.

क्षयोपशमिक (मिश्र)के भाव अष्टादश– १ सुमति १ सुश्रुति १ सुअवधि १ मनः पर्यय १ कुमति १ कुश्रुति १ कुअवधि १ चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन. पांच लब्धी– १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य. १ क्षयोपशमसम्यक्त १ क्षयोपशम चारित्र १ संयमासंयम.

औदयिकके भाव इकवीस–४ गति ४ कषाय ३ लिंग १ मिथ्यादर्शन १ कुज्ञान १ कुसंयम १ असिद्धत्व ६ लेश्या.

पारिणामिकके भाव तीन– १ जीवत्व १ भव्यत्व १ अभव्यत्व.

सिद्धनिकै पांच भाव है १ सम्यक्त १ ज्ञान १ दरसन १ वल १ जीवित. निश्चयनयकरि ऐसें तू आपको जान ॥ ७५ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ३४ भाव कहैहै ॥ सवैया ३१ सा ॥

पहले, मिथ्यात अभव्य, दूसरे विभंग तीन, लेश्या तीन नर्क अव्रत देव चारमें ॥
पशु पाचै, लेश्या दोय सातै लोभ दसैलग, क्रोध मान माया तीन वेदनौ विचारमें॥
सेसतेरे, नर भव जीवित असिद्धचौदै, पंचलब्धि अज्ञान चख अचख बारमें ॥
चवतीसौ भाव कहे चोदे गूण थानकमें, वे उनीस बारहमें मै हो अविकारमें ॥७६॥

अर्थ– १ पहिले मिथ्यात्व गुणस्थानके अंतमें, १ मिथ्यात्वभाव १ अभव्य भाव, ये २ घटे है.
२ सासादन गुणस्थानमें, १ कुमति १ कुश्रुति १ कुअवधिये ३ विभंग (कुज्ञान) ज्ञान घटे है.
४ में, १ कृष्ण १ नील १ कापोत १ अव्रत १ नरकगती १ देवगति, ६ भावविना अनंत व्युच्छित्ति है.
५ पांचमे देश (अनु) व्रत गुणस्थानमें १ तिर्यंच गतीकी व्युच्छित्ति (घटना) होयहै.
७ सातमे अप्रमत्त गुणस्थानकके अंत १ पीतलेश्या १ पद्मलेश्या, ये दोय भाव घटे है.
९ नवमे अनिवृत्ति करणमें १ क्रोध १ मान १ माया १ स्त्री १ पुरुप १ नपुंसक, ये ६ भाव घटे.
१० दसमे सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानमे १ सूक्ष्मलोभ घटेहै.
१२ बारमे क्षीणमोह गुणस्थानमें ५ क्षयोपशमलब्धि १ अज्ञान १ चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन ये ८ घटे.
१३ तेरमें संयोग केवली गुणस्थानकें अंत १ शुक्लेश्या घटेहै.
चौदमें अयोग केवली गुणस्थानमें १ मनुष्यगती १ भव्यत्व १ जीवत्व १ असिद्धत्व, ये ४ घटे.
४ भावकी व्युच्छित्ति चौदा गुणस्थानमें कही ॥ ७६ ॥

॥ बारा गुणस्थानमें १९ भाव घटे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

ऊपशम चौथे ग्यारे, वेदक चौथे सातै, क्षायक चौथे चौद है, देशविरत पांचमें ॥
ज्ञान तीन तीजै बारै, मनः पर्जै छठे बारे, चारीत सराग छठे दसै कह्यो साचमें ॥
औधि तीजै बारै, ऊपसम चारीत ग्यारै हि, क्षायक चारीत बारै चौदे कर्म वाचमें॥
पंचलब्धि क्षायीक दर्सज्ञान तेरै चौदे नमो भाव उनइस छूटै नरक आवमें ॥ ७७॥

अर्थ—१ उपसम सम्यक्त चौथे गुणस्थानते लेकै ११ गुणस्थानपर्यंत रहैहै.
१ वेदक (मिश्र) सम्यक्त, चौथे गुणस्थानते लेकै सातमा गुणस्थानतक पाईये. (रहे) है.
१ क्षायक सम्यक्त, चौथे गुणस्थानसूं लेकै चोदमे गुणस्थानपर्यंत पाइये तथा सिद्धकौ पाइये.
१ देशव्रत (अनुव्रत) भाव, पांचमा गुणस्थानमेंही होय आगे अनुव्रत नाहीहै. ॥
३ सुज्ञान, चौथे गुणस्थानतै लेकै बारमा गुणस्थान पर्यंत पाइये.
१ मनःपर्ययज्ञान. छठा गुणस्थानते लेकै बारमा गुणस्थानतक मुनीकौ पाइयेहै.
१ सराग चारित्र, लठा गुणस्थानतै दशमा गुणस्थानक रहै, आगै वीतराग भाव हे ॥
१ औधि दर्शन, चौथे गुणस्थानतें बारमा गुणस्थानतक पाइये.
१ उपशमचारित्र, ग्यारमे गुणस्थानमेंही पाइयेहै.
१ क्षायिक चारित्र, बारमे गुणस्थानतै चौदमा गुणस्थानतक पाइये तथा सिद्धकौ पाईये.
५ लब्धी क्षायककी १ केवलदर्शन १ केवलज्ञान, ये ७ भाव तेरमें चौदमें गुणस्थानमें जानने

॥ चारौ गतीमें ५३ भाव है ॥ सवैया ३१ सा ॥

सासतौ स्वभाव पंचभाव सिद्धवंदत हौं, तीनौ गति वीना नरके पचास दीस है ॥
क्षायकके आठवीना, मन परजे, चारीत है दोय ग्यारैवीना पशु ऊनतालीस है॥सुभ
लेश्यातीन अर नरनारिवेद देशव्रत छहौभाववीना, नारक तेतीस है ॥ हीन
तीन लेश्याषंड वेद चारी भाव वीना, शुभलेश्या नरनारि सूरके चौतीस है ॥७८॥

अर्थ— १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ क्षायिक सम्यक्त १ अनंतशक्ती १ जीवित्व. ये पांचभाव सिद्धनिमै सास्वत अविनासी है, तिनकौ मै भावसहित वंदौ हौ. १ नरकगति १ तिर्यंचगति १ देवगति. इन तीन भावविना वाकीके पचास भाव मनुष्यगतीमें सामान्यपणे है, तिरेपन भावकेनाम पीछेके ७५ कवीतमें है तहांदेखो ॥ तिर्यंच गतीमें ३९ भावहै— १ नरकगती १ मनुष्यगती १ देवगती ये तीन भाव अर क्षायक सम्यक्तविना बाकी क्षायकके ८ भाव, अर १ मनःपर्ययज्ञान १ उपशमचरित्र १ क्षयोपश चारित्र. ऐसें १४ भाव विना वाकीके ३९ भाव तिर्यंच गतीमें सामान्यपणेहै ॥

१ पीत १ पद्म १ शुक्र १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद १ देशव्रत १, इह छह भाव ३९ भावमें घटाइये तव ३३ रहै, ये ३३ भाव नरक गतीमें सामान्यपणे है ॥

३ खोटीलेश्या १ नपुंसवेद ये ४ भाव ३३ भावमें घटाइये, अर ३ शुभलेश्या १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद ये पांच भाव मिलाइये तव ३४ रहे ये ३४ भाव देवगतीमें सामान्यणे है ॥ ७८ ॥

॥ १४ गुणस्थानमें ५ मिथ्यात १२ अविरत २५ कषाय १५ योग, ये ५७ आश्रव ॥ कवित्त ॥

पचपन पचास तेतालिस छियालिस सेतीस चोवीस जान ॥ बाइस बाइस सोलै
दस अरु नव नव सात अंत वखान ॥ चौदे गुणथानकमें इह विधि आश्रव
द्वार कहे भगवान ॥ मूलचार, उत्तर सत्तावन. नाशकरौ धरि संवर ज्ञान ॥७९॥

अर्थ—१ मिथ्यात्व गुणस्थानमें ५५ आश्रवहै, १ आहारक १ आहारकमिश्र, ये २ विना.
२ द्वितय गुणस्थानममें ५० आश्रव है, ५ मिथ्यात्व १ आहारक १ आहारकमिश्र विना.
३ मिश्रगुणस्थानमें ४३ आश्रव है, ५ मिथ्यात ४ अनंतानु २ आहारक ३ मिश्र औदारिकादिविना.
४ अविरत गुणस्थानमे ४६ आश्रवहै. ऊपरके ४३ अर मिश्र ३ मिले.
५ गुणस्थानमें ३७ आश्रवे है, ४६ में ४ प्रत्याख्यान कषाय ४ योग १ त्रसवध ये ९ घटाये तब ३७ रहै.
६ गुणस्थानमें २४ आश्रव है, ४ अप्रत्यास्व्यानीकषाय ९ हास्यादि ९ जोग २ आहारक.
७ गुणस्थान मे २२ आश्रव है, ९ जोग ४ संज्वलन कषाय. ९ हास्यादि.
८ गुणस्थानमें २२ आश्रव है, उपरके ही. ९ गुणस्थानमें १६ आश्रव है. ९ जोग ४ संज्वलन कषाय ३ वेद.
१० गुणस्थानमें १० आश्रव है, ९ जोग १ सूक्ष्मलोभ.
११ गुणस्थानमें ९ जोग आश्रव हे. १२ वे गुणस्थानमे वेही ९ जोग आश्रव है.
१३ गुणस्थानमें, ७ आश्रव है, ३ काययोग २ वचनयोग २ मनयोग ये ७.

१४ गुणस्थानमें आश्रव नाहीं. मूल आश्रव ४ उत्तर आश्रव ५७ इनका सम्यक ज्ञानकरि नाश करो संवरकरो ॥ ७९ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ५७ आश्रवका घटना कहैहै ॥ ३१ सा ॥

पहिले पांच मिथ्यात, दूजै अनंतानुबंधि, ग्यारह अविरत प्रत्याख्यानि पाच गहै॥
वैक्रियक औअप्रत्याख्यानि त्रसवध चौथे, आहारक छठे, षट हास्य आठलौल है ॥
तीन वेद तीन संजूलन नौमे, लोभदसै, असत उभै वचन मन बारहे कहे ॥
सतअनुभय वच मन औदारीक तेरे मिश्र कारमान चारि गूणस्थाने सर्द है ॥८०॥

अर्थ– १ पहिलेगुणस्थानकेअंत ५ मिथ्यात्व घटे– १ येकांत १ विनय १ विपरीत १ संसय १ अज्ञान.
२ दुसरे सासादन गुणस्थानमें अनंतानुबंधीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ ये ४ घटे है.
४ गुणस्थानमें ७ घटे है अप्रत्याख्यानीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ त्रसघात वैक्रीयक १ वैक्रिमिश्र.
५ गुणस्थानमें. पांच इंद्री छठामन इनकी स्वच्छंदता ये ६ अर पांच थावरकी विराधना अर १ प्रत्याख्यानीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ, ऐसें १५ आश्रव घटे है.
६ वे गुणस्थानमे १ आहारक १ आहारकमिश्रे ये २ आश्रव घटे है.
८ में–१ हास्य १ रति १ अरती १ शोक १ भय १ जुगुप्सा, यह ६ आश्रव घटे.
९ में–१ स्त्री १ पुरुष १ नपुंसक १ संज्वलनक्रोध १ मान १ माया ये छहकी व्युछिति होहै.

१० दसवे सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानमें १ सूक्ष्म लोभ आश्रव घटे है.
१२ वेमें १ असत्यमन १ उभयमन १ असत्यवचन १ उभयवचन. ये ४ आश्रव घटे है.
१३ वेमें सातयोग (१ सत्यमन १ सत्यवचन १ अनुभयमन १ अनुभय वचन १ औदारिक १ औदारिक मिश्र १ कार्माण. ये ७ आश्रव) घटे है ॥ ८० ॥

१ मिश्रजोग १ कर्माणजोग इनकी व्युछति, १ पहले १ दुसरे १ चौथे १ तेरमें इन ४ गुणस्थानमें होय सो जानना.

॥ चारौ गतीमें ५७ आश्रव कथन ॥ सवैया ३१ ॥

वैक्रियक दोयवीना नर पचपनद्वार. आहारक दोयवीना त्रेपन तिर्यंच है ॥
औदारीक दोय, दोय आहारक, षंड वेद पांच वीना देवनीके बावनको संच है ॥
आहारक दोय, दोय, औदारिक, नरनारि, छहोवीना इक्यावन नर्कमें प्रपंच है ॥
चारौगति माहि ऐसे आश्रव सरूप जानि नमो सिद्ध भगवान जहानाहि रंच है॥८१॥

अर्थ– मनुष्य गतीमें ५५ आश्रव सामान्यपणे है, १ वैक्रियक १ वैक्रियकमिश्र, ये २ विना. तिर्यंच गतीमें सामान्यपणे ५३ आश्रव है, १ वैक्रियक १ वै० मिश्र १ आहारक१आ० मिश्र, विना. देवगतीमें ५२ आश्रवद्वार है, १ औदारिक १ ओ० मिश्र १ आहारक १ अ० मिश्र १ नपुंसक, विना. नरक गतीमे ५१ आश्रव है, १ आहारक १ आहारक मिश्र १ औदारिक १ औदारिक मिश्र १ स्त्री १ पुरुष इन ६ विना.

श्री सिद्ध भगवानकौ रंचमात्रभी आश्रव नही है, तिनको मै नमस्कार करूं हूं ॥ ८१ ॥

॥ चारौ गतीमें १२० प्रकृतीका बंध कहैहै ॥ ३१ सा ॥

औदारीक दोय, आहारक दोय, नर्क देवगति आयु आनुपूरवि दसौ वखानि है॥
विकलत्रै सूक्षम साधारण अपर्याप्त सोलैवीन सतचार देवकै प्रवानि है ॥
एकेंद्रि थावर आताप तीन प्रकृतिवीना नर्क एकसत एक, बंधजोग ठानि है ॥
तीर्थंकर आहारकवीना पशु सोसत्तरै, नरकै विसासौ. सब नासोशीवथानि है॥८२॥

अर्थ– आठकर्मकी १४८ प्रकृती है परंतु १२० प्रकृती बंधयोग्य है बाकी गर्भीत है. सो कहै है. देवगतीमें १०४ प्रकृतीका बंध है– १ औदारिक १ औ०अंगोपांग १ आहारक १ आ० अंगोपांग १ नरकगती १ देवगती १ नरक आयु १ देवआयू १ नरक गत्यानुपूर्वी १ देवगत्यानुपूर्वी ये १० अर १ बेइंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त. ये ६ ऐसे १६ प्रकृती विना १०४ प्रकृतीका बंध है. १२० प्रकृतीका वर्णन ८७ कवीतमें है ॥
नरकगतीमें सामान्यपणें १०१ प्रकृतीका बंध है, उपरके १६ येकेंद्री १ थावर १ आतप १ इन ३ विना तिर्यंचगतीमें ११७ प्रकृतीका बंध है, १ तीर्थंकर १ आहारक १ आ० अंगोपांग. इन ३ विना मनुष्यगतीमें १२० ही प्रकृतीका बंध है. इन १२० सब प्रकृतीका नाशकरै तब मोक्ष होय ॥ ८२ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें १२० प्रकृतीका बंध कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरह, येक येकसौ, चौहत्तरि, सतहत्तरिमान ॥ सतसठ, तेसठ, उनसठ,

ठावन, वाइस, सतरै दसमे थान ॥ ग्यारम बारम तेरम साता येक, बंधनहि अंत निदान॥सब गुणस्थानक बंध प्रकृती. इम निहचै आप अंवध पिछान॥८३॥

अर्थ—पहिले गुणस्थानमे ११७ प्रकृतीका बंध है, आहारक, आहारक मिश्र, तीर्थंकर, इन ३ विना.

॥ चौदा गुणस्थानमें १२२ प्रकृतीका उदय कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरै, इकसौ ग्यारै, सो अरु सोचौ, सत्तासीय ॥ इक्यासी, छहत्तरि, बहत्तरि, छयासठ, अरु साठ उदीय ॥ उनसठ, सतावन, वियालिस प्रकृती बारै उदयहै जीय ॥ चौदे गुणथानककी रचना, उदै भिन्नतू सिद्ध सुकीय॥८४॥

॥ चौदा गुणस्थानमें १२२ प्रकृतीकी उदीरणा है तिनका कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरै, इकसौग्यारै, सोचौ, सतासिजान ॥ इक्यासी, तिहत्तरि, उनहत्तरि, तेसठि, सत्तावन मान ॥ छप्पन, चौवन, उनतालिस तेरमें, अंतनही परवान॥ यह उदीरणा चौदै थानक करै ज्ञानबल सो सुज्ञान ॥८५॥

बंध, उदय, उदीरणाकौ त्रिभंगी कहे है. ऊपरके ३ कवित्तोंका अर्थ हमकौ नहिमिला.

॥ चौदा गुणथानमें नानाजीव अपेक्षा १४८ प्रकृतीकी सत्ता है, सो कहै है ॥ ३१ ॥ सा ॥

पहले सोअठताल, दूजैमें सोपैताल, तीजैमाहि सो सैताल, चोथेमें अठतालसो ॥ पांचैगून सोसैताल, छट्टे सातैं आठैं नौमैं दशमैं ग्यारमें ऊपशमिहै छीयाल सो ॥

आठे नौमे सोअठतीस, दशे ईकसो दोय, वारमें ईकसोईक आगे पंद्रै टालसो॥
चौदै तेरमे पीचासि सत्तानाश अविनाशि नमोलोकघन ऊर्ध्व राजु हैं सैंतालसो ८६

अर्थ–आत्मा परिणामतें कर्मबांधे तिसको जवताई उदय नहि आवे तव ताई सत्ता कहीये.
१।४ इन दोय गुणस्थानमें आठ कर्मके १४८ प्रकृतीकी सत्ता हे.
२ में मिथ्यात्व, मिश्रमिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व, इन ३ प्रकृतीवीना. १४५ की सत्ता हे.
३।५ इन दोय गुणस्थानमें मिश्र मिथ्यात्व प्रकृती वीना. १४७ प्रकृतीकी सत्ता हे.
६।७।८।९।१०।११ इन चार गुनस्थानमें उपशम श्रेणीको १४६ प्रकृतीकी सत्ता हे.
८।९ में ४ अनंतानुवंधी, ३ मिथ्यात्व, ३ आयु (देव पशु नरक) इनवीना. १३८ सत्ता हे.
१० में ऊपरके १० प्रकृती अर ३६ प्रकृतीका क्षय नववे गुण स्थानमें होयहे, इनवीना. १०२
१२ में ऊपरके ४६ प्रकृती अर सूक्ष्म लोभ १ इनवीना. १०१ प्रकृतीकी सत्ता हे.
१३ में ८५ प्रकृतीकी सत्ताहे. इन प्रकृतीका वर्णन आगेके पृष्ठमें हे, तहांते देखलेना.
१४ वे गुणस्थानमें ८५ प्रकृतीका नाश करके लोकके अंत (ऊर्ध्वलोक १४७ राजुके ऊपर) सिद्धस्थानमें आत्मा जाय है तिनको नमस्कार करूं हूं ॥ ८६ ॥

॥ येकसोवीस प्रकृतीका वंध अर उदय कहे हे. ॥ ३१ ॥ सा ॥ कवित्त ८७

देवगति आउ आनु पूरवि प्रकृति तीन वैंक्रियक अंग आहारक अंग चारहे ॥
अजस येआठों उंचै वंधै नीचै उदै देय संजूलन लोभवीना पंद्रैको नीहारहे ॥

हासरतिभै गीलानि नरवेद नरआउ सुक्षम अपर्याप्त साधारण धारहै ॥
आतापमिथ्यात येछवीस बंध उदै साथि, नीचैबंध उंचैऊदै छीयासि विचारहै ॥

अर्थ—आठ प्रकृती ऊपरके गुणस्थान बंधै नीचेके गुण स्थान उदै आवै, २६ प्रकृती जिस गुणस्थानमें बंधै तिसमे उदै आवै है, ८६ प्रकृती नीचेके गुणस्थान बंधै उपरके गुणस्थान उदै आवै है. सो कहै है. १देवगति१ देव आयु १ देवगत्यानुपूर्वी १ वैक्रियक शरीर १ अंगोपांग १ आहारक शरीर १आहा० अंगोपांग १ अजस, ये ८ प्रकृती ऊपरके गुणस्थानमें बंधै अर नीचेके गुणस्थानमें उदय आवैहै. ४ अनंतानुबंधी ४ अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानी ३ संज्वलन, लोभविना. १ हस्य १ रति १ भय १ जुगुप्सा १ पुरुषवेद १ मनुष्य आयु १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त १ आतप १ मिथ्यात्व, ये २६ प्रकृती जिस गुणस्थानमें बंधै तिस गुणस्थानमें उदै आवै है. १ नरक गति १ तिर्यंचगति १ मनुष्यगती· १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्यानु पूर्वी १ येकेंद्री १ बे इंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री १ औदारिकशरीर १ औदारिक अंगोपांग १ तैजस शरीर १ कार्माण शरीर ४ वर्ण ६ संस्थान ६ संहनन १ निर्माण १ अगुरु लघु १ आतप १ परघात १ स्थान १ उद्योत २ चाल १ बादर १ पर्याप्त १ जस १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ सुभग १ दुर्भग १ प्रशस्त १ अप्रशस्त १ आदर १ सुस्वर १ स्पर्श १ रस १ गंध. १ दर्शन विशुद्धी तीर्थंकर ये ५६ प्रकृतीनाम कर्मकी अर ५ ज्ञानावरणकी ९ दर्शनावरणकी २ वेदनी २ गोत्र ५ अंतराय १ दर्शन मोहनीय १ अरती १ शोक १ स्त्री १ नपुंसक १ संज्वलनलोभ १ आयु,

ये ३० प्रकृती, सबमिली ८६ प्रकृती भई, इनका बंध आठमा गुणस्थानका छट्टा भागपर्यंत है.
अर उदय तेरमा गुणस्थानका उपपांत समय (अंतके दोनसमय) पर्यंत है.

१ हुंडकको बंध पहले गुणस्थानमें, १ वामन १ कुब्जक १ स्वातिक १ परिमंडळ, इनको बंध दुसरे गुणस्थानपर्यंत, १ समचतुरश्रको बंध आठमा गुणस्थानके छट्टाभागपर्यंत है, ६ संस्थानका उदय १३ गुणस्थानपर्यंत है. १ वज्र वृषभ नाराचको बंध चौथेपर्यंत, १ वज्रनाराच १ नाराच १ अर्धनाराच १ कीलक, इन ४ कोबंध दूसरे गुणस्थानतक है, १ असंप्राप्तस्फाटिकको बंध पहले गुणस्थानमें है.

१ अर्धनाराच १ कीलक १ स्फाटिक इन ३ संहननका उदय सातमा गुणस्थानपर्यंत है,
१ नाराच १ वज्रनाराच इनका उदय ग्यारमातक, १ वज्रवृषभ नाराचको तेरमातक है.
१ निर्माणको बंध आठमा गुणस्थानके छट्टाभाग लौ, उदय तेरमा गुणस्थानपर्यंत है.
१ अप्रशस्त चालको बंध दुसरे गुणस्थान लौ, १ प्रशस्त चालका बंध आठमें गुणस्थानके छट्टा भागपर्यंत है, १ प्रशस्त १ अप्रशस्त दोउ चालको उदय तेरमें गुणस्थानपर्यंत है.
१ उधाराको बंध दुसरा गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थानपर्यंत है.
१ अगुरुलघु १ अपघात १ परघात १ उस्वास इनका बंध ८ वेके छट्टा भागलौ, उदय तेरमातक
१ निद्रानिद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानगृद्धी इनका बंध २ गुणस्थानपर्यंत, उदय छट्टापर्यंत.
१ नरक आयु १ गती १ आनुपूर्वी इनको बंध पहिले गुणस्थानमें, उदय चौथे गुणस्थानतक.
१ तिर्यंच गती १ तिर्यंच आयुको बंध दुसरा गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थानतक है.

१ तिर्यंच गत्यानुपूर्वीको बंध दूजा गुणस्थानलौ, उदय चौथे गुणस्थान पर्यंत है.

१ मनुष्यगतीको १ मनुष्य आयुको बंध चौथे गुणस्थानलो, उदय चौदमा गुणस्थानपर्यंत है.

४ विकल चतुष्क २।३।४।५ इंद्रीको बंध पहले गुणस्थानमें है, उदय दूजा गुणस्थानतक है.

१ औदारिक शरीर १ अंगोपांग इनको बंध चौथे गुणस्थानलौ है, उदय चौदमाका अंतपर्यंत है.

१ पंचेंद्रीको बंध आठमा गुणस्थानके छट्टाभागलौ, उदय चौदमा गुणस्थानलौ है.

१ तैजस १ कार्माणको बंध आठमाका छट्टा भागलौ है, उदय चौदमाका उपकांत समैतक है.

५ प्रकृती ज्ञानावर्णकी ४ दर्शनावर्णकीको बंध १० मापर्यंत उदय बारमाके अंत १४ समै पर्यंत है.

१ यश कीर्ति १ उंचगोत्र इनकाबंध दशमा गुणस्थानतक, उदय चौदमाका अंततक है.

१ सातावेदनीको बंध तेरमा गुणस्थान पर्यंत, उदय चौदमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ नीच गोत्रको बंध पहला गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ असाता वेदनीको बंध छट्टा गुणस्थान पर्यंत, उदय बारमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ नपुंसक बेदको बंध पहिले गुणस्थानमें है, उदय नवमा गुणस्थानके ४ भागलौ है.

१ स्त्री वेदको बंध दूजा गुणस्थान तक होय, उदै नवमा गुणस्थानके चतुर्थ भागलौ है.

१ संज्वलन लोभको बंध नवमा गुणस्थान पर्यंत है, उदै दशमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ अरति १ शोक इनको बंध छट्टा गुणस्थान पर्यंत, उदय आठमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ निद्रा १ प्रचला इनको बंध आठमा गुणस्थानका प्रथम भागतक, उदै ग्यारमातक है.

१ वटको बंध पहले गुणस्थानमें, उदय दूजा गुणस्थानपर्यंत है.

१ त्रस १ बादर १ पर्यासको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभागतक, उदय चौदमा पर्यंत हैं.

१ प्रत्येक शरीरको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभाग पर्यंत, उदय तेरमा पर्यंत है.

१ अस्थिर १ अशुभ इन २ प्रकृतीको बंध छट्टा गुणस्थानतक, उदय तेरमा पर्यंत है.

१ थिर १ शुभ १ सुस्वर इनको बंध आठमाका छट्टाभागलौ, उदय तेरमा गुणस्थानलौ है.

१ सौभाग्य, १ आदर इनको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभागलौ, उदै १४ गुणस्थान लौ है.

१ दुर्भाग्य १ दुस्वर १ अनादर इनको बंध दूजा गुणस्थान लौ, उदय चौदमा गुणस्थानतक होय.

१ तीर्थंकर प्रकृतीको बंध चौथे गुणस्थानते आठमाका छट्टाभागलौ, उदय चौदमा गुणस्थानलौ है.

॥ मिथ्यात्व गुणस्थानमें ६ लेश्यावालेका कर्मबंध कहे है ॥ ३१ सा ॥

विकलत्रै सूक्षम साधारन अपर्यापत नरकगति आनुपूर्वि नरक आवहे ॥
मिथ्या माहि लेश्यातीन बांधे इकसो सतरै नऊ वीना पीतके अठत्तरसौ भावहे ॥
येकेंद्रि थावर ओ आताप ईन तीन वीना पदम येकसौ पांच बंधको उपाव हे ॥
पशुगति आठ आनुपूरवि उदोत वीना सूकल एकसौ एक बंध पुन्य चाव हे ॥८८॥

अर्थ– १ वेंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ काहूतै नरूके सो सूक्ष्म १ अनंत जीवका समुदाय सो साधारन १ अपर्याप्त (अंतरालवर्ति) १ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ नरकआयु, इन ९ प्रकृतीवीना मिथ्यात्व गुणस्थानमें कृष्ण, नील, कापोत, तीनलेश्यावाले जीव ११७ बंधकरै.

ऊपर कहे ९ प्रकृती वीना मिथात्व गुणस्थानमे पीतलेश्यावाले जीव १०८ प्रकृतीका वंधकरै ॥ ऊपरके ९ अर १ येकेंद्री १ स्थावर १ आताप, इन १२ प्रकृती वीना मिथ्यात्वमें पद्मलेश्यावालेजीव १०५ प्रकृतीका वंधकरै ॥ ऊपरे १२ प्रकृती अर १ तिर्यंचगती १ तिर्यंच आयु १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १ उद्योत, इन १६ प्रकृती वीना शुक्ललेश्यावाले जीव मिथ्यात्व गुणस्थानमें १०१ प्रकृतीका वंधकरै है ॥ ८८ ॥

॥ चौदागुणस्थानमें ४ आयुकाबंध कहे है ॥ ३१ सा ॥

नरक आयु पहिले बंधै, उदै चौथेलौ है. पसु आउ दूजेबंधै, उदै पांचमै कहि ॥
नरआउ चौथेलग बंध, उदै चौदहलौ. सूरआउ सातैबंध, उदै चारमैलहि ॥
नरपसु जीव नरक पशु नर आउ बंध चौथेते आगै चढिवेकि सक्ति नगहि ॥
चारौआउ तीजे गूणथानकमें बंधैनाहि. आउनासभये सिद्धतीनकौ वंदौसहि॥८९॥

अर्थ– १ नरक आयुको बंध मिथ्यात्व गुणस्थानमेही है, उदै चार गुणस्थानतक है.
१ तिर्यंच आयुको बंध १ मिथ्यात्व १ सासादन, दोय गुणस्थानमें है, उदै ५ गुणस्थानतक है ॥
१ मनुष्य आयुको बंध चौथे गुणस्थान पर्यंतहो है, उदय चौदमें गुणस्थान पर्यंत है.
१ देव आयूकोवंध सातमा गुणस्थान पर्यंत है उदय चोथे गुणस्थान पर्यंत है आगैनही.
देव आयूका बंधवालामुनी ग्यारमा गुणस्थानतक चढसकैहै कोउबाधानाहीं
कोऊ मनुष्यनै, सरल वा वक्र परिणामकरी नरक आयु तथा तिर्यंच वा नरआयु बांधी होय,

कोऊ तिर्यंचने, सरल वा वक्र परिणामकरी नरक वा पसू तथा मनुष्य इनकी आयूबांधी होय, ऐसें आयुबंधवाला जीव चौथे गुणस्थानतक चढे आगै नजाय यह नियम है ॥
अर चारौ आयूमें कोईही आयूका बंध तीजै मिश्र गुणस्थानमें होय नही है.
नरक, तिर्यंच, देव,मनुष्य, इन चारौ आयूकर्मका नाशकरीके सिद्धपरमेष्टी भये है तिनकौ भावसहीत वंदो हौ ॥ ८९॥

॥ उपशमीके ११ गुणस्थानके चढने पडनेकी चाली कहैहै ॥ छपै ॥

मिथ्या मारग चार, तीन चउ पांच सात भनि ॥ द्वितिय एक मिथ्यात, तृतिय
चौथो पहलो भनि ॥ अव्रत मारग पांच तीन दोय एक, सात पन ॥ पंचम
पंचसु सात चार तिय दोय एक भन ॥ छट्टे षट इक पंचम. अधिक सात आठ
नव दस सुनौ ॥ तिय अघ उरध चौथे मरन ग्यार बार विन दो मुनौ ॥९०॥

अर्थ–कोई जीव मिथ्यात्व गुणस्थानतै निकसी तिसरे गुणस्थानमें जाय, कोई जीव चौथे गुणस्थानमें जाय, कोई पाचवे गुणस्थान चढे, कोई सातवे जाय, ये चार मारग चढनेके है ॥
दुसरा सासादन गुणस्थानका येकमार्ग है, सासादनतै पडे तव मिथ्यात्व गुणस्थानमें जाय.
तिसरे गुणस्थानके दोय मार्ग है, ऊपर चढेतो चौथेमे जाय. नीचे पडे तो पहिलेमे आय हैं ॥
चौथे गुणस्थानके पांचमार्ग है; तलै पडैतो तिसरेमें वा दूसरेमें वा पहिलेमे पडै है अर चौथे गुणस्थानतै ऊपर चढे तो पाचवा गुणस्थानमें जाय वा सातवा गुणस्थानमें चढे ॥

पांचवा गुणस्थानके पांच मार्ग है, पाचवातै ऊपर चढैतो सातवा गुणस्थानमें जाय. अर पांचवा गुणस्थानतै नीचै पडैतो चौथमें आवे वा तीसरेमें वा दूसरेमें वा पहिलेमें आवै ॥

॥ छट्टे गुणस्थानके छहमार्गहै, छट्टेतै ऊपर चढैतो सातवे गुणस्थानमें जाय अर नीचै पडैतो पांचवामें वा चौथेमें वा तीसरमें वा दूसरेमें वा पहिले गुणस्थानमें जाय.

१ सातवेगुणस्थान १ आठवे गुणस्थान १ नवमा गुणस्थान १ दशमा गुणस्थान. ये ४ गुणस्थानमें उपसम श्रेणी है, अर क्षायक श्रेणी है. इन चारौ गुणस्थानके उपसम श्रेणीकी तीन तीन चाल है तले पडेतो अनुक्रमते एक एक गुणस्थान उतरे, अर ऊपर चढैतो अनुक्रमेते एक एक गुणस्थान. चढै, इन चारो गुणस्थानमें मरण करैतो तौथे गुणस्थानके परिणाम होजाय तव अव्रतरूप कार्मांण देह निकसी देवगतीमें लेजाय यह नियम है.

ग्यारवा गुणस्थानके दोय मार्ग है, तले पडैतो दशमा गुणस्थानमें आवै. अर मरेतो चौथे गुणस्थानरूप अव्रती होय, देवगतीमे ले जाय, ग्यारवा गुणस्थानवाला ऊपर नही चढै है.

क्षायक श्रेणी वाला मुनी तले नहि पडैहै, अर ऊपर चढैतो ग्यारमें गुणस्थान नहिजाय, बारमें गुणस्थानमें जाय, अर बारमेके अंत तेरमेके आदि केवलज्ञान उपजे है.

तेरमें गुणस्थानतै चौदमें गुणस्थानमें जाय, अर चौदमेके अंत मोक्ष पावै है ॥ ९० ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें जीव मरिकरि कौन गतीमें जाय सो कथन ॥ छप्पै ॥

मिश्र खीन संजोग तीनमें मरनन पावै ॥ सात आठ नव दसम ग्यार मरि चौथे

आवै ॥ प्रथम चहूगतिजाय दुतिय विन नरक तीनगति ॥ चौथे पूरव आव
बंधतै चहुगति प्रापति ॥ पंचम ग्यारम सातगुणमरे सुरगमे औतर है ॥
बंदौ इक चौदम स्थानक तजी अजर अमर पद सिवपद लहै ॥ ९१ ॥

अर्थ–तिसरा मिश्रगुणस्थान, बारमा क्षीण कषाय गुणस्थान, तेरमा सयोग केवली गुणस्थान- इन तीन गुणस्थानमें जीव मरण नही पावै यह नियम है ॥ सातमा, आठमा, नवमा, दसमा, ग्यारमा, ये पांच गुणस्थान उपशमके है. तहां मरण करैतो चौथे गुणस्थान आवै, अंत समय अव्रतरूप कार्माण निकसै देवगतीमे लेजाय है ॥

मिथ्यात्व गुणस्थानमें मूवाजीव चारौही गतीमें जाय, परंतु देवगतीमे ग्रैवयकतक जाय, ॥ दूसरे गुणस्थानमें जीव मरण करी १ तिर्यंच १ मनुष्य १ देवगती. इन ३ गतीमेंसे कोउयेक गतीमें जाय. जीवनें मिथ्यात्वके परिणामतै नरक आयु, देवआयु, तिर्यंचआयु, मनुष्यआयु, इन चारो आयूमें कोऊएक आयूका प्रथम बंधकीया होय अर पीछै सम्यक्त परिणामतै चौथा गुणस्थान होय मरण करे तो जिस आयूका बंधकीया होय उस गतीमे जाय, चारो गतीमे कोई १ गतीमें जासके परंतु इसिमें इतना विशेष है की ! सम्यक्ती जीव मरिकरी तीजा नरक तक जाय आगै ४।५।६।७ में नजाय अर क्षायक सम्यक्तवाला पहले नरकमेहि जाय आगे २।३।४।५।६।७ मे नजाय यह नियम है. अर प्रथम तिर्यंच गतीका बंधकीया होय पीछैं सम्यक्त ग्रहणकरी मरणकैरे तो भोग भ्रूमीमें तिर्यंच हो जाय,

मिथ्यात्व गुणस्थानमें देवगतीका बंधकीया होय, पीछै सम्यक्त ग्रहणकरी मरणकरै तो स्वर्गमेंहि औतरे. सम्यक्ती मरणकरी पातालवासी देव, ज्योतिषी देव, व्यंतरवासी देव, इनमें नहि उपजै है, सम्यक्त ग्रहण करनेके पहले कोई आयूका बंध नहीकिया होयतो, सम्यक्ती मरिकरी स्वर्गमेंही औतरे बडा देवहोय, और गतीमें नजाय ॥

पांचमा, छट्ठा, सातमा, आठमा, नवमा, दसमा, ग्यारमा, इन सातों गुणस्थानमें मरण करै सोजीव आवश्य देवगतीमें स्वर्गहीजाय उपजे, भुवनत्रिकमें नजाय ॥

चौदमो अयोग केवली गुणस्थानमें अंतके दोय समयै ७२।१३ पिच्यासी प्रकृतीका नाश करिकै पंडित पंडित मरणसूं देहका संबंध छूटै सो येक समयमें मोक्ष जाय, जहां जरा अर मरण नही, ऐसा मोक्षपद अनंत सुखका निवास प्राप्त हुवा होय, तिन सिद्धपरमेष्ठिनिकों मेरा वारंवार नमस्कार है ॥ ९१ ॥

॥ पांचलब्धी वर्णन कहे है ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

थावरतै सैनिहोय यहि खै ऊपसम है, दान पूजा उद्योत विशेष ऊपयोग है ॥
गूरु ऊपदेश तत्वज्ञान सोहि देसनाहे, अंतकोडाकोडि कर्मस्थीतिकों प्रायोगहै॥
जगमे अनंतवार चारलब्धिपाइ ईन कर्णलब्धिवीना समकीत कों न जोग है ॥
अधो अपूरव अनिवृत्तिकर्ण तीनकरै मिथ्यामाहि पीछै चौथे सम्यक नीयोगहै ९२

अर्थ– अनादि मिथ्यादृष्टी वासादि मिथ्यादृष्टी जीव अनादिकालका येकेंद्रीमें भ्रम्या, सो

कालपाय कर्मोंका क्षयोपशम हूवा (कपायका रस मंदपडा) तव थावरते निकसि जीव सैनि पंचेंद्री होय है, तव तिसकानाम क्षयोपशम लब्धि कहीये.

यह जीव काल पायकै शुभकर्मके उदयतै दान, पूजा, संजम, शील, इन शुभपरिणाम रूप परिणमें है, तव तिसकानाम विशुद्धि लब्धि कहीये.

कालपाय पुन्यकर्मके उदयतै सतगुरुका साचा उपदेश पाय तत्वका जानपना होयहै, तव तिसकौ देशना लब्धि कहिये.

काल पाय महाव्रतभी धरै, महिना महिना उपवास करै महा तपस्या करिकै शरीर क्षीण-करै है, तव तिसकै पुन्यवल करिकै आयु कर्मविना सातौ कर्मकी स्थिति अंतःकोडाकोडी सागर प्रमाण राखना, तिसका नाम प्रायोग्य लब्धि कहीये.

कोटकौ कोटने गुणिये वो संख्याकौ कोडाकोडी कहै है, कोटके ऊपर अर कोडाकोडीके माहि संख्याकौ अंतःकोडाकोडी कहै हैं.

इस४ लब्धीमें ३४ बंधापसरण हो है, १ क्षयोपशम १ विशुद्धि १ देशना १ प्रायोग्यता, ये ४ लब्धि संसारमें अनंतवार पाई परंतु पांचमी कर्णलब्धि पायेविना जीवके सम्यक्तका लाभ होयनही, है कर्णलब्धि आवै जब सम्यक्त पावै यह नियम है ॥

१ कर्णनाम परिणामका है, कर्णलब्धिका अर्थ ऐसा है ! मिथ्यातके तीनभाग करै. येक अधः-करण, येक अपूर्व करण, येक अनिवृति करण, आन्यवृत्तिके अंतसमैमें सम्यक्त होय है.

१ ऊपरले समयके परिणाम, नीचेके समयके परिणाममें संख्यादिक करि समान होय मिलै, तातै अधःकर्ण कहीये. अधःकर्णमें समय समयमें अनंतगुणी विशुद्धता होयहै अर स्थितिकांड घातादिक नहीहोय.

१ अपूर्व कर्णमें, अपूर्व अपूर्व परिणाम होहै. कोई समयके परिणामकौ कोई समैका परिणाम नहिमिले है, तातै याका नाम अपूर्व कर्ण है. यामें श्रेणी, गुण संक्रमण, स्थितिकांड घात, अनुभाग कांड घात, ये ४ कार्य होय है.

१ अनिवृत्ति करणकें येक समयमें तिष्ठते जीव, तिन सबका परिणाम समान होहै ॥ गुणस्थान घाटि बादि पलटणी नाही, तब सम्यक्त होय, चौथा गुणस्थान कहजावे है ॥ ९२ ॥

॥ प्रमादके ३७५०० भेद है सो, कहै हैं ॥ छप्पै ॥

विकथारूप पचीस और पणवीस कषायनि ॥ गुणतै छसैसवा, पांच इंद्री मनसौं गुनि ॥ पौनाचार हजार, पांच निद्रासौ गुनिये ॥ सहस पौन उनईस नेह अरु मोहसु गुनिये ॥ साढेसैतीस हजार सब भेद प्रमाद प्रवानिये ॥ छट्टे गुनस्थानकलौं कहे, त्याग आपथिर ठानिये ॥ ९३ ॥

अर्थ–विकँथा २५ है, तिनकौ २५ कषायसे गुणिये, तब सवा छसै ६२५ भेद भये. तिनकौ ५ इंद्री १ मन इन छसौ गुणिये, तब पौनाचार हजार ३७५० भेदभये. तिनकौ ५ निद्रासै गुनिये, तब पौना उगनीस हजार १८७५० भेद होहै.

तिनकौ १ स्नेह १ मोह इन दोसौ गुनिये, तब सादा सेतीस हजार ३७५०० भेद भये. ये प्रमादके भेद, प्रथम गुणस्थानसे छट्टे गुणस्थान पर्यंत है, ताते छट्टे गुणस्थानका नाम प्रमत्त है. सातवे गुणस्थानका नाम अप्रमत्त है, तहां अंसमात्रभी प्रमाद नहीं है. ऐसा प्रमादकों त्यागीकै आप आतमामें स्थिरभूत होय, तब संसारका भ्रमण मीटे, मोक्षका सुख प्राप्त होय है ॥ ९३ ॥

* राजकथा, भोजकथा, स्त्रीकथा, चोरकथा, धन, वैर, परखंडन, देश, कपट गुणवंध, देवी, निष्ठुर, शून्य, कंदर्प, अनुचित भंड, मूर्ख, आत्मप्रशंसा, परवाद, ग्लानि, परपीडा, कलह, परिग्रह, साधारण, सांगीत.

॥ तीनघाट नवकोट मुनीकी संख्या ॥ सवैया २३ सा ॥

पांच किरोड तिरानवै लाख हजार अठानवै दोसै छजानो ॥ जीव छटे गुणतै
अध सातमे, ग्यारसै छ्यानवै चारि ठिकानो ॥ आठ नवै दस बारह चौदहमे
उनतीस निवै परवानो॥तेरमे आठहि लाख हजार अठानवै पांचसै दोय वखानो९४

अर्थ—छट्टे गुणस्थानमें मुनि पांचकोट, तिरानवेलाख, अठानवे हजार, दोसे छे है. ५९३९८२०६
सातवे गुणस्थानमें दोयकोट, छ्यानवेलाख, नवेनौ हजार, येकसौ तीन है. २९६९९१०३
आठवेमें २९९ नववेमें २९९ दशवेमें २९९ ग्यारवेमे २९९ इन ४
गुणस्थानमें उपसम श्रेणीमांडे, है ताके चारोके जोड. ११९६
आठवेमें ५९८ नववेमें ५९८ दशवेमें ५९८ वारवेमें ५९८ चौदवेमें, ५९८

इन ५ गुणस्थानमें क्षायक श्रेणीमांडे, है ताके चारोंके	२११०
तेरमा गुणस्थानमें उत्कृष्ट केवली भगवान येकैकाल होवे तो	८९८५०२

नव स्थानका सब जोड. आठकोटि, निन्यान्वेलाख, निन्यान्वे हजार, नौसें, सत्यांनवे. ८९९९९९७

॥ भावार्थ ॥ अढाई द्वीपमें मुनी संख्या उत्कृष्ट होवे तो येके कालमें, छट्टे गुणस्थानतें चौदमा गुणस्थान पर्यंत, तीन घाट नवकोट मुनी होय है. इनतें वधती नही पावे ॥ ९४ ॥

पहले गुणस्थानमें अनंतानंत जीवहै, दुसरेमें १३ कोट तीसरेमें ५२ कोट, चौथेमें ७०० कोट, पांचवेमें १०४ कोट.

॥ १४ गुणस्थानमें १४८ प्रकृतीका क्षय ॥ छपै ॥

॥ सात प्रकृतिको घात ठीक सातम गुणठानै ॥ तीन आवनहि होय
नवम छत्तीसो भानै॥दशमें लोभ विदार, बारमें सोलमिटावै॥ चौदमेके
अंत बहत्तरि तेर क्षिपावे ॥ इमतोरिकर्म अठतालसौ मुक्तिमाहि सुख
करतहे॥ प्रभुमोहि वुलावो आपढिग हमहूं पायनि परत है॥ ९५ ॥

अर्थ— अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, मिश्रमिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, इन ७ प्रकृतीको घात सातमें अप्रमत्त गुणस्थान पर्यंत कहांही येक गुणस्थानमें होय है॥ सो अप्रमत्त दोय प्रकार है, १ स्वस्थान अप्रमत्त १ सातिशय अप्रमत्त (श्रेणीकेसन्मुखहोय) मोक्षगामी जीवकै येक मनुष्य आयु है. नरक, पशु, देव, इनतीन आयुकी सत्ता होय नही.

नववे गुणस्थानमें ३६ प्रकृतीकाक्षय होय है ॥ दशमें गुणस्थानमें १ सूक्षमलोभका क्षय होय. ज्ञानावरणकी ५ प्रकृती—मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, केवल. दर्शना वर्णकी प्रकृती ६ चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला. अंतरायकी ५ प्रकृती—दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य. इन सोलां १६ प्रकृतीका नाश वारमे गुणस्थानमें होय है ॥

सातवे गुणस्थानमें ७ प्रकृती, नवे गुणस्थानमे ३६ प्रकृती, दशमें गुणस्थानमे १ प्रकृती, वारमे गुणस्थानमें ३६ प्रकृती. ऐसें ६३ प्रकृतीका क्षय होय, तव १३ वे गुणस्थानमें केवलज्ञान होहै ॥ चौदवे गुणस्थानके अंतमें दोय समय वाकीरहे तव पहले समयमे ७२ अर दूसरे समयमें १३ ऐसे ८५ प्रकृतीका* क्षयकरै तव आत्मा मोक्षकौ जावै है, तहां अनंत सुखका अनुभवले. मोक्षके येक समयके सुखकौ उपमा देनेकौ तीन लोकमें कोऊभी सुख नाही ॥ हे सिद्ध परमेष्ठी ! मै आपके चरणकमलकौ नमस्कार करूहूं मोकौ आपढिग बुलावो. ॥ ९५ ॥

* ८५ प्रकृतीका वर्णन १।२।३।८।११।१३ पृष्ठमे है, तहां देखलेना. इन गुणस्थानमें कोई प्रकृती क्षयहोय नहीं.

॥ नववे गुणस्थानमें ३६ प्रकृतीका क्षय हो है ॥ ३१ सा ॥

प्रत्याख्यानि चार, औ अप्रत्याख्यानि चारभेद, संजुलन तीन, नवनो कषाय जा-
नीये॥ येकेंद्रि विकलत्रय थावर आताप उदोत सूक्षम साधारन जीवनिकौ मानीये॥
निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचला अरु स्त्यानगृद्धि नींदतीनौ महाखोटि कबहून ठानीये॥
नरक पशु गति आनु पूरवि प्रकृति चार नवे गूणथानक ये छत्तीस मानीये॥९६॥

अर्थ—प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ. संज्वलन क्रोध, मान, माया, हास्य, रती, अरती शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री, पुरुष, नपुंसक, ये २० प्रकृती कषायकी. येकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौइंद्री, स्थावर, आताप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारन ये ९ प्रकृती जीव विपाकी की ॥ निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ये ३ निद्रा महा खोटी है, चित्तमें कबहू नलाइये ॥ नरकगति, पशूगती, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, ये ४ सब मिलिके ३६ प्रकृती भई. इसीका नववे गुणस्थानमें क्षपक श्रेणीवाला मुनी सत्तातें नाशकरे है ॥ ९६ ॥

॥ तेरमे गुणस्थानमें ७ त्रिभंगी ॥ छपै ॥

सातारागु आश्रव द्वार इक साता कहिये ॥ चौदे भाव, प्रमान पिच्यासी
सत्ता लहिये ॥ अस्सी चौरासि इक्यासि और पिच्यासी ॥ यह सत्ता
चउभेद, विशेष जिनेश्वरभासी ॥ इक कमी चालीस उदीरना, उदे बिया
लीस मानिये ॥ यह तेरम गुणस्थानमें सात त्रिभंगी जानिये ॥ ९७ ॥

अर्थ— १ सत्यमन १ अनुभयमन १ सत्यवचन १ अनुभयवचन १ औदारिककाय १ औदारिक मिश्र १ कार्माण. इन ७ आश्रवतें केवली भगवानके कर्म आवे है ॥
तेरवे गुणस्थानमें १४ भाव पाइये, सो भावत्रिभंगीतें, देखिलेना, कवित्तमे है
तेरमे गुणस्थानमें ८५ प्रकृतीकी सत्ता पाईये, किसी जीवके ८० प्रकृती सत्ता पाईये, ४ आहारक चतुष्क १ तीर्थंकर प्रकृती विना किसीकों तीर्थंकरविना ८४ की सत्ता पाइये. किसी

जीवके आहारक चतुष्क विना ८१ प्रकृतीकी सत्ता पाईये, ऐसे सत्ताके ४ भेद है, सो नाना जीव अपेक्षा है. सर्वज्ञ वीतराग जिनेश्वर देवने दिव्यध्वनीकरी द्वादशांग सूत्रमें कहे है ॥ तेरमे गुणस्थानमे ३९ प्रकृतीकी उदीरना (कर्मकौ जोरावरीते उदय आणिकै क्षपावे) है, अर ४२ प्रकृतीका उदये है. ८५।८४।८१।८० ये सत्ताके चार भेद अर भाव, उदै, उदीरना ये ३ भेद, ऐसौ ७ त्रिभंगी तेरमे गुणस्थानमें जाननी ॥ ९७ ॥

॥ चौदमे गुणस्थानमें ७ समुदघात ॥ ३१ ॥ सा

पहले समैमें करै दंड, आठमें सवरै. परदेश आतमा औदारीक प्रवानीये ॥ दूजे कपाट होय, सातमे संवरे. सोय प्रतर छट्ठे मिश्रजोग औदारीक जानीये ॥ तीसरै प्रतर, चौथे पूरन सर्वलोक, संवरे पांचमें पूरन कारमान मानीये ॥ आठ समै माहिजात केवल समूदघात निर्जरा असंख्य गूनि देव सो वखानीये ॥ ९८ ॥

अर्थ–आयूके छमहिना वाकी रहै पीछे केवलज्ञान उपजै तेते मुनी नियमथकी समुदघातकरे है, अर जिनके छहमहिना पूर्वी केवलज्ञान उपज्या होय ते समुदघात करेभी अर नाहीभी करै, करनेका सर्वथा नियम नाही. चौदमे गुणस्थानके अंत, आठ समय वाकी रहिजाय तव, आयु-कर्मके स्थिति समान तीन कर्म (गोत्र, वेद, नाम) की स्थिति होनेके अर्थि, केवली भगवानके आत्माका प्रदेश शरीके वाहेर निकसै है, पहिले समयमें प्रदेश दंडवत् निकसै सो आठवे समयमें संवरे (निमटे) है, तहां औदारि काय योग है ॥

दूसरे समैमे प्रदेश कपाटरूप फैले, सो सातवे समैमें संकोचै है. तहां औदारिक मिश्रयोग है ॥ तीसरे समैमें प्रदेश प्रतररूप (विलोनी रईका फूलसम) फैले सो छट्टे समैमें संकोचे है. तिसरे समै कार्माण योग है, और छट्टे समैमें औदारिक मिश्रयोग है.

चौथे समैमें आत्माके प्रदेश लोकपूरन (तीन लोकमें सर्वत्र जागा) फैले, सो पांचवे समयमे संकोचरूप होय है, चौथे अर पांचवे समयमें कार्माण योग है. या प्रकार आठ समयमे केवलज्ञानी केवलसमुद्घात करके तीनोकर्मकी स्थिति आयुकर्म बराबर (समान) करै, जो समय समय निर्जराथी तिससमय असंख्यातगुणी निर्जराकरै, तिस आत्माकौ देव कहीये ॥ ९८ ॥

॥ इति गुणस्थान वर्णन समाप्तं ॥ ५ ॥

॥ जिनवाणीके पदोकी संख्या. अथ ज्ञानवर्णन ॥ सवैया ३१ ॥ सा ॥

सोलासै चौतीस कीरोर तिराऐसि लाख अठत्तरसैं आठऐसि अक्षरये लेखीये ॥
इक्यावन कोट आठलाख सहसचौरासि छसै साडे ईकईस सीलोकये पेखीये ॥
ताकौ पद एकजोर, एक सौबारै कीरोर तीरासि लाख सहस अठावन देखीये ॥
पंचपद येतेसब द्वादशांग जीनवाणि वंदौ मनवच काय ज्ञानकौ विशेषीये ॥९९॥

अर्थ–श्रीसर्वज्ञ जिनेंद्र देवके दिव्यध्वनी (जिनवाणी) कौ, चार ज्ञानकेधारी गणधरदेवने द्वादशांगरूप रचना गूथी (करै) है, तिस द्वादशांग वाणीके पदौकी संख्या कथन करै है. जिनवाणीके एकपदके अक्षर १६३४८३०७८८८ है. ये अक्षरके श्लोक करिये (३२ अक्षरका १ श्लोक) येक पदके श्लोक ५१०८८४६२१॥- भये, इतने श्लोकका येक पद भया. अव

द्वादशांगवाणीके सब पदोकी संख्या कहेहै. येकसौ, बाराकोट, तिरासिलाख, अठावन हजार, पांच पद है ११२८३५८००५ इस भांति जानने, ऐसें द्वादशांग वाणीकौ मन वचन काय करि भाव सहित वंदोहौ स्मरौहौ पढौ हौ ध्यावोहो तिसतै भेद विज्ञान होय, ग्यानकी दृष्टी होयहै ॥९९॥

॥ अक्षर गिणतीके ११ भेद कहे है ॥ छपैं ॥

ग्यारअंक पदयेक, दस सबपद जाणी ॥ पूरवचौदे अंक, वीस अक्षर जिनवाणी ॥ उनतिस अंक मनुष्य, पल्य पैतालिस अक्षर ॥ सरसौ कुंड छियाल, डेढसे थिति अक्षरवर ॥ इकतीस अंक पल कलपके जंबू फलावटि दस वरन ॥ सब वातवलै ग्यारै वरन धन जैनवैन संसै हरन ॥ १०० ॥

अर्थ– १ जिनवाणीके येक पदके ग्यार अंक–१६३४८३०७८८८ है,
१ द्वादशांग वाणीके सब पदौके दशअंक ११२८३५८००५ है ॥
१ पूरवके चौदह अंक– ७०५६०००००००००० सत्तरलाखकोट, छप्पन सहस कोट. ॥
१ द्वादशांग वाणीके अक्षरकै वीस अंक १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५, है.
१ पर्याप्त मनुष्य २९ अक्षर प्रमाण है. ७९२२८१६२५१४२२६४३४७५९३५४३९५३६०,
१ पल्यके पैतालीस अक्षर है, येक योजनका उंडाचौडा गोल कुंड रोमकरि भरिये, सो सो वर्षसे येक येक रोम निकारिये, जब कुंडखाली होय, तिसका नाम पल्य कहिये. वो ४५ अक्षर है. ४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२०००००००००००००००००० ॥

१ लाख योजनका लंबा चौडा, हजार योजनकाउंडा कुंडकरी सरसु सिगाऊ भरिये ते सरसू ४६ अंक है. ऊपरके माफक तीन कुंड संपूर्ण भरके खाली करै, तहां डेदसे अक्षर प्रमाण सरसूं माई है ॥

१ कल्प काळके ३१ अंक है, दसकोडाकोडी पल्पका ये सागर अर वीस कोडाकोडी सागरका येक कल्पकाळ कहीये, तिस एक कल्पकाळके ३१ अंक प्रमाण पल जानने.

१ जंबूद्वीपकौ चौरसकरि तिसका घनाकारक फैलाइये तो तिस घना कारके, प्रमाण योजन दस अंक ७९०५६९४१५० है. अरस्थूलयोजन दश अंक ७५०००००००० हो है ॥

१ वात वलोकी फलावट ११ अंक १०२ ४१९८३४८७ प्रमाण है, जगत प्रतरको गुणाकार ११ अंक है. ऐसें ग्यारा अंक गिणतीके भेद, जिनेंद्र देवके दिव्य ध्वनीमें कहेहै, ती दिव्यध्वनी धन्य है, सत्य है, जिनके सुनवेते अनादि कालका संशय दूर होजाय है ॥ १०० ॥

॥ सप्तभंग जिनवाणीके भेद कहे है ॥ सवैया ३१ ॥

द्रव्य क्षेत्र काल भाव आपने चतुष्टय अस्ति, परके चतुष्टै सेन नास्ति दरवहे ॥
आपसे है परसेन येक समै अस्ति नास्ति ज्योके त्यो न कहेजाहि अव तव तच्छ है ॥
अस्तिक है नास्तिका अभाव अस्ति अव तव नासक है, अस्तिनाहि नाश अव तव है॥
येकठे कहे न जाय अस्ति नास्ति अव तव स्यादवादसेति सात भंग सधे सव है १०१

अर्थ–१ प्रत्येक पदार्थ अपने द्रव्य क्षेत्र काल भाव, (चतुष्टय) अपेक्षासे अस्तिरूप (आपसा) है, तांते यह, स्यात (कथंचित) अस्ति कहीये.

१ अर वोही पदार्थ अन्य द्रव्य क्षेत्र काल भाव, चतुष्टय अपेक्षा से नास्तीरूप है, आपसा नाही है, तातै यह स्यात् नास्तिकहीये.

१ अपने अपेक्षा करि अस्तिरूप है, परके अपेक्षा करि नास्तिरूप है, तातै एकै कालमें पदार्थ स्यात् अस्ति नास्ति कहीये.

१ पदार्थका स्वरूप एकांतकरि ज्योका त्यो सर्वथा कह्या न जाय, अस्तिकहै तो नास्तिका अभावआवे, नास्तिकहै तो अस्तीका अभाव आवै, अस्ति नास्ति येके काल कह्या न जाय ताते स्यात् अवक्तव्य है.

१ जो सर्वथा अस्ति कहिये तो नास्तिका अभाव होयगा, द्रव्य अस्ति रूप है, परजाय नाहीं तातै, पदार्थ स्यात अस्ति अवक्तव्य कहीये.

१ दव्यके नास्ति कहिये तो अस्तिताका अभाव होय, पदार्थ नास्तिरूप है पररूप कह्या जाता नाही. तातैं यह स्यात् नास्ति अवक्तव्य कहीये.

१ अस्तीके कहनेमें नास्तिका अभाव, नास्ति कहनेसें अस्तीका अभाव, द्रव्य अस्ति नास्ति येके कालमे है परंतु कह्या जाता नाहीं, वचन क्रमवर्ति है ताते स्यात् अस्तिनास्ति अवक्तव्य कहीये. ये ७ भंग अधीक नही अर कम नही है, लोकके अनुप्रश्नके वश अर व्यवहारमें चलन साध्य है, तातै पदार्थोंका अनेकांतरूप सधे है अर व्यवहारमे बाधा आतिनाही. जे सप्त भंगनही सधै, ताकौ एकांतरूपमे अनेक दोष आते है ॥ १०१ ॥

॥ जीव (आत्माकी) महिमा वर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

जीव है अनंत, एक जीवके अनंतगूण, एक गूणके असंख परदेस मानीये ॥
एक परदेसमै अनंत कर्मवर्गनाहै, एक वर्गना अनंत परमानु ठानीये ॥
अनूमैं अनंत गूण, एक गूणमैं अनंत परजाय एककै अनंतभेद जानीये ॥
तीनतेहुं ये अनंत तातै होहिंगे अनंत सबजानै समैमाहि देवसो वखानीये॥१०२॥

अर्थ–जीव अपनी अपनी सत्तालिये है, जीव अनंत है, जीव राशीके संख्याका प्रमाण द्विरूप वर्ग धारामें कहां है तहां ते जाननां अर येक जीवके अनंत गुण है, ते जीवराशीते भी अनंत गुणे है तोभि, आलापकरी अनंतही कहेजाय है. जीव है सो असंख्यात परदेशी है निश्चय नयकरी जीव अर गुण इनमे भेद नाहि है, अभेद है, तातै एकगुण असंख्यात असंख्यात परदेशी जानने ॥ जीवकै येकेक परदेश ऊपर अनंत अनंत कर्म वर्गना है, सो संसारी जीवके प्रदेशमें एकावगाहि होय, परस्पर तिष्ठहै. येकेक कर्म वर्गनामें अनंतानंत पुद्गल परमाणू है, क्योकी अनंत परमाणू मिलेविना कर्मरूप वर्गना होवै नाहि, यह नियम है ॥ अर पुद्गलके येकेक परमाणूमें अनंते गुण है, येकेक गुण अनंतानंत परजाय रूप परिणमें है, येकेक परजायके अनंतानंत भेद है, सो जानना. द्रव्यके भी अनंत भेद है, सो वर्तमान कालमें अनंत प्रकार रूप परिणमे है॥ वर्तमानतै अतीत कालमें अनंत अर अतीत कालतै अनागत कालमें अनंत गुणे व्हे है. ये सबको एक समैमे साक्षात् देखै अर जानै सो सर्वज्ञ देव कहीये ॥ १०२ ॥

॥ ग्रंथके समाप्तीके अंत मंगल ॥ छपै ॥

नमहु नाम अरिहंत, थुनहु जिनबिंब कलिलहर ॥ परमौदारिक दिव्यबिंब, निर्वाण अवनिपर ॥ कहौ कल्यानक काल, भजहु केवल गुण ग्यायक ॥ यह षटविधि निक्षेप महा मंगल वरदायक ॥ मंगल दुभेद सब जायगल, मंगल सुख लहै जीवरा ॥ यह आदि मध्य परजंतमैं मंगल राखो हीयरा ॥ १०३ ॥

अर्थ—१ प्रथम अर्हंत देवकौ नामलेना नमस्कार करना सो महामंगल कारी है.

१ जिनेश्वर देवके बिंबकी स्तुती करना सो पापकी हरन हारीहै, मंगल कारी है ॥

१ समव सरणमें गंधकुटीमें विराजमान अर्हंत देवकौ परमौदारिक शरीरका दर्शन महामंगल है ॥

१ केवली भगवान् जहांतें निर्वाण गये सो पृथ्वी सम्मेदाचलादिकका दर्शन महा मंगल है ॥

१ तीर्थंकरके पाचौं कल्याणकका काल (मित्ति) परम पवित्र दिनहै, मंगल कारीहै.

१ केवली भगवान (अर्हंत) के गुणोकी भक्ति करना, पढना सो महा मंगल कारी है ॥

यह छहप्रकार मंगलकी स्थापना महामंगल वरदायकहै ॥ मं (पाप मैल) दो प्रकार है, अंतरंग मैल, बाह्यमैल, सो गलजाय है. मंग (सुख) ललाति (देवै) आत्माकौ सुख देवै सो मंगल कहीये ॥ ग्रंथकी आदि मध्य अंतमें छहविधि मंगल हिरदेमें राखौ, जातै ग्रंथकी समाप्ति निर्विघ्न सुखसौ होय है ॥ १०३ ॥

॥ इतिश्री द्यानतरायकृत चरचाशतक समाप्त ॥

॥ कविका अनुग्रह ॥ **भूमिका** ॥ (हेतु) छपै ॥

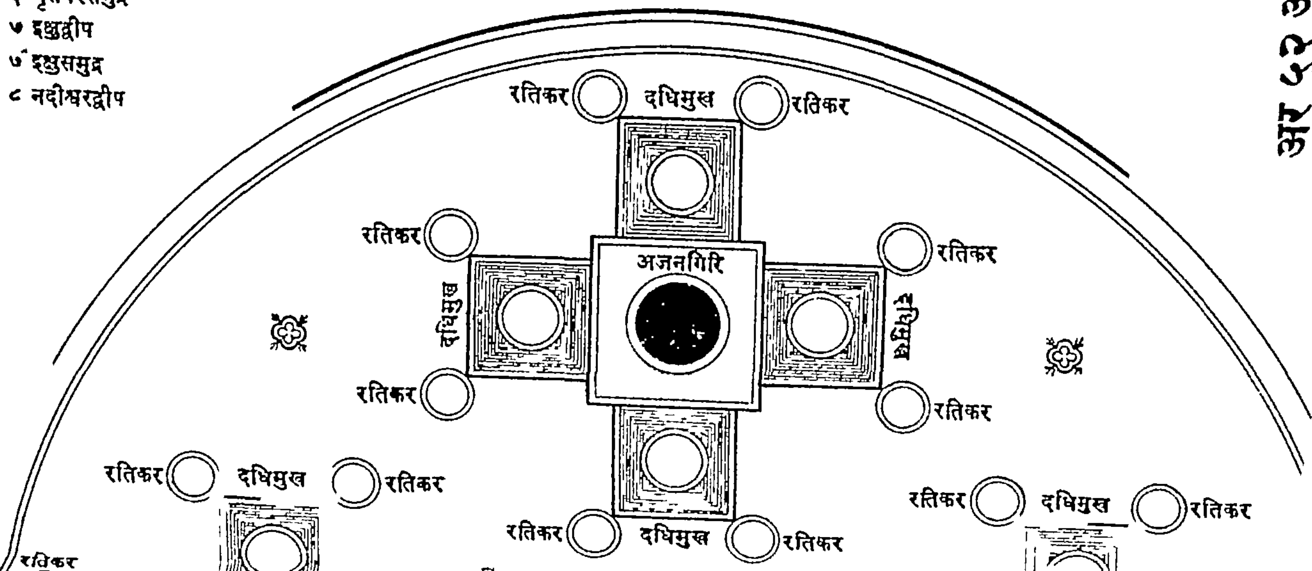
॥ चरचा मुखसौं भनै, सूनै नहि प्राणीकानन ॥ केई सुनि घरजाय नाहि भाखै फिरि आनन ॥ तिनिकौ लखि, उपगार सार यह शतक बनाई ॥ पढत सुनत व्हे बुद्धि, शुद्ध जिनवाणी गाई ॥ इसिमें अनेक सिद्धांतका कथन, मथन द्यानत कहा ॥ सब माही जीवको सार हे, जीवभाव हम सर्दहा ॥१०४॥

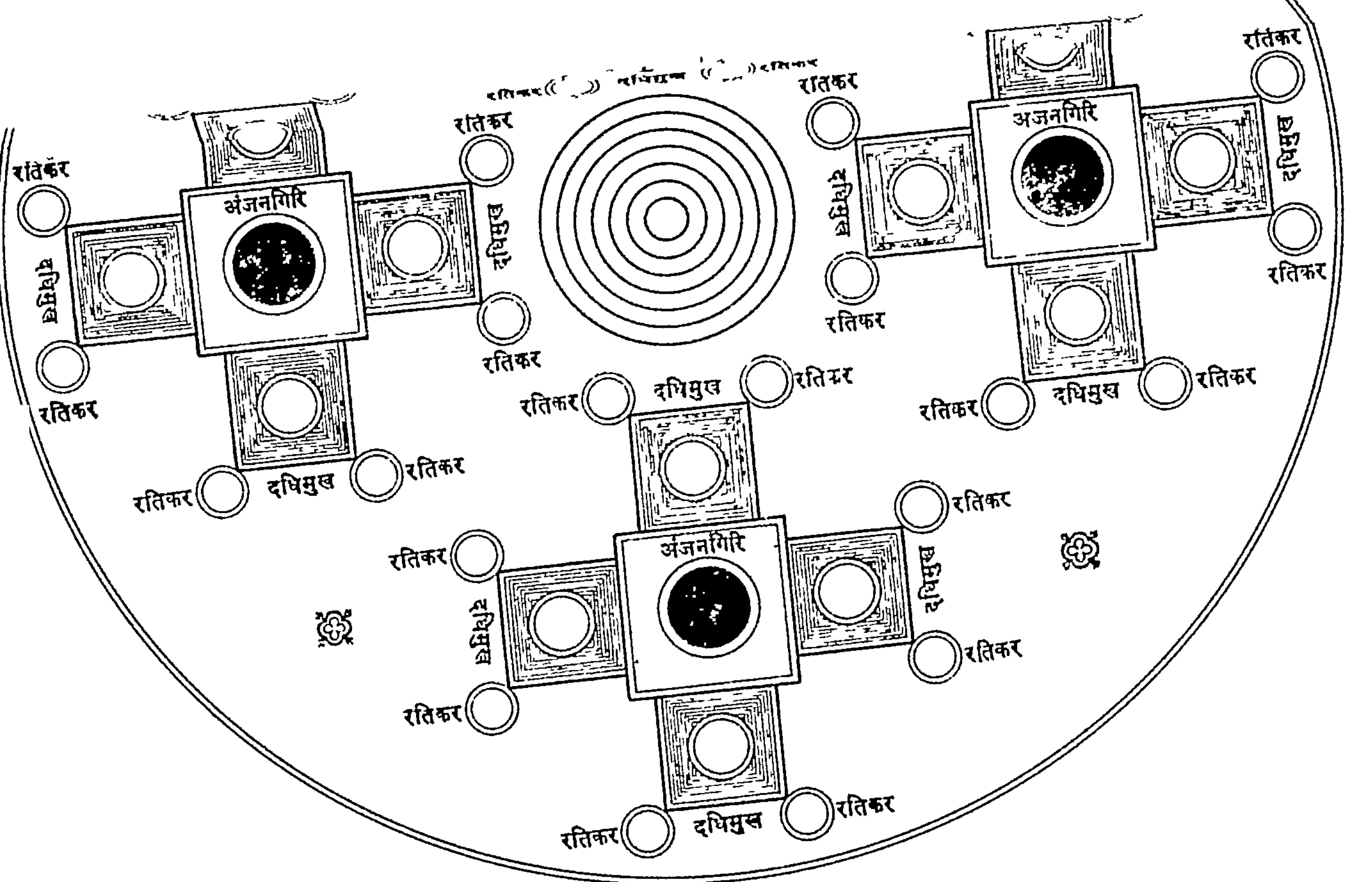
अर्थ–जे पुरुष सज्जन हैं, उपगारी है, शास्त्रके ज्ञाता हे, ते पुरुष बुद्धिबलकरी, सूत्रमाफिक वचनिकारूप चरचा मुखसो करे है, सभामें सुनावे हे, परंतु केई प्राणी कान देके सुनै नाहि, सुननेविषे मन लगावे नाहि. अर केई प्राणी सुनकरि घरधंदेमें फसिकरि विसरी जाय है, यादि राखे नाहि. ऐसे देखिके उपगारके अर्थ, द्यानतरायजीने सार (मनोज्ञ) गंभीर अर्थके भरे सो १०० कवित्त बनाये, तिसीका नाम चरचा शतका धन्या-शत श्लोकेन पंडितः ये सो कवित्त सुननेते पढनेते महा तीक्ष्णबुद्धि होय हे. इस सो कवित्तमे जिनेश्वर देवके शुद्ध वानीका वर्णन है. बालबुद्धिनिको अध्यात्म जिनशास्त्रमें प्रवेश होनेके अर्थि सं० १७८० चैत्र वद्य १३ गुरुवारे द्यानतराय कवीने अनेक सिद्धांतका कथन भलेभांति मथन करिके तत्वका सार जीवद्रव्य काढ्या हे. सो हमने श्रद्धा न कीया है. सकल सिद्धांत (द्वादशांग जिनवाणी) जीव द्रव्यके जाननेके वास्ते है ॥ १०५ ॥

अष्टम नंदीश्वर द्वीपका नकसा.

१ जंबुद्वीप
१ लवणसमुद्र
२ घातकीद्वीप
२ घातकीसमुद्र
३ पुष्करद्वीप
३ पुष्करसमुद्र
४ वारुणिवरद्वीप
४ वारुणिवरसमुद्र
५ क्षीरद्वीप
५ क्षीरसमुद्र
६ घृतवरद्वीप
६ घृतवरसमुद्र
७ इक्षुद्वीप
७ इक्षुसमुद्र
८ नंदीश्वरद्वीप

अर ५२ अकृत्रिम जिन मंदिर.
प्रत्येक दिशाको १३।१३

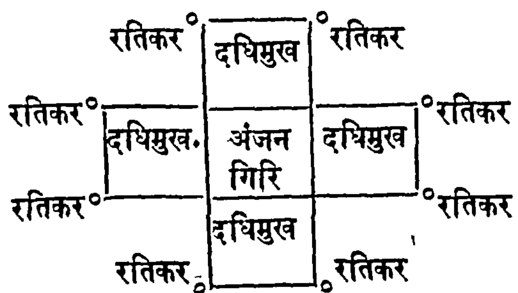




चरचाशतक
॥ ३४ ॥

योजनके उंचे, दसदस हजारके लंबे है इतने ही चौडे है १ हजारजड है ॥ जिसबावडीमें दधिमुख पर्वत है, उस बावडीके बारले (बाह्यके) दोदोकोनेकौ येकयेक रतिकर पर्वत लाल वर्णका है, सोला बावडीकौ ३२ रतिकर पर्वत है, ते हजार हजार जोजनके लंबे है, इतनेही उंचे अर चौडे है, अढाइसे योजनकी जड है. नंदीश्वरद्वीपमे प्रत्येक दिशाको, १ अंजनगिरी, ४ दधिमुख ८ रतिकर ऐसें १३ पर्वत है, चारी दिशाके ५२ भये ते सब ढोलके आकार है ॥ ऐसें ५२, पर्वत पर ५२ अकृत्रिम जिन चैत्यालय है. तहां वर्षमें तीनवार (अशाढ कार्तिक फाल्गुण) शुक्ल ८ से पूर्णिमा पर्यंत आठौ दिनरात ६४ प्रहर स्वर्गवासी देवताआय नृत्य गानादी महामोत्साह पूजास्तुति करै है. नंदीश्वर द्वीपमें देवता बिना कोइ जासके नही ॥ ३६ ॥

आठवे नंदीश्वर द्वीपमें १ अंजनगिरि, ४ दधिमुख, ८ रतिकर, ऐसे १३ जिन मदिर येकयेक दिशाकौ है, चारू दिशाको ५२ जिन मंदिर है



अष्टम द्वीपके येक दिशाके १३ जिन मंदिरका नकशा

॥ अधो (पाताल) लोकमें सातकोटि बहत्तरलाख अकृत्रिम जिनमंदिर है तिनकी संख्या ॥ कवित्त ॥

चौसट लाख असुर जिनमंदिर, लाख चौरासी नाग कुमार ॥
हेम कुमार के लाख बहत्तर, छहविधिके लख छिहत्तर धार ॥
लाख छानवै वात कुमर है, पाताल लोक भवन दससार ॥
सात कोटि अर लाख बहत्तर, जिन चैताले वंदो सुखकार ॥ ३७ ॥

अर्थ—पाताल लोकमें असंख्यात जिनचैत्याले है, परंतु इहां फक्त दस कुमारदेवताके कहेहै,

१ असुर कुमार देवताके भुवननमें चौसठलाख जिनमंदिर है, ६४०००००
१ नाग कुमार देवताके भुवननमें चौऱ्यासीलाख जिनमंदिर है, ८४०००००
१ हेम कुमार देवताके भुवननमें बहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७२०००००
१ विद्युत् कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ अग्निकुमार देवता के भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ मेघ कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ उदधि कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तर लाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ द्वीप कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ दिक्कुमार देवताके भुवननमें छिहत्तरलाख जिनमंदिर है, ७६०००००
१ वात कुमार देवताके भुवननमें छ्यानवे लाख जिनमंदिर है, ९६०००००

इहविधि दश प्रकारके पातालवासी देवताके भुवननमें सातकोटि ७७२००००० बहत्तरलाख.
अकृत्रिम जिन चैताले है तिनमेंके सब जिन प्रतिमाकों वंदों हों, ताते सुख होय है ॥ ३७ ॥
॥ मध्यलोकमें चारसे अठावन अकृत्रिम जिन चैत्यालय है तिनकी संख्या ॥ छप्पै ॥

पंच मेरुके असी, असी वक्षार विराजे ॥ गज दंतन पै वीस,
तीस कुल पर्वत छाजे ॥ सौ सत्तर वैताड्य धार, कुरु भूमि दसोत्तर ॥
इक्ष्वाकार पहाडचार, चार मानुषोत्तर पर ॥ नंदिस्वर बावन रुचकमें
चार, चार कुंडल सिखर ॥ इम मध्य लोकमे चारसे ठावन वंदों विघ्न हर॥३८॥

॥ इम मध्य लोकमे चारसे ठावन जिन चैत्यालय हैं सो तिनकी संख्या कहे है ॥

अर्थ—मध्य लोकमें चारसे अठावन अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं सो तिनकी संख्या कहे है ॥
अढाई द्वीपमें पांच मेरूपर्वत है, येकयेक मेरूपै सोला सोला जिनमंदिर है, पाचौंके असीभये, ८०
येकयेक मेरूकोचारचार गजदंत पर्वत है, पाचौ मेरूके बीस गजदंतपै बीस जिन मंदिर है, २०
येकयेक मेरूके पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रमे सोला सोला वक्षारपर्वत है, पांचोके ८० पर जिनमंदिरहै, ८०
येकयेक मेरूसंबंधी ६ कुलाचल पर्वत है, पांचौ मेरूके ३० कुलाचलपै तीस जिन मंदिर है, ३०
येकयेक मेरूसंबंधी ३४।३४ वैताड्यपर्वत है, पांचौमेरूके १७० वैताड्यपै जिन मंदिर है, १७०
येकयेक मेरूसंबंधी दो उत्तम भोगभूमी है, पांचोके १० भूमि है, उसीमे दहा जंबुचैत्यवृक्ष है, १०
इक्ष्वाकार पर्वतपै ४ मानुषोत्तर पर्वतपै ४ नंदिश्वर द्वीपमे ५२ है, सब जिनमंदिर साठ है, ६०
रुचिक द्वीपमें रुचिक पर्वतपै ४ जिनमंदिर अर कुंडल द्वीपमें कुडगिरीपै ४ जिनमंदिर है, ८

इसप्रकारे मध्यलोकमें ४५८ अकृत्रिमजिनमंदिरहै तिनकौ वंदिवेतै विघ्नदूर होय है ॥
१३ वो कुंडल द्वीपके बाह्य असंख्यात द्वीप समुद्रहै परंतु तहां अकृत्रिम जिनचैत्यालय नही है ३८

॥ अठाईस नक्षत्रोंके विमाननके अकृत्रिम जिन चैत्यालयकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

षट पांच तीन येक षट तीन षट चार, दोदो पांच येकयेक चौ षट तिन लहैं ॥
नव चौचौ तीनतीन पाच येक सौग्यारह, दोय दोय बत्तीस पांचतारे तिनल हे ॥
कृत्तीकादी ठाईसकै सब दोसै ईकताल, ईकईकके ग्याराग्यारहसे सरद हे ॥
दोयलाख सतसठ हजार नवसे ब्यानु, हैचैताले प्रतिबिंबजीन वानीमें कहे ३९

अर्थ—कृत्तिकादि अठाईस नक्षत्रोके २४१ तारेहै, येकयेकमें ११११ तारे है ॥ सबका जोड करिये तब २६७९१२ तारे होहै. इनि सबतारेमें अकृत्रिम जिनचैत्यालय है, ऐसा जिनवानीमे कह्याहै ॥३९॥

अठाईस नक्षत्रोके तारे संख्या					
१	कृत्तिकाके.	६	१५	अनुराधाके.	६
२	रोहिणीके	५	१६	जेष्ठाके	३
३	मृगके	३	१७	मूलके	९
४	आरद्राके	१	१८	पूर्वापाढाके	४
५	पुनर्वसूके	६	१९	उत्तरापाढाके	४
६	पुष्यके	३	२०	अभिजितके	३
७	अश्लेषाके	६	२१	श्रवणके	३
८	मघाके	४	२२	धनिष्ठाके	५
९	पूर्वाके.	२	२३	शततारकाके.	१११
१०	उत्तराके	२	२४	पूर्वाभाद्रपदा	२
११	हस्तके.	५	२५	उत्तराभाद्रपदा.	२
१२	चित्राके.	१	२६	रेवतीके	३२
१३	स्वातीके	१	२७	अश्विनीके	५
१४	विशाखा	४	२८	भरणीके	३
अठाईस नक्षत्रोके तारे संख्या.					२४१
येक येकतारोमें					११११
सब तारेका जोड					२६७९१२ भये

॥ ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग) में अकृत्रिम जिन चैत्याले है, तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

प्रथमवत्तीस, दूजेंअठावीस, तीजेंबारें, चौथेंआठ पांचें छटें चौलाख विख्यात है॥
सातें आठेमें पच्चास, नौमेंदसमें चालीस, ग्यारें बारें छ हजार चारसत सात है॥
अधों येकसत ग्यारे, मध्यें येकसतसात, ऊरध इक्यानुं नव नऊत्तरें जात है ॥
पंचपंचोत्तरें चवन्यासि लाख सत्यानु हजार तेईस चैत्याले वंदौ अघघात है ॥४०॥

अर्थ—सौधर्म स्वर्गमें ३२ लाख हैं अर ईशान स्वर्गमें २८ लाख अकृत्रिम जिन मंदिर हैं. सनत्कुमार स्वर्गमें १२ लाख हैं अर माहेंद्र स्वर्गमें ८ लाख अकृत्रिम जिन मंदिर हैं. ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर स्वर्गमें ४ लाख है अर लांतव, कापिष्ठ स्वर्गमें पचास हजार जिनमंदिर हैं. शुक्र, महाशुक्र स्वर्गमें ४० हजार हैं अर शतार, सहश्रार स्वर्गमें ६ हजार जिनमंदिर है. आनत, प्राणत, आरण, अच्युत. इन चार स्वर्गमें ७०० अकृत्रिम जिन मंदिर है. अधो ग्रैवेयकमे १११ हैं. मध्य ग्रैवेयकमें १०७ है. ऊर्ध्व ग्रैवेयकमें ९१ जिन मंदिर हैं. नव अनुदिशि विमाननमें ९ चैत्याले हैं ॥ पांच पंचोतर विमाननमें ५ जिन मंदिर हैं ऊर्ध्व लोकके सव चैत्यालयका जोड करिये तब ८४९७०२३ चौरासी लाख, सत्यानं हजार, तेईस. अकृत्रिम जिन चैत्यालय होय है. तिनकौ वंदिवेतें पापका क्षय होय है ॥ ४० ॥

॥ तीन लोक (पाताल, मध्य, स्वर्ग,) मेंके अकृत्रिम जिन चैत्यालयकी संख्या ॥ सवया २३ सा ॥

सात किरोड, बहत्तर लाख पताल विषें जिनमंदीर जानो॥ मध्यहि लोकमें चारसे

ठावन, व्यंतर जोतीकके आधिकानो ॥ लाखचोरासि, हजार सत्तानवै, तेईस ऊरध लोक वखानो ॥ ईकीकमें प्रतिमा शतआठ, नमै तिहुजोग त्रिकाल शहानो ॥४१॥

अर्थ–चित्रा पृथ्वीके तले भवन वासी देव दस प्रकारके है, तिनकै भवनमें सात कोटि, बहतर लाख अकृत्रिम जिनचैत्याले हैं. सो सब वर्णन ३७ कवित्तमें कह्या हैं, तहांतै देखना ॥ मध्य लोकमें जंबुद्वीपसें रुचक कुंडलगिरी तेरमा द्वीप पर्यंत ४५८ अकृत्रिम जिनमंदिर है, रुचक गिरिकुंडल गिरीके आगै असंख्यात द्वीप समुद्र हैं परंतु उसीमें जिनचैत्याले नही है. अर व्यंतर देवके जिनचैत्यालयनितै जोतिषी देवके अकृत्रिम जिन चैत्याले असंख्यातगुणा है ॥ सौधर्म स्वर्गतै लेय सर्वार्थसिद्धीपर्यंत अकृत्रिम जिनचैत्याले ८४९७०२३ है ॥ इन सब येकयेक अकृत्रिम जिनचैत्यालयनिमें, येकसो आठ, येकसो आठ, अकृत्रिम जिन प्रतिमाजी पद्मासन पंचरत्नमयी है, पांचसै पांचसै धनुषकी उंची, शाश्वत विराजमान है. इन सब जिन प्रतिमाजीकों मन वचन काया शुद्धकरिकै त्रिकाल नमस्कार करूं हूं ॥ ४१ ॥

मानस्तंभऊपर अर समव सरणमें गंधकुटीपर अर अकृत्रिम चैत्यालयमे जिन प्रतिमा पद्मासन रहै, कायोत्सर्ग नही रहै है.

॥ तीन लोकमें अकृत्रिम चैत्याले है तिनमेके जिन प्रतिमाजीकी संख्यारूप स्तुती ॥ छपै ॥

वंदौ आठ किरोड, लाख छप्पन सत्यानौ ॥ सहस, चारसें, असीयेक, जिन मंदिर जानौ ॥ नवसै पचीस कोटि, लाख त्रेपन, सत्ताइस ॥ वंदौ

प्रतिमा सबै सहस नौसै अठतालिस ॥ व्यंतर जोतिक आगनित सकल
चैत्याले प्रतिमा नमौ ॥ आनंद्कार दुखहार सब फेरनही भववन भमौ ॥४२॥

अर्थ– तीन लोकमें अकृत्रिम जिनचैत्याले आठकोट, छप्पन लाख, सत्यानवै हजार, चारसेइक्यासी हैं ॥ येकयेक मंदिरमें येकसो आठ, येकसो आठ, जिन प्रतिमाजी है. सबका जोड करिये तब ९२५५३२७९४८ नवसे पचीस कोटि, त्रेपन लाख, सताईस हजार, नवसै, अठचालीस. जिन प्रतिमा अकृत्रिम हैं । तिनको नमस्कार करूहूं ॥ व्यंतर देव अष्ट प्रकारके (किंनर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच,) हैं इनके भवनमें असंख्यात अकृत्रिम जिन चैत्याले हैं. अर जोतिषी देव पांच प्रकारके (चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा,) है, इनके विमाननमें असंख्यात अकृत्रिम जिन चैत्याले है तिनमेंके असंख्यात जिन प्रतिमाकौ बंदो हो ॥ कैसी है जिन प्रतिमाजी आनंदकी करनहारी है, अर सब दुःखका नाश करने वाली हैं, इनको वंदिवेतै संसार वनमें भ्रमण होयनाहि ॥ ४२ ॥

टीप–तीन लोकमें अकृत्रिम जिन चैत्याले है इनकी पूजा करनेकी होयतो, जिन मंदिरमें बैठके अव्हाननकर पूजन करना. पृथ्वीकी वा सूर्यादि ग्रहकी पूजाकरना सो मिथ्यात्व है.

॥ तीन लोकमें ११२ पटल हैं तिनका कथन ॥ छप्पै ॥

येक तीन पन सात और नव ग्यार तेर जिय ॥ इकतीस सातसु चार दोय
इक इक तीन तिय ॥ तीन तीन अरु तीन एक इक पटल बताये ॥ इक सौं

बारै सरब वीस थानकके गाये ॥ सब सात नरक आठौ जुगल त्रयग्रीवक द्वय उत्तरे ॥ उन चास नरक, त्रेसट सुरग धन दोन्यौ समकित भरे ॥ ४३ ॥

अर्थ–सातमे नरकमें १ पटलहे, छट्टेमें ३ पटल हैं, पांचमेनरकमें ५ पटल हैं, चौथमें ७ पटल है, तीसरेनरकमें ९ पटल हैं, दूसरेमें ११ पटल हैं, पहलेनरकमें १३ पटल हैं, ऐसे सात नरकमें ४९ पटल हैं ॥ सौधर्मस्वर्ग, ईशानस्वर्ग, इनदोस्वर्गमें ३१ पटल हैं. सनत्कुमार, माहेंद्र, ये दो स्वर्गमें ७पटल हैं. ब्रह्म, ब्रह्मोत्त, इनदोय स्वर्गमे ४ पटल हैं. लांतव, कापिष्ठ, ये दोयस्वर्गमें २ पटल हैं शुक्र महाशुक्र, ये दो स्वर्गमें १ पटल हैं. शतार, सहस्रार, ये दो स्वर्गमें १ पटल है. आनत, प्राणत, ये दो स्वर्गमें ३ पटल है. आरण, अच्युत, ये दो स्वर्गमें ३ पटल हैं ॥ तीन ग्रैवेयक (अधो३ मध्य३ उर्ध३) में ९ पटल हैं. नवअनुदिश विमानमें १ पटल है. पांच अनुत्तर विमान में १ पटल है. ऐसें ६३ पटल सोला स्वर्गके अर ४९ पटल सातनर्कके सब मिलके ११२ पटलहैं. इन वीस स्थानमें जो सम्यक्ती जीव है सो धन्य है ॥ ४३ ॥

टिप–७ नरकके, ८ युगल स्वर्गके, ३ ग्रैवेयकके, १ अनुदिशका १ कनुत्तरका ये वीस स्थातकके

॥ आधोलोक (पाताल लोक) में श्रेणीबद्ध विले है तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

सातनर्क भूमि ऊनचास पाथडे नीवास इंद्रकभि ऊनचास बीचमाहि बीले है ॥
पहलेसीमंतक चारिदीसा सेनि ऊनचास चारि वीदिशामें आठतालीस बीले हैं ॥

आठदीशा श्रेणिबद्ध तीनसे आठ्यासिभये आगेघटै आठआठ अंतिचार मीले है॥
सब छ्यानवैसे चारि जोजन असंख्यधारि दयाधर्मकरै तीन्है नर्कदुःख टलेहै॥४४॥

अर्थ—सातनरकमें ४९ पाथडे हैं, तिसयेकयेकपाथडेमें येक येक बिला (इंद्रक) है, ते आधे कूवेके आकार गोल है ॥ प्रथमनरकमें १३ पाथडे हैं, तिनमें पहलो सीमंतक नामा इंद्रक पैतालीस लाख योजनका चौडा हैं. इनके चारो दिशामें श्रेणीबद्ध बीले ४९।४९ हैं, चारो दिशाके १९६ बिले अर विदिशामें ४८।४८ है ॥ ये १९२ ऐसे ३८८ है, ऐसा येक पटल का वर्णन कह्या. आगै ४८ पटल रहै, उसी येक येक पटलमें आठ आठ घटाइये तब अंतके सातवे नरकमें १ अवस्थान नामा इंद्रक १लाखयोजन है, ताके चार दिशाको ४ बिले है तहां विदिशामें बिले नाहीं ॥४९ पटलके सब बिले ९६०४ है. नरकमें अनंत दुःखहै, जेजीव चित्तमें दया भाव राखै ते इस दुःख से बचे है ॥ ४४ ॥

वीचके इंद्रक बिले संख्यात जोजनके है अर गोल है, दिशा विदिशाके बिले असंख्यात जोजनके है अर चौकोर है

॥ ऊर्ध्व लोक (स्वर्ग) में श्रेणी बद्ध विमान है, तिनकी संख्या ॥ सवैया ३१ सा ॥

ऊरध तीरेसठ पटल कहे आगममें त्रेसठहि इंद्रक विमान बीचि जानीये ॥
पहलो जुगल ताके पहलेहै ऋजुनाम जाकेचारि दीसाश्रेणि बासठ प्रवानीये ॥
चारो दोसै आठताल आगै घटै चार चार अंत रहै चार, उंचे चार ठीकठानीये ॥
श्रेणीबद्ध ठंतरसै सोले, जोजन असंख्य, सिद्धबारै जोजनपै ध्यानमांहिआनीये ४५

अर्थ–ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग) में ६३ पटल है, तिस येक येक पटलके बीचि एक एक इंद्रक विमान है ॥ प्रथम जुगल (सौधर्म ईशान) में ३१ पटल है, तिनमे पहले पटलको नाम ऋजु विमान है, इनके येक येक दिशाकौ ६२।६२ श्रेणी बद्ध विमान है ॥ चारु दिशाके २४८ पटलभये, ऐसा एक इंद्रकका वर्णन कह्या. इनके ऊपर ६२ पटल हैं, तिनमें एक एक पटल में चार चार घटाये (येक येक दिशामे येक येक) तब अंतका जो सर्वार्थ सिद्धिनामा पटल है, ताकौ श्रेणी बद्ध विमान चार रहै, अर बासटवो आदित्यनामा पटलकौ ही चार हैं ॥ त्रेसठ इंद्रकके सब श्रेणीबद्ध विमान ७८१६ हैं. ते असंख्यात जोजनके लंबे, चौरे, चौकोर है. अंतके सर्वार्थ सिद्धी पटलतै १२ योजन उंचेपर अनंते सिद्ध परमेष्टी है, तिनकौ ध्यान (स्मरण) करीये ॥४५॥

॥ ऊर्ध्व लोकमें ६३ इंद्रक विमान है, ते ऊपर ऊपर है, सो कथन ॥ सवैया ३१ सा ॥

पैतालीस लाखको है इंद्रक ऋजु विमान, सर्वारथ सिद्धि अंतकौ एकका कहा ॥
चवालीस घटेहै तेसठमे, बासठठोर उंचे उंचे एक एक केता घटती लहा ॥
सत्तर हजार नौसे सतसठियोजनहै तेईस अधीक भाग ईकतीसका गहा ॥
त्रेसठ इंद्रकनाम त्रेसठ हि जीनधाम वंदौमन वच काय तीनकि सोभा महा ॥४६॥

अर्थ–सौधर्म स्वर्गकी सभा (ऋजु विमान) पैतालीस लाख योजनकाचोडा है, अढाई द्वीप बराबरका है. अर अंतका त्रेसठमा सर्वार्थसिद्धी विमान एक लाखयोजनका है, जंबूद्वीप बराबर है ॥ त्रेसठवे इंद्रक विमानतक चवालीस लाख घटे तब एकलाख योजनका चौडा रह्या, ॥ अर

ऋजु विमान विना वासठपटल में एक एक ठोर कितना कितना घट्या? चवालीस लाख वास ठ ठौर घठाना वा बासठका भागदेना ॥ ७०९६७$\frac{२३}{३१}$ सत्तर हजार नौसे सडसठ योजन अर एक योजनके ३१ भागकीजे उसमे २३ भागलेना, इतना येक येक पटलमें घटा है ॥ ऐसा त्रेसठ इंद्रक विमानमें शाश्वते अकृत्रिम जिन मंदिर ६३ है, तिननें मन वचन कायसे वंदोहूं. तिनकी शोभा महा रमणीक है ॥ ४६ ॥

॥ सौधर्म इंद्रकी सेना सात प्रकारकी है, तिनकी गिणती कहै है ॥ सवैया ३१ सा ॥

इंद्रसेना सात. हाथि, घोरे, रथ, प्यादे, बैल, गंधरव, नृति, सातसात परकारहै ॥
आदि चौरासी हजार, आगै षट दूनेदूने एककोटि छलाख अडसठ हजारहै ॥
येतेगज तेते तेते छहभेद सबके ते, सातकोट छीयालीसलाख नीरधारहै ॥
सहस छिहत्तरहैं और एकअवतार न्योंगपुन्य कर्मभोगि, मोक्षको सीधारेहै ॥४७॥

अर्थ—सौधर्म स्वर्गके इंद्रकीसेना सात प्रकार (१ हाथी १ घोरे १ रथ १ प्यादे १ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी) है, इन येक येक सैनामें सात सात प्रकार है ॥ पहली सेना में हाथी चौरासी ८४०००हजार है, आगै छह प्रकारके सेनामे हाथी दूनेदूने है. छह प्रकारके सेनामेके सब हाथी १०६६८०००एककोटि, छहलाख, अडसट हजार है इतनेही घोरे है. इतनेही रथ, प्यादे, बैल, गंधर्व नृत्यकी है, ॥ सौता प्रकारके सब सैन्याका जोड ७४६७६००० सातकोटि, छियालीस लाख,

छिहतर हजार है, पुन्ययोगसे ऐसा वैभव मिले है, सौधर्मइंद्र ऐसा सौख्य भोगिकै फेर कर्म भूमीमें मनुष्य होय, मुनी दिक्षा ग्रहणकरके ८ कर्मका नाशकर मोक्षको प्राप्त होगा. सोधर्म इंद्र येक भव अवतारी हैं ॥ ४७ ॥

॥ देव देवी संजोग, देव लोक प्रविचार कथन ॥ कवित्त ॥

दोय सुरगमें काय भोगहे, दोय सुरगमें फरस निहार॥ चार सुरगमें रूप निहारे, चार सुरगमें शबद विचार ॥ चार सुरगमें मनको विकलप, आगे सहज सील निरधार ॥ अहमिंद्र सब महा सुखीहे वंदो सिद्धसुखी अविकार ॥ ४८ ॥ ॥

अर्थ– भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी, अर सौधर्म स्वर्ग, ईशान स्वर्ग, इहांके देव देवांगनाको जब भोगकी वांछा उपजै है, तब स्त्री मनुष्यके समान कायासो भोग करे है, ताते याका नाम काय प्रविचार कहा. इनते ऊपर ३ सनत्कुमार ४ माहेंद्र, इन दोय स्वर्गमेंके देव देवांगना को स्पर्शते भोगकी वांछा तृप्त होय है ॥ इनते ऊपर ५ ब्रह्म, ६ ब्रह्मोत्तर, ७ लांतव, ८ कापिष्ठ, इन चार स्वर्गमें देव देवीको कामरूप दृष्टी देखीकरी भोगकी वांछा मिटिजाय है. इनतै ऊपर शुक्र ९ महाशुक्र, १० शतार ११ सहस्रार १२ इन चार स्वर्गमें काम रूप शब्द बोलिके भोगकी वांछा मिटै है ॥ इनतै ऊपर आनत १३ प्राणत १४ आरण १५ अच्युत १६ इनचार स्वर्गमेके देव देवीको कामकी इच्छाहोय जब मनमें कामरूप कल्पना करे तब भोगकी वांछा मिटै है.

पूरी होजाय है. इन १६ स्वर्गके ऊपरके, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच अनुत्तर, इन देवताकौ देवांगना है ही नाही, तातै ये देवता सहज शीलवंत (ब्रह्मचारी) हैअर अहमिंद्र है, इनमें पारिषादिक (सेवकादि) दश प्रकारके भेद नही है. अहमिंद्र आपना काल (३३ सागर केआयु) धर्मध्यानमे व्यतीत करैहै, येक जीवद्रव्यकी चर्चाकरै है, येसुखी हैं. इनके ऊपर सिद्ध परमेष्टी हैं ते महासुखी है, अविकारी है. तिनकौ मै वंदौ हूं ॥ ४८ ॥

देवांगना उपजनेकी उसाद शय्या पहले अर दूसरे स्वर्गमें ही हैं, ऊपरले स्वर्गमें नही है. १ सौधर्म अर २ ईशान स्वर्गके उपरके सोला स्वर्ग पर्यंतके देवता तिहां आय अपने अपने नियोगकी देवीकौ लेजाय है. पांचमे ब्रह्मस्वर्गके अंतकौ लौकांतिक देव वसै हैं, तेही ब्रह्मचारी हैं.

॥ सात नरकका, सोलास्वर्गका आवक जावक कथन ॥ ३१ सा ॥

सातते नीकलेपशु छट्टेनर व्रतनाहि, पांचैमहाव्रत, चौथेसेति मोक्षसार है ॥
तीजेदूजे पहिलेते आयजीनराय होय, भवनत्रक सुर्गदोय येकेंद्रिधारहे ॥
द्वादशम स्वर्गताई पंचेद्रि पशुहोय, ऊपरको आयोयेक नरको औतारहे ॥
दक्षीणेंद्र सौधर्मराणि, लोकपाल, लौकांतीक, सर्वार्थसिध्दि मोक्षलहे नमस्कारहे ४९

अर्थ—सातवे नरकतै मरिकरी निकसिकै जीव महाक्रूर पंचेंद्री पशू होय, मनुष्य नही होय. छट्टा नरकतै निकस्योजीव मनुष्य होसकै परंतु महाव्रत ग्रहण करिसकै नाही. पांचमे नरकका निकस्या

मनुष्यहोयके महाव्रत धारण करिसकै परंतु कर्मक्षयकरी मोक्षनजाय यह नियम है. चोथे नरकका निकसो जीव मनुष्यहोसकै, महाव्रत धरिकै कर्मक्षयकरी मोक्षजाय परंतु अचिंत्य विभूतीका धारक तीर्थंकर पद प्राप्त नही होय ॥ तीसरे, दुसरे, पहले, इनतीन नरकका निकस्या जीव तीर्थंकरदेव, होयसकै यामै कोइं बाधा नाही. नरकका निकस्यास्वर्गमे नजाय अर स्वर्गका नरकमें न उपजै यह नियम है ॥ स्त्री मरिकरी छट्टे नरकतक जासकै, सातवे नरकमें स्त्री जाय नही, यहनेम है. भवनवासीदेव, व्यंतरदेव, ज्योतिषीदेव, सौधर्मस्वर्गके अर ईशान स्वर्गकेदेव, इन पांचौ ठोरका मरि करी येकेंद्री होसके परंतु अग्निकाय वायुकाय न होय; पृथ्वीकाय जलकाय बनस्पतीकायहोय, सोभीसूक्ष्मनहोय बादर (बडा) होय ॥ तीसरे सनत्कुमार स्वर्गसे बारमा सहस्रार स्वर्ग पर्यंतका देव मरिकरी एकेंद्रीनहोय पंचेंद्री पशू होसकै. अर बारमा स्वर्गतै ऊपरके च्यार स्वर्गका, अर नवग्रैवेयक नव अनुदिश, पंच अनुत्तर इहांका आया जीव मनुष्य ही होय और दुसरे गतीमें न उपजे ॥ स्वर्गके आठ युगल है, तिनमे बारा इंद्र है. छह इंद्र दक्षिणके, छह इंद्र उत्तरके, उसीमे दक्षिणके छह इंद्र अर सौधर्म इंद्रकी इंद्राणी जो तीर्थंकरको जन्मसमय प्रसूत ग्रहमेसूं ल्याय इंद्रकौसौंपे सो सची, सौधर्म स्वर्गके चारो लोक पाल (१ सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर) पाचमे स्वर्गके अंतके लोकांतिकदेव, अर सर्वार्थ सिद्धी विमानके सब अहमिंद्र, इह पांच ठिकानेके येक भव अवतारी है. तातै इन सबनिकौ मोक्षरूप मेरा नमस्कार है ॥ ४९ ॥

॥ इति लोक स्वरूप वर्णन समाप्त ॥ ३ ॥

॥ अथ कर्मप्रकृती भेदवर्णन प्रारंभ ॥ ४ ॥

॥ श्री नेमिनाथ बावीसमा तीर्थंकर जीकी स्तुती ॥ छंद छप्पै ॥

वंदौंनेमि जिनंद चंद सबकौं सुख दाई ॥ बल नारायण बंदि, मुगुट मणि सोभा पाई ॥ व्यंतर इंद्र बत्तीस भुवनचालीसू आवै ॥ रवि शशि चक्री सिंह स्वर्ग चोबीसौं ध्यावै ॥ सब देवनिके सिरदेव जिन सु गुरुनिके गुरु रायहौं ॥ हूज्यौं दयाल मम हालपैं गुण अनंत समुदायहौं ॥ ५० ॥

अर्थ—श्रीनेमिनाथ तीर्थंकरकों भाव सहित वंदों हों. कैसे है नेमिनाथ स्वामी! सरदकालके चंद्रमा समान निर्मल है आज्ञा जिनकी, बहुरि कैसे है नेमिनाथजी! तीन लोकके सब प्राणी निकों महा सुखदाई है, ॥ बल कहिये पद्मनामा बलिभद्र अथवा नववा बलदेव, नारायण कहिये कृष्ण त्रिखंडी वा नववा नारायण, ये नेमिनाथजी के चरण कमलनिकों वंदै है, नेमनाथके चरण कमलनिके किरणनके स्पर्श तें तिस बलभद्र नारायणोंके मुकटमाहि लगे है रतन तिन रतनौंकी अधिक शोभा भई ॥ व्यंतर जातीके देव आठ प्रकार हैं. तहां एक एक जातीमें दोय दोय इंद्र अर दोय दोय प्रतींद्र हैं. सब मिलिके व्यंतर वासी देवमें बत्तीस इंद्र हैं. भवन वासी देव दश प्रकार हैं. येक येक जातीमें दोय दोय इंद्र अर दोय दोय प्रतींद्र हैं; सब मिलिके भवन वासी देवमें चालीस इंद्र हैं ॥ ज्योतिषी देव पांच प्रकारके है, परंतु तिन विषें इंद्र दोय हैं, रवी कहिये सूर्य प्रतींद्र है अर शशि कहिये चंद्र इंद्र है, मनुष्यनिकों इंद्र चक्रवर्ति है, छह खंडको धनी,

नवनिधी चवदा रत्नका स्वामी है, तिरचंजका इंद्र सिंह है, सोला स्वर्गमें *चौवीस इंद्र है, सब मिलि के शतइंद्र भये. सो सब १०० इंद्र तीर्थंकरको ध्यावे हैं ॥ सब देवमें श्रेष्टदेव वीतराग है, और दूजा देव नाहि. सब सुगुरुके गुरु श्रीवीतराग गुरु हैं ॥ हे वीतराग देव ! दयाल हूजे, कृपाकीजे, मोकों संसारतें छुडायके मोक्षपद दीजे, कैसेहो तुम, अनंत गुणोंके समुदाय हो ॥ ५० ॥

* पहिले दुसरेमें २ इंद्र २ मर्तींद्र, तीजे चौथेमें २ इंद्र २ मर्तींद्र, पांवा छटामें १ इंद्र १ मर्तींद्र, सातवा अटवामें १ इंद्र १ मर्तींद्र, ९।१०।११।१२ में २ इंद्र २ मर्तींद्र, १३।१४।१५।१६ में ४ इंद्र ४ मर्तींद्र. ऐसें २४ इंद्र सोला स्वर्गमें है.

॥ श्रीनेमिनाथजीकी स्तुति ॥ छपै ॥

इंद फणिंद नरिंद पूजि, नमि भगति बढावै ॥ बल नारायण वंदि मुकट मणि सोभा पावें ॥ विनजाने जगवन भमे, जानि छिन सुर्ग वसावै॥ ध्यान आन रिधिवान, अमर पद आप कहावे ॥ सब देवनिके सिरदेव जिन, सुगुरुनिके गुरु रायहो ॥ हूज्यों दयाल मम हालपे, गुण अनंत समुदाय हो ॥ ५१ ॥

अर्थ—इंद्र कहिये स्वर्ग वासीकाइंद्र. फणिंद्र कहिये भवन वासीकाइंद्र. नरेंद्र कहिये चक्रवर्ती, श्रीनेमिनाथ तीर्थंकरकी भक्तिसेती पूजाकरैं, नमस्कारकरैं हैं, स्तोत्र पढिके, गुणानुवाद गायके अत्यंत भक्तिबढावें हे ॥ बळरामके अर कृष्णके मुकट जिनके चरण कमल वंदि वेते अधिक शोभा पावै हैं ॥ वीतरागदेवके चरण कमलनकी महिमाको विनांजाने विना सुमरे, यहजीव संसार वनमें अनंत काल भ्रमण करै है, महा घोरदुःखसहै है, तेदुःख वचन गोचर नाहि, केवली गम्य है.

अर जेजीव श्रीवीतराग देवकी महिमा जानै हैं, भक्तिबढावै हैं, ते जीवकों; वो भक्ति क्षणेक मांहि स्वर्गमें ले जाय सही ॥ और जे जीव श्रीअर्हंत देवकों ध्यावैं, भाव सहित स्मरें, सो जीव संसारीक सुख (ऋद्धि सिद्धि इंद्र चक्रवर्ति इनके पद) भोगिके पीछे मोक्षपावै हैं ता मोक्षमैं अतींद्रिय सुख हैं, फेर संसार विषे आवै नांहीं. तातें अमर कहीये ॥ सब देवमें श्रेष्ठ श्रीवीतराग देव है. अर अन्य सब इंद्रादिदेव विषय कषाय करी मोहित हैं, पराधीन हैं कर्माधीनहैं, ते देव नाहीं; एक जिन वीतराग देव आहारादि अठारा दोष रहित छीयालीस गुण सहित हैं, इनमें दोषकी रंचमात्रभी निशाणी नाहीं; सब सुगुरूके वीतरागदेव गुरू हैं ॥ हे वीतराग देव दयाल हूजे कृपा कीजे, मोकों संसारतें छुडायके मोक्षपद दीजे. कैसे हो तुम, अनंत गुणोंके समुदाय हों, पूज्य हों, अनंत गुण तुममैं साक्षात प्राप्त भये हैं ॥ ५१ ॥

॥ मिथ्यात्वी मुक्त नहोय, सम्यक्त्वी मुक्त होय सो कथन ॥ ३१ सा ॥

एक समै माहि एक समै परबद्धबंधे, एक समै एकसमै परबद्ध झरैहे ॥ वर्गना
जघन्यमें अभव्यसो अनंतगूणि, उतकीष्ट सिद्धकों अनंत भाग धरैहे ॥ जैसे
एक गास खाय सातधात होय जाय, तैसे एक सातकर्म रूप अनुसरे है ॥ यौन
लहे मोक्षकोई ज्याके ऊरग्यान होई, एक समै बहु खोई, सोई सीव वरैहे ॥५२॥

अर्थ—जबताईमिथ्यात परिणाम वर्ते तबताई कर्मनीते आत्मा नछूटै, अर जब सम्यक् परिणाम वर्ते तब आत्मा कर्मते छूटै मुक्त होय है, सो कहे है. किसीयेक मिथ्याद्दष्टी जीवने मिथ्यात्वप-

रिणामके बलकरी येकसमयमें अनंत कर्म वर्गना ग्रहणकरी (बांधी) वो वर्गना दूसरे समयमें आधीखिरी (क्षपी) इस भांति द्व्यर्धगुणकरी समय समयमें अनंत बांधी अर समयसमयमें झरे थोडी ॥ जैसे कोई पुरुष सच्चिक्कण अन्नका एक ग्रासखाय जब पचै तब सोई ग्रास सात धात(हाड. चाम. मांस. नाडी. मज्जा. शुक्र. शोणित.) रूप होय, तैसें मिथ्यात परिणाम करके बांधी अनंत वर्गणासो आयुकर्म विना सात कर्मरूप समान अंश परनवैहै ॥ समय समयमें बांधे घनी अर झरै थोडी, याहीतै जीव मोक्ष पावता नाही, क्यों! टोटा वहुत अर नफा थोडा. जिस जीवकै हृदयमें भेद विज्ञान होय, सो जीव सम्यक् ज्ञानके बलकरिकै समय समयमें कर्म बांधे थोडा अर तिसतै अनंत गुणा क्षपावै. अथवा भेदविज्ञानी (सम्यक्दृष्टी) आत्मा भेदज्ञानके बल करिकै अनंत भवके बांधे कर्म येक समयमें क्षपावै, सोही सम्यक्दृष्टी जीव मोक्ष वरैहै ॥ ५२ ॥

अभव्य जीव, जघन्य युक्तानंत प्रणाम हैं तिनतै अनंत गुणीहै. अर उत्कृष्ट करिकै सिद्धनिकै अनंतवै भागहै, अनंतके अनंत भेदहै. समय समयबांधै सो समय प्रबद्ध कहीये!

॥ आठ कर्मके ८ दृष्टांत कहैहै ॥ सवैया ३१ ॥

दैवपै पर्‍योहै पट रूपकोन ज्ञान होय, जैसै दरवान भूप देखनौ निवारेहै ॥ सहत लपेटि असिधारा सूख दूखकारा, मदीरा ज्यो जीवनीकौ मोहनि विथारेहै ॥
काठमै दीयोहै पाव करै थीतिकौ सुभाव, चित्रकार नानानाम चित्रको समारेहै ॥
चक्रीउंचनीचकरै, भूपदीयो मना करै, येहि आठकर्महरै सोहि हमैतारैहै ॥ ५३ ॥

अर्थ—१ देव पर वस्त्र डारिये तव देव दिखाई नदे, तैसें ज्ञानावर्णीकर्म आत्माका ज्ञानगुण रोकेहै.
१ दरवाजाका चोपदार राजाका दर्शन होने नदे, तैसै दर्शनावर्णी कर्म आत्माको दर्शन न होनेदे॥
१ सहत लपेटिके खांडा जीभ परिधरीये तव मिष्टलागे जीभकटे तैसे वेदनी कर्म सुख दुखदेवे.
१ जैसे मदिरा पीयेते बावला होजाय, तैसें मोहिनी कर्म आत्माकौ गहिला वनावे है॥
१ चोरके पावमे वेडी डालनेसे कही नजायसके, तैसें आयुकर्म भव भवमे स्थीरकरैहे ॥
१ चित्रकार चित्रकौ नानाप्रकारे नामधरे, तैसे नामकर्म येकेंद्रियादि नाम धरावे है ॥
१ कुंभकार छोटे वडे बासन वनावे. तैसे गोत्रकर्म नीच उंच कूलमे उपजावे हे ॥
१ राजादे अर भंडारि मनाकरै तैसें, अंतराय कर्म मतलबसाध्य न होनेदे, लाभ न होनेदे ॥
ऐसे आठ कर्मकौ जिसने नाशकियाहै, सोही आत्मा हमकौ तारक(मोक्षमार्ग दिखानेवालाहै)॥५३॥

॥ आठ कर्मके १४८ भेद कहेहै ॥ छप्पै ॥

ज्ञानावरणकि पांच, दरशनावरणी नौविधि ॥ दोय वेदनी जानि, मोहनी आठावीस मिलि ॥ आयुच्यार परकार, नामकि प्रकृती तिरानौ ॥ तथा येकसो तीन, गोत्र दोयभेद प्रवानौ ॥ कही अंतरायकी पांच, सव सो अठताल जानिये ॥ इम आठ करम अठतालसौ, भिन्नरूप निजमानिये ॥ ५४ ॥

अर्थ—ज्ञानआवरणीय कर्मके ५ भेदहै. दर्शन आवरणीय कर्मके ९ भेदहै ॥ वेदनीय कर्मके २ भेद है. मोहनीय कर्मके २८ भेदहै ॥ आयुकर्मके ४ प्रकारहे. नामकर्मकी ९३ प्रकृती है,

गोत्रकर्मके २ भेदहै, अंतराय कर्मके ५ प्रकारहै. सबमिलि १४८ जानना. आठ कर्ममें दोय भेद है, चार घातिया कर्म है, चार अघातिया कर्महै. चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृतिहै, अर चार अघातिया कर्मकी१०१ प्रकृतिहै. ऐसी १४८ प्रकृतिहै, आठकर्मसे भिन्न आत्माकारूप जानना ५४

॥ चार घातिया कर्मोंके ४७ भेद कहेहैं ॥ सवैया ३१ ॥

मति, श्रूति, औधि, मनपरजै, केवल ज्ञान, पांच आवरण ज्ञानावर्णि पंचभेद है ॥
चक्षु, औ अचक्षु, औधि, केवल, दरस चार, आवरण चार. निद्रा निद्रानिद्रा खेदहै ॥
प्रचला प्रचला प्रचला थान गृद्ध नौ भेद, दरसनवर्णी. मोह अठाईस भेदहै ॥
दान, लाभ, भोग, उपभोग, बल, अंतराय पांच. सब सैतालिस घातिया निषेधहै ५५

अर्थ—५ ज्ञानावर्णि ९ दर्शनावर्णि २८ मोहनीय ५ अंतराय ऐसे घातिया कर्मकी ४७ प्रकृति है.
१ मतिज्ञान आवर्ण कर्म, आत्माकौ मतिज्ञान न होनेदे १ श्रुतज्ञान आवर्ण श्रुतज्ञान न होनेदे.
१ अवधिज्ञान आवर्ण, अवधिज्ञान न होनेदे. १ मनपर्ययज्ञान आवर्णसे, मनःपर्यय ज्ञान नहोय.
१ केवलज्ञान आवर्ण कर्म, केवल ज्ञान न होनदे. ज्ञानके ये पांच आवर्ण (पडदे) कर्महै॥
१ दर्शन आवर्ण कर्मसे नेत्रशक्ती खुले नाही १ अचक्षुअवर्णसे चार इंद्रियके विषय रोके है ॥
१ अवधिदर्शनावर्णि कर्म अवधि दर्शन रोकेहै. १ केवल दर्शनावर्णि केवल दर्शन न होनेदे.
१ खेद(अळस) दूर करनेकूं सोवना वो निद्राकर्महै १ जागिके फेर सोवना वो निद्रानिद्रा कर्महै.

१ निद्रामें मुखतै लाळ गळे वो प्रचला निद्राहै १ चालतेही निद्रा आवे वो प्रचला प्रचला निद्राहै.
१ निद्रामें अशक्त होय, निद्रामेही आप कार्य करै अर निद्रा दूर भये कार्यकी यादि (स्मरण) न रहै, भूल जावे वो स्थान गृद्धी निद्राहै. ये दर्शन आवर्ण कर्मकी ९ प्रकृति (स्वभाव) है.
१ देनेकी इच्छाहै परंतु दीया जाता नाही, वो दानांतराय कर्महै.
१ बहोत उद्यम करतेभी लाभ न होय वो लाभांतराय कर्महै.
१ षटरस व्यंजनादि प्राप्त होतेभी सेवन करने नदे वो भोगांतराय कर्महै.
१ बलवृद्धीके पदार्थ खातेभी शक्ती न बढें, रोगी रहवोकरै वो वीर्यांतरायकर्महै.
१ स्त्रीअलंकारादि होतेभी भोगीन जाय सो उपभोगांतराय कर्महै.
ये ५ प्रकृती अंतरायकर्मकी है, सब मिलीके चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृति होहै. ये चार कर्म आत्माके गुणकौ सर्वथा घाते है, तातै इनिकौ घातिया कर्म कहीये. इनिका नाश करनेते आत्माकौ केवल ज्ञान प्राप्त होय है, अनंत चतुष्टय प्राप्त होय है, तब अर्हंत (भगवान) कहावै है ॥ ५५ ॥

॥ मोहनी कर्मके २८ भेद कहै है ॥ सवैया ३१ सा ॥

मिथ्यात, समै मिथ्यात, समै प्रकृती मिथ्यात, तीनौ दरसन मोह. दर्शनकौ
चोभ है ॥ अनंतानुबंधि, औ अप्रत्याख्यानि, प्रत्याख्यानि संज्वलन, चारौ.
क्रोध, मान, माया लोभ है ॥ हास्य रति, अरति, शोक, भय जुगुप्सा,
नारि नर षंड, ये पचीस चारीत को छोभे है ॥ अठाईस मोहनि जीव

नीकौ मोहत है, नाशै यथाख्यात संजम क्षायककौ शोभे है ॥ ५६ ॥

अर्थ–दर्शन मोहनीयकी ३ प्रकृती अर चारित्र मोहनिकी २५ प्रकृति मिलि तव २८ होय है. १ झूटमें सांच मानना अर दूसरेकों झूटा उपदेश दे वहकाना, सो मिथ्यात्व दर्शन मोहनी कर्म है. १ झूट अर साच दोनू येकरूप (मिश्र) मानना सो, सम्यक् मिथ्यात्व दर्शन मोहनी कर्म है. अर्हंतदेव, निर्ग्रंथ गुरु, जिनशास्त्र. इन तीनू विना, कुदेव कुगुरु कुधर्मशास्त्रोकी भक्तिनकरै परंतु यह पोथी, जिनमंदिर, प्रतिमा, मेरी है. इहां पूजाकरो. यह मेरी नही है, इहां पूजा दर्शन नकरो. पार्श्वनाथ स्वामीकी ही पूजाकरनेसे संकट दूर होय, अर शांतिनाथ स्वामीकीही पूजा करनेसे विघ्नदूर होजाय शांति होय, और दूसरे तीर्थंकरकी पूजा करनेसे न होय, ऐसा २४ तीर्थंकरोमे भेदरूप परिणाम करना सो, सम्यक् प्रकृती मिथ्यात्व दर्शन मोहनीकर्म है, इस प्रकार परिणाम करने से सम्यक्तकाघात (नाश) हो है. ये ३ प्रकृती दर्शन मोहनीकी है ॥ १६ कपाय ९ नो कपाय ऐसे चारित्रमोहनीय कर्मके २५ भेद है सो कहै है ॥ अनंत संसारकौ बंधनके कारण सो अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, येचार कषाय कर्म है, ते संसारकेनाशक जे सम्यक् दर्शन (स्वस्वरूपाचरण) न होनेदे. अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, येचार कपाय देशसंयम (अनुव्रत) नहोनेदे. प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, महाव्रत संयमके परिणाम नहोनेदे. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ. यथाख्यात संयम (चारित्र) के परिणाम नहोने दे. ऐसें कपाय चारित्र मोहनीके १६ भेद कहे ॥ अव चारित्र मोहनीके नव कपाय कहे है.

१ जाके उदे हास्यकरे सो हास्यकपायकर्म हे १ परको देखी प्रीतिकरे ते रतिकषाय कर्म है.
१ जाके उदे द्वेषरूप परिणाम होय सो अरति कर्म है. १ शोक कर्म, शोक करावे है.
१ भयकर्म उदे आवे, तव भय उपजै है. १ ग्लानिकर्म उदेसे जुगुप्सा (चिळस) उपजे है.
१ पुरुष सेवनके परिणाम सो स्त्रीवेद है १ स्त्रीकी अभिलाषाको पुरुष वेद कहीये.
१ स्त्री पुरुष दोन्युरूप परिणाम सो नपुंसक वेद है. इन सवको नो (किंचित) कषाय संज्ञा है.
ऐसें २५ कषाय चारिमोहनीय कर्मके है, ते आत्माको चारित्र अंगिकार न होनेदे है. दर्शन मोहनी की ३ अर चारित्र मोहनीकी २५ ऐसें २८ प्रकृतीके उदेसे सव संसारी जीव मतवालेके नाई मोहित होरहे है. इन मोहनी कर्मको जो नाशकरे ताको, यथाख्यात क्षायक सम्यक्त अर चारित्र प्राप्त होय है, ऐसे गुणोकरी शोभायमान होय है॥ ५६ ॥

॥ सोला कषायके दृष्टांत अर फल कहे है ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

पाथरकि रेखा, थंभ, पाथरको वासवीडा, कृमिरंग, सम चारौ नर्कमाहिले धरे॥
हल लीक, हाडथंभ, मेषासिंग, गाडीमल, क्रोध मान माया लोभ तीरजंचमे परे॥
रथ लीक, काठथंभ, गोमूतर, देहमैल, से कषाय भरे जीव मानूषमें औतरे॥
जलरेखा, वेतदंड, खूरपा, हलदरंग, द्यानत ये चारिभाव सुर्ग सिद्धीको करे॥५७॥

अर्थ—१क्रोध (स्वपरघात) १ मान (विनयका घात) १माया (दगावाज, कपट) १ लोभ (परिग्रहमें अशक्त) ये ४ कषाय हैं, इनमें परीणामके कम जादासे १६ भेद होय है.

१ अनंत अनुवंधीक्रोध, पाषाण उपरके रेखासमान अनंतकाल रहै है.
१ अनंत अनुबंधी मान, पाषाणके खंभ समान अनंतकाल टीके हे नमै नाहि.
१ अनंत अनुबंधी माया–वासबीडासम वा हरणके सिंगसम गूथ रहै, न खुले अनंतकाल रहै है.
१ अनंत अनुवंधीलोभ – कृमी (लाख)के रंग समान पका वैठे कदापिटसनहोय, अनंतकाल रहै.
ये ४ कषाय सम्यक्त्व (सत्यतत्वाकाश्रद्धान) न होनेदे अर नरक गतीमें वा निगोदमें लेजायहे.
१ अप्रत्याख्यानी क्रोध-हल(नांगर)के लीक समान छह महिनातक रहै है.
१ अप्रत्याख्यानी मान-हाडके थंभसमान है.
१ अप्रत्याख्यानी माया-मींढाके सिंगसमान लढके घस घसके कम होवे है.
१ अप्रत्याख्यानी लोभ-गाडीके धुरा समान है.
ये ४ कषाय सम्यक्तका नाश नकरे परंतु अनुव्रत ग्रहणकरणे नदे, अर तिरजंच गतीमे लेजाय.
१ प्रत्याख्यानीक्रोध-गाडीके चाकके लीक समान है. १ प्रत्याख्यानी माया-गोमूत्ररंगसमान है.
१ प्रत्याख्यानी मान, काठके थंभ समान है. १ प्र० लोभ-शरीरके उपरके मैल धूल समान है.
ये ४ कषाय महाव्रत ग्रहण करने नदे. ये ४ कषाय पंधरादिन रहैहे अर मनुष्यगतीमें लेजाय है.
१ संज्वलन क्रोध– जलके लीकसमान है, १ संज्वल मान– बेतके छडीसमान है, १ संज्वलन माया– खुरपासमान हे, १ संज्वलन लोभ– हलदीके रंगसमान है. द्यानतराय कहै, ये ४ कषाय देवगतीमें लेजाय है, यथाख्यात चारित्रने होनेदे है ॥ ५७ ॥

॥ चार अघातिय कर्मके १०१ भेद है, सो कहे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

साता औ असाता दोय, वेदनि, नरक,पशु,नर, सूर, अउ चार उंच,नीच,गोत है ॥
नामकि, तीरानु, एकसत एक अघातीया. आदितीन,अंतराय थीति तीस होत है ॥
नाम गोत वीस, मोहनि सत्तरि कोडाकोडि दधि, आउकि सागर तेतीस उदोत है ॥
वेदनि चोवीस घडि, सोलैनाम,गोत,पांचौ अंतर मुहूरत, विनासै ज्ञानजोत है ॥५८॥

अर्थ– २ प्रकृती वेदनीकर्मकी, ४ आयुकर्मकी, २ गोत्रकर्मकी, ९३ नामकर्मकी, सबमिले १०१ होय है. येप्रकृती आत्माके गुणने घाते नाहीं, ताते इनकों अघातिया कर्म कहै है.

१ सुखको वेदै (देवै) सो सातावेदनी कर्म हैं. १ दुखकोवेदै सो असाता वेदनी कर्म है. ऐसे वेदकर्म २ कहे. आयुकर्म ४ प्रकारके हैं सो कहे है.

१ नरकगतीमें स्थिरकरे वो नरक आयुकर्म है. १ पशूगतीमें स्थिरकरे वो पशूआयुकर्म है.
१ मनुष्यगतीमें स्थिरकरे सो मनुष्य आयु है. १ देवगतीमें स्थिरकरे सो देव आयुकर्म है.
१ नीचगोत्रकर्मनीचकुलमें उपजावे. १ उंच गोत्रकर्म उंच कुलमे उपजावे. ये २ गोत्रकर्म है.॥

॥ नाम कर्मके ९३ भेद है, ते आगेके ६० वे कवीतमें कहे हैं तहाते देखिलेना ॥

॥ अब आठ कर्मकी जघन्य अर उत्कृष्ट स्थिति कहै है ॥

ज्ञान अवर्णीय कर्म, दर्शन अवर्णीय कर्म, वेदनीय कर्म, अंतरायकर्म. इन चारकर्मको उत्कृष्ट स्थितिबंध तीस तीस कोडा कोडी सागरका है ॥

नामकर्म अर गोत्रकर्म इन दोयकर्मका उत्कृष्ट स्थितिबंध वीस वीस कोडा कोडी सागरका है.
१ मोहनीय कर्मका उत्कृष्ट स्थितिबंध सत्तर कोडा कोडी सागरका है.
१ आयुकर्मका उत्कृष्टस्थितिबंध तेतीस ३३ सागरका है ॥ अबजघन्य स्थितिकहै है. ॥
१ वेदनी कर्मकी जघन्यस्थिति २४ घडी (१२ मुहूर्त)कीहै. नामकर्म, गोत्रकर्मकी, स्थिति १६।१६ घडी की है. ज्ञानावरणीय, दरशनावरणीय, मोहनीय, अंतराय, आयुकर्म. इन ५ कर्मकी जघन्यस्थिति अंतर्मुहूर्तकी अंतरमुहूर्तकी है. इन आठौ कर्मका ४ प्रकारे बंध (१ प्रकृतिबंध, १ स्थितिबंध १अनुभागबंध १प्रदेशबंध,) है, इनका नाश. सम्यक्ज्ञान (केवलज्ञान) जोतिके प्रभावकरि होय है॥५८॥

॥ नामकर्मके ९३ भेद है, सो कहै है ॥ सवैया ३१ ॥

तन, बंधन, संघात, वरण, रस, जाति, पंच; संस्थान, संहनन, षट आठफास है ॥
गति, आनुपूर विहै चार. दो विहायगंध, अंगतीन, पैसठये त्रस, थूल, भास है ॥
पर्यापति, थीर, सूभ सूभग, प्रत्येक, जस सुस्वर, आदर, दो दो. नीरमान स्वास है॥
अपघात, परघात, अगूरुलघु. आताप. उदोत तीर्थंकरको वंदौ अघ नाश है ॥५९॥

अर्थ– नामकर्मकी ९३ प्रकृती है –उसीमें पिंडप्रकृति ६५ है, अपिंडप्रकृती २८ है. सो कहै है.
५ शरीरकर्म है –१ औदारिकशरीर १ वैक्रियशरीर १ आहारकशरीर १ तैजसश० १ कार्माणश०
५ वंधन है–औदारिकशरीरबंधन वैक्रियकबंधन, आहारकबंधन, तैजसबंधन, कार्माणबंधन.

५ संघात है–औदारिकशरीरसंघात, वैक्रियसंघात, आहारकसंघात,तैजससंघात, कार्माणसंघात.
३ आंग उपांगकर्म है– १ औदारिकशरीरआंगोपांग, १ वैक्रियआंगोपांग १ आहारकआंगोपांग.
५ पाच प्रकारे वर्णनामकर्म हैं – १कालो, १ पीलो, १ ह्र्यो, १ लाल, १ सुपेद.
५ पांच प्रकारे रस नामकर्म है– १ खाटो, १ मीठो, १ कडवो, १ तीखो, १ कसायलो.
५ पांच प्रकारे जाति नाम कर्म है– १ एकेंद्री. १ बेइंद्री १ तेइंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री.
६ छह प्रकारे संहनन (हाड) नामकर्म है– १ वज्रवृषभनाराच सहनन १ वज्रनाराच सहनन १ नाराच संहनन १ अर्धनाराच संहनन १ कीलक संहनन १ स्फाटिक संहनन.
६ प्रकारे संस्थान (शरीरके आकार) नाम कर्महे – १ समचतुरस्र संस्थान १ न्यग्रोधपरिमंडळसंस्थान १ वामन संस्थान १ वाल्मिकखातिक संस्थान १ कुब्जक संस्थान १ हुंडक संस्थान.
८ प्रकारे स्पर्श नाम कर्म है १ तातो १ शीत १ हलको १ भारी १ नरम १ कठोर १ लूखो १ चिकणो
४ प्रकारे गतिनामकर्म है– नरकगति १ तिर्यंचगति १ मनुष्यगति १ देवगति.
४ अनुपूर्वी कर्म है–१नरकगती अनुपूर्वी १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्या० १ देवगत्यानु०
२ प्रकारे विहायो गतिकर्म है–१प्रशस्त(सीधे)गमन, १अप्रशस्त (तेडे वांके) गमन (चाल)
२ प्रकारे गंधकर्म है–१ सुगंध १ दुर्गंध. ॥ सबमिलिके ६५ पिंडप्रकृती भई ॥

॥ अब नामकर्मकी अपिंडप्रकृती २८ कहे है ॥

१ त्रस १ स्थावर १ बादर १ सूक्ष्म १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ सौभाग्य

१ दुर्भाग्य १ प्रत्येक १ साधारण १ जस १ अजस १ सुस्वर १ दुस्वर १ आदेय १ अनादेय १ स्थाननिर्माण प्रमाणनिर्माण १ श्वास उश्वास १ अपघात १ परघात न हलको न भारी १ आताप १ उद्योत १ तीर्थंकर (दर्शनविशुद्धि) ये २८ भई. दर्शन विशुध्यादि षोडशभावनातै तीर्थंकरप्रकृतीका बंध हो है. सो चौविस तीर्थंकरदेवकों मै नमस्कार करू हूं तातै पापका नाश होय॥ ॥ ६२ प्रकृती पुद्गल विपाकी, ४ भवविपाकी ४ क्षेत्रविपाकी, ७८ जीव विपाकी है ॥ ३१ ॥ सा ॥

॥ वरनादीकवीस, संस्थान, संहनन बार बंधन संघात, देह, आंगोपांग ठार है ॥
अगूरुलघु, आताप, अपघात, परघात, नीरमान, परतेक, साधारण, सार है ॥
अथीर उदोतथीर सूभ अशूभ बासठ पुग्गल विपाकि भौविपाकि आउचार है ॥
क्षेत्र विपाकि है चार अनुपूरवि अठत्तर बाकीजीव विपाकी धारे अघटार है ॥६०॥

अर्थ–५ वर्ण, २ गंध, ८ स्पर्श, ५ रस, ६ संस्थान (शरीके आकार) ६ संहनन, ५ शरीर, ५ बंधन, ५ संघात, ३ अंग उपांग १ न हालक्यो न भारी, १ अताप (उष्ण) १ अपघात, १ परघात, १ निर्मान, १ प्रत्येक १ अनंत जीव पाईये सो साधारण है १ धातु रक्तकी चलाचल होय सो अथीर, १ उद्योत (दीपै) १ थीर (धातु मांस रक्त अचल) १ जस भला होना १ अजस बुरा होना. ये ६२ प्रकृती पुद्गलमें उदैआवे, भोगै तातै पुद्गल विपाकी कही है. अर १ नरक आयु. १ तिर्यंच आयु, १ मनुष्य आयु, १ देव आयु. इन चार प्रकृतीका उदय भव (गती) में आवै, तातै भव विपाकी कही है. १ नरकगती अनुपूर्वी. १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १

मनुष्य गत्यानुपूर्वी, १ देवगत्यानु पूर्वी. ये ४ प्रकृतीका बंध भवके पूर्वी होय, तातै पूर्वी कहे अर परक्षेत्रकौ लिजाने वाली है, तातै क्षेत्रविपाकी कही है॥ ५ प्रकृती ज्ञानावर्णीकर्मकी, ९ प्रकृती दर्शनावर्णीकर्मकी, २८ प्रकृती मोहनीकर्मकी, ५ प्रकृतीअंतरायकी. ये ४७ प्रकृती चार घातियाकर्मकी अर २ प्रकृती गोत्रकर्मकी, २ प्रकृती वेदनीकर्मकी, अर २७ प्रकृति नामकर्मकी—

५ प्रकारे जातीनामकर्म—१एकेंद्री १ बेइंद्री १ तेइंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री.

४ प्रकारे गतीनामकर्म—१नरकगती १ तिर्यंचगती १ मनुष्यगती १ देवगती.

२ प्रकारे चाल नामकर्म—१प्रशस्तचाल १ अप्रशस्तचाल. विहायोगती.

१ त्रस १ थावर १ वादर १ सूक्ष्म १ पर्याप्त १ अपर्याप्त १ शुभ १ अशुभ १ सौभाग्य १ दुर्भाग्य १ सुस्वर १ दुस्वर १ आदर १ अनादर १ श्वासोश्वास १ सम्यक्त. ऐसें ७८ प्रकृती जीवविपाकी है. नामकर्मकी २७ प्रकृति जीव विपाकी है, बाकी नामकर्मकी ६२ प्रकृती शरीर विपाकी है, अर ४ प्रकृती क्षेत्र विपाकी है, ऐसे ९३ प्रकृतीनामकर्मकी है. किसी ग्रंथमे १०२ कही है, सो शरीरके ५ भेद है, उसके १५ भेद कहे है, सो गोमट सारमें कर्मकांडतै जानना. ॥

६२ प्रकृती पुद्गल (शरीर) विपाकी, ४ प्रकृती भव विपाकी, ४ प्रकृती क्षेत्र विपाकी, ७८ प्रकृती जीव विपाकी, ऐसें १४८ कर्म प्रकृतीकौ जो धारन (श्रद्धा) करै सो पापतै छूटे है॥६०॥

॥ घातिया कर्मके दोय भेदहै, सर्वघाति २१ देशघाति २६ ॥ ३१ सा ॥

केवलदरस, ज्ञान आवरण, बाकिदोय मिथ्यात, समैमिथ्यात, निद्रापांचभानीये॥

तीनौ चौकरीकि बारै, सर्वघाति ईकइस, संज्ुलनचार, नवनो कषाय मानीये ॥
ज्ञान आवरण चार. दरसनावर्ण तीन. अंतराय पांच. सम्यक मिथ्यात ठानीये ॥
देशघातीया छवीस. बाकि ईकसौ अघाति तीनौ घातकर्मघात आपशुद्ध जानीये ६१

अर्थ—१केवलज्ञान अवर्ण १ केवलदर्शन अवर्ण १ मिथ्यात्व १ समै (मिश्र) मिथ्यात्व. १ निद्रा १ निद्रानिद्रा १ प्रचला १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानगृद्धिनिद्रा ॥ अनंतानुबंधी क्रोध १ मान १ माया १ लोभ, अर प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान १ माया १ लोभ, अर अप्रत्याख्यानी १ क्रोध १ मान १ माया १ लोभ. ऐसा २१ प्रकृति आत्मगुणकौ सर्वथा घातै है. संज्वलन क्रोध, १ मान, १ माया लोभ १ अर नोकषाय १ हास्य १ रति १ अरति १ शोक १ भय १ जुगुप्सा १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद १ नपुंसकवेद. अर ज्ञान अवर्णकी चार १ मति १ श्रुति १ अवधि १ मनपर्यय. अर दर्शन अवर्णकी तीन १ चक्षु १ अचक्षु १ अवधि. अंतरायकी पांच १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य. १ सम्यकप्रकृती मिथ्यात्व. ऐसी २६ प्रकृती आत्माके गुणकौ येक देशघातै, तातै देशघातिया कर्मकी है ॥ देशघातिया २६ सर्वघातिया २१ अघातिया १०१ इन सब (१४८) का नाशकरै तब आत्मा मोक्षकौ जाय हैं ॥ ६१ ॥

॥ पापप्रकृती १०० है, सो कहैहै ॥ सवैया ३१ सा ॥

घाति सैतालीस दुःख, नीच, नरक आयु, पंचसंस्थान, संहनन, वर्ण, रस, मानीये॥
नर्क पशुगति, आनुपूरवि, फरस आठ, गंध दोय, इंद्रिचार. बूरिचालठानीये ॥

अथीर, अपर्यापत, सूक्ष्म और साधारण, परघात, थावर, अशूभ परमानीये ॥
दुर्भग, दुस्वर औ आनादर, आजसरूप, पापप्रकृती सौभेदत्यागि, धर्मजानीये ॥६२॥

अर्थ—मन वचन कायकी वक्रता (अशुभ परिणाम) करै सो पापप्रकृतीका बंध होय है चार घातिया कर्मकी ४७ प्रकृतीहै सो सवी पापप्रकृती है अर १ असाता वेदनी १ नीचगोत्र १ नरक आयु ५ संस्थान सम चतुरस्रसंथान विना. ५ संहनन वज्र वृषभ नाराच संहननविना. ५ वर्ण ५ रस अर १ नरकगती १ पशूगती. १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी ८ स्पर्श. १ सुगंध १ दुर्गंध १ एकेंद्री १ बेइंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ अप्रशस्तचाल १ अस्थिर १ अपर्याप्त १ सूक्ष्म १ साधारण १ परघात १ स्थावर १ अशुभ १ दुर्भाग्य १ दुस्वर १ अनादर १ अजस. ये १०० प्रकृती पापकीहै, इनकौ जो मन वचन काय करिकै त्यागै, सोही जीव धर्मात्मा जानीये ॥ ६२ ॥

॥ पुण्यप्रकृती ६८ है, सो कहैहै. ॥ सवैया ३१ सा ॥

सूरनर पशु आव, साता, उंच. भलिचाल, सूरनर आनुपुर्वि नीरमान, स्वास है ॥
बंधन, संघात, देह, वरण, रसन पंच. तीन अंग, शूभ दोयगंध, आठ फास है ॥
अगूरुलघु, पंचेंद्रि, संस्थान, संहन, बादर, प्रतेक, थीर पर्यापत जस त्रस है ॥
आताप उद्योत परघात सुस्वर सूभग आदर तीर्थंकरकौ वंदो अघनाश है ॥६३॥

अर्थ—मन वचन कायकी सरलता (शुभपरीणाम) सै पुण्यप्रकृतीका बंध होयहै. १ देव आयु १

मनुष्यआयु १ तिर्यंच आयु १ साता वेदनी १ उंचगोत्र १ प्रशस्तचाल १ देवगती १ मनुष्यगती १ देवगत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्यानुपूर्वी १ निर्माण १ श्वासोश्वास ५ बंधन ५ संधात ५ देह औदारिकादि. ५ वर्ण ५ रस. १ औदारिक आंगोपांग १ वैक्रियक आंगोपांग १ आहारक आंगोपांग. १ शुभ १ सुगंध १ दुर्गंध. ८ स्पर्श १ अगुरु लघु १ पंचइंद्री १ सम चतुर संस्थान १ वज्र वृषभ नाराच संहनन १ बादर १ प्रत्येक १ स्थिर १ पर्याप्त १ जस, १ त्रस अताप १ उद्योत १ परघात १ सुस्वर १ सौभाग्य १ आदर १ तीर्थंकर (दर्शन विशुद्धी) सबमिली ६८ पुण्यप्रकृती है. सब पुण्य प्रकृतीमें दर्शन विशुद्धी प्रकृती अचिंत्य महिमाको धारक तीर्थंकर पदके कारण है, तातै तिनको वंदिवेतै पापका नाश होहै ॥ ६३ ॥

॥ कर्मको बंध, उदय, सता, कथन ॥ छंद छपै ॥

बंध एकसो वीस. उदय सो बाइस आवै ॥ सता सौ अठताल, पापकी
सो कहिलावै ॥ पुन्य प्रकृती अठसठि. अठत्तर जीव विपाकी ॥
बासठ देह विपाकि. खेत भव, चवचव. बाकी ॥ इकईस सर्वघाति प्रकृति.
देशघाति छवीस है ॥ बाकी अघात इकशत भिन्न सिद्धसिव ईस है ॥ ६४ ॥

अर्थ—आठ कर्मकी १४८ प्रकृतीमे बंधयोग्य १२० है और २८ प्रकृति इनमें गर्भित है. उदयमें कर्मप्रकृति १२२ आवै है और २६ प्रकृती इनमें गर्भितहै ॥ इसका वर्णन ६६ कवितमें हैं अर सतामें १४८ प्रकृति पाइये है. पापप्रकृती १०० शत है ॥ पुन्यकी प्रकृती६८है. पापपुन्य दोनूकी

प्रकृति १६८ भई, आठ कर्मकी १४८ प्रकृती है अर बीस कैसी बधी सो कहेहै ॥
५ वर्ण ५ रस २ गंध ८ स्पर्श ये २० प्रकृति पापमे गिणी है अर पुन्यमेंभी गिणी है, तातैं वीस बधी. ७८ प्रकृति जीव विपाकीहै, ६२ प्रकृति पुद्गल विपाकीहैं, ४ प्रकृति क्षेत्र विपाकी है, ४ प्रकृती भव विपाकी है. ऐसें १४८ है. वा २१ प्रकृति सर्वघाति, २६ देशघाति, १०१ अघाति ऐसें १४८ है. इन सब कर्मते भिन्न आत्मा सिद्ध है, शिव (मोक्ष) का ईश्वर है ॥ ६४ ॥

॥ पांच त्रिभंगी (१ बंध १ उदय १ उदीरणा १ सत्ता १ विशेषसत्ता) ॥ सवैया ३१ ॥

वर्णादि चार, सोलनाहि, देहादीक पांच, दशनाहि, मिथ्यात एक दोय बंध नाही है॥
सोलै दस दोयवीना बंध एकशत वीस. मिथाउदै तीन दोय बढै उदैयाही है ॥
उदै औ उदीरना एकशत बाईसकि. आठताल, विशेषसत्ता नानाजीव ठाही है ॥
मिथ्या गूण सो छीयाल काहु सत सत्ताईस.पांचों तीर भंगि सों असंगि आप माहीहै ॥

अर्थ–पांच वर्णमें कोइ एक वर्ण लेना, पांच रसमें कोइ १ रस लेना, दोनो गंधमें कोई १ गंध लेना, आठ स्पर्शमें कोइ १ स्पर्श लेना, इनवीस प्रकृतीमे बंध योग्य ४ प्रकृति है. बाकी १६ प्रकृती गर्भीत है. पांच शरीर, पांच बंधन, पांच संघात, इनपंद्रामें ५ शरीर प्रकृती बंध योग्य है, १० बंध योग्य नही है. ३ प्रकृती दर्शन मोहकी है, उसीमें बंध योग्य १ मिथ्यात्व है, बाकी २ मिथ्यात्व प्रकृति गर्भितहै, बंध योग्यनही है. ऐसें २८ प्रकृति बंध योग्य नही गर्भितहै, तातै २८ विना, बंध योग्य १२० ही प्रकृतीहै. अर उदयमे तीनूही मिथ्यात्व आवै है तातै बंधतै उदयमे २ प्रकृती जादा

है, १२२ उदयमे है ॥ अर १२२ प्रकृती उदय आवै ताका तपके बलसे क्षय करणा सो उदीरना १२२ की है. नानाजीव अपेक्षा सता १४८ प्रकृतीकी पाइये. अर एक जीवकी अपेक्षा कहना सो विशेष सत्ता कहीये ॥ जैसे कोइ एकजीव मिथ्यात्व गुणस्थानमें बहूत सत्ता पाईये तो १४६ अर किसी जीवके १२७ पाईये. इनका विशेष त्रिभंगी सारमें देखना. इन पांचौ त्रिभंगीसे आतमा असंगी (जूदा) है, अपने निजसत्तामें विराजे है ॥ ६५ ॥

॥ कर्मबंध दश प्रकारे है सो कहै है. ॥ छप्पै ॥

जीवकर्ममिलि बंध, देय रस तास उदै भनि ॥ उदीरणा उपाय रहे, जबलौ सत्ता गिणि ॥ उतकर्षण थितिबढै, घटै अप कर्षण कहियत ॥ संक्रमण परूपण उदीरन विन उपशम मत ॥ संक्रमण उदीरण विन निधत, घटि बधि उदीरण संक्रमन ॥ चहुविना निकांचित बंध दस, भिन्न आपपद जानि मन ॥ ६६ ॥

अर्थ–१ जीवनै परकौ आप मान्या तव नूतन कर्म अर आत्मा मिलिके कर्मका बंध होता है.
१ जो प्रकृति उदय आय रसदे है, पुराने कर्म आपना रसदेविना नखिरै सो उदय बंध कहीये
१ आयुकर्म विना बाकी सातकर्मकी प्रकृती तपके जोरतै खिपावै सो उदीरणा बंधहै.
१ कर्म प्रकृतीकाबंधतो हुवा परंतु उदय नहीआया, सत्तामे रह्यो सो सत्तावंध कहीये.
१ जो प्रकृती बांधी तिसको फेर परिनाम निमत्त पाय थिति बढावै सो उत्कर्षण बंध है.
१ वर्तमानआयुविना, कीया बंधकौ फेर परिनाम निमित्त पाय बंधथिति घटावै सो अपकर्षण है.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकौ परिणाम निमित्त पाय दुसरे प्रकृतीमें मिलावै सो संक्रमण बंध है.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकी उदीरणा न होय सो उपशम बंध कहीये ॥

१ जो प्रकृति बांधी वो दूसरे प्रकृतीमे नमिले न उदीरणा होय सो निधत्त बंध कहीये.

१ जो प्रकृति बांधी तिसकी थिति नघटे नबढे, न उदीरणा होय, न संक्रमण होय सो निःकांचितबंधहै. ऐसें दस बंधरहित आत्माका पद है सो जानना ॥ ६६ ॥

॥ आयुकर्मका नव त्रिभागकरि बंधहोय है, सो कथन ॥ कवित्त ॥

आउ अंस पैंसठिसै इकसठि. इकइससै सित्यासीजानि ॥ सात शतक उनतीस. दोयसै तेतालिस. इक्यासि मानि ॥ सताईस, और नौ, तीन, एक, आठवा भेद वखान ॥ नौमि अंतकालमें बांधै अगली गतिकी आउ निदान ॥ ६७ ॥

अर्थ–जैसै कोऊका आयु६५६१वर्षका है, उसकै त्रिभाग(२१८७)में परभवका आयु बंध होयहै॥ तहां नही होय तो २१८७ के त्रिभाग ७२९ में आगले गतीका आयु बंध होय. तहां नहीबंधै तो ७२९ के त्रिभाग (२४३) मे आगले भवका आयु बंध होय. तहांही आयुबंध नहोय तो २४३ के त्रिभाग ८१ में आगले भवका आयु बंध करै ॥ तहांही आयु बंधनकरै तो ८१ के त्रिभाग २७ में आगले भवका आयु बंध होय. तहांही नही बंधै तो २७ के त्रिभाग ९ में परभवका आयु बंध करै. तहांही आयु नबंधै तो ९ के त्रिभाग ३ में अगले गतीका आयु बांधै.

तहांही बंध नकरै तो ३ के त्रिभाग १ में परभवका आयु बंध करै, ऐसे आठवार त्रिभागकरै. नौमीवार अंतसमै अवस्य त्रिभागकरि निःकांचित्तबंध करै,आगली गतिका आयु बंध होय. यह नेमहै. आगली गतीका आयु बांधे विना, वर्तमान भुज्यमान आयु न सोडे (मृत्यु नकरे) आयु कर्मका बंध त्रिभागमेही होताहै, त्रिभागविना होतानही है यह नेम है. ॥ ६७ ॥

॥ पंच परावर्तन (भाव, भव, काल, क्षेत्र, पुद्गल) कहे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

भाव परा वर्तनअनंतुतै कर जीव. एक भावसौ अनंत भवके परावर्त है ॥
एक भौसेति अनंत काल परावर्त करै कालतैअनंत खेत परावर्त कर्त है ॥ येक
खेततै अनंत पुग्गल परावर्तन. पंचफेरा वीषैआप मिथ्यावस वर्तै है ॥ सातको
वीनाश जीनै सम्यक प्रकाश तेइ दर्व खेत काल भव भावतै निकर्त है ॥ ६८ ॥

अर्थ–संसारमे मिथ्यात्वके वसिहोय इस जीवनै अनंते भाव परावर्त कीये, अनंते काल संसारमें भ्रमण कीया, सो जिनप्रभुभगवानके ज्ञानमें गम्य है. जितने कालमें येक भाव परावर्तन पूराकरे, तितने कालमें अनंते भव परावर्तन होतहै ॥ भावार्थ ॥ येक समयमें मिथ्यात्वभासे बांधेकर्म क्षयकरनेकौ अनंत भव परावर्तन होयहै अर येक भवके कर्म दूर करनेकौ, अनंतकाल परावर्तन होयहै, अनंतके अनंत भेदहै. जितने कालमें येककाल परावर्तन पूराहोय, तितने कालमें अनंत क्षेत्र परावर्तन होयहै. येक क्षेत्रके बांधे कर्म दूर करनेकौ अनंत पुद्गल परावर्तन होयहै. ऐसे ५ परावर्तनमें अनंतवार जनम्या, अनंतवार मूवा, मिथ्यात्व वसि हुवा जीव अनंतकाल भ्रम्या

अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, अर मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्व. ऐसें ७ प्रकृतीकौ क्षयकरै तब क्षायिक सम्यक्त होय, आतमा पंच परावर्तनसे रहित होय है ॥६८॥

॥ पुनः पंच परावर्तनका स्वरूप कहै है ॥ सवैया ३१ ॥

भाव परावर्तन अनंत भाग भवकाल, भव परावर्तन अनंत भाग काल है॥ काल
परावर्तन अनंत भाग क्षेत्र कह्यो, खेतको अनंत भाग पुग्गल विशाल है ॥ ता
को आधोनाम अर्ध पुद्गल परावर्त न, फीरनो रह्यो है योहि ज्ञानीज्ञान भाल है॥
ताहि समै सम्यक ऊपजवेको जोग भयो, और कहां सम्यकत लरकौका स्यालहै६९

अर्थ–१ कषाय अद्य वसाय स्थान, १ अनुभाग बंध अद्यवसाय स्थान, १ जोगस्थान, १ स्थिति-स्थान, ऐसे परिणामकी प्रचुरता (बहुलता) का नाम भाव परावर्तन है. नरक गतीका जघन्य आयु दश हजार वर्षका अर उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरका. १ मनुष्यगती १ तिर्यंच गती. इन दोन्यूगतीका जघन्य आयु अंतर्मुहूर्तका, अर उत्कृष्ट आयु ३ पल्प. देवगतीका जघन्य आयु दश हजार वर्षका अर उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरका है. ऐसें चारौगतीका जामन मरण जघन्यते उत्कृष्ट पर्यंत करै, सो १ भव परावर्तन है, सो भाव परावर्तनकै अनंतवे भाग भव परावर्तनका कालहै, एक भाव परावर्तनके कालमें अनंते भव परावर्तन होजाय है.

भव परावर्तनके अनंतवे भाग काल परावर्तनका काल है, एकभव परावर्तनमें अनंते काल परा-

वर्तन होय है, वीस कोडाकोडी सागरका येक कल्पकाळ होहै, ताकै उत्सर्पिणी १ अवसर्पिणी १ ये दोय भेदहै, वीस कोडाकोडी सागरके जीतने समय होय तिन सब समयकौ अनुक्रमतै जन्म मरण पूरणकरै ताका नाम काल परावर्तन है ॥

काल परावर्तनके अनंतवे भाग क्षेत्रपरावर्तन है, एककाल परावर्तनमें अनंते क्षेत्र परावर्तन होयहै. क्षेत्र परावर्तन दोय प्रकारहै, स्वक्षेत्र परावर्तन, परक्षेत्र परावर्तन. सूक्ष्म निगोद अलब्ध पर्यासकी जघन्य अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवे भागहै, तहांसु लेय अर हजार योजन लंबो, पांचसै योजन चौडो, आढाइसै योजन उंचो, जो महामच्छहै, ताकी उत्कृष्ट अवगाहना पर्यंत येकयेक प्रदेश बधती अवगाहना अनुक्रमतै जन्म मरण पूराकरै सो स्वक्षेत्र परावर्तन है.

मेरूकी जडतले मध्यमें आठ प्रदेशहै तिनतै एकएक प्रदेश भिख्याका टाकाकी नाई सरकि सरकि तीन लोकके असंख्यात प्रदेशमें जामन मरण पूराकरै सो परक्षेत्र परावर्तनहै, स्वक्षेत्र परक्षेत्र दोनूका काल इकठा करिये तब एक क्षेत्र परावर्तनका काल होय है.

क्षेत्र परावर्तनके अनंतवे भाग पुद्गल परावर्तन है, एक क्षेत्र परावर्त कालमें अनंते पुद्गल परावर्तन होयहै, ताके दोय भेदहै. १ नो कर्म (पाव) पुद्गल परावर्तन १ कर्म पुद्गल परावर्तन. नोकर्म पुद्गल परमाणू अग्रहीत अनंतावार ग्रहणकरै तव एकवार मिश्र (अग्रहीत ग्रहीत) परमाणू होय ग्रहण करै है. पुनःअनंत अग्रहीत ग्रहण करै फेर दूजीवार मिश्र ग्रहणकरै है, ऐसे मिश्र अनंत होजाय तब येवार ग्रहीत ग्रहण करै तब मिश्र परमाणू होय ग्रहण करै है, ऐसे पूर्वोक्त

विधितै ग्रहीत परमाणूभी अनंत होजाय अनंत अग्रहीत, अनंतमिश्र, अनंतग्रहीत. इन तीनोंके ग्रहणमें जे तो काल लागेहै, सो पाव पुद्गल परावर्तनका काल होयहै, इनकौ चोगुणा करिये तब येक पुद्गल परावर्तन (कर्म पुद्गल परावर्तन) जानना ॥

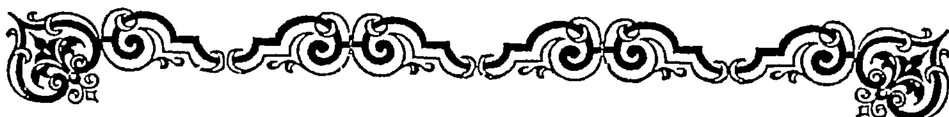
पुद्गल परावर्तन कालके आधाकालकौ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल कहैहै. अर अर्ध पुद्गल परावर्तनका नाम काललब्धिहै, जीव मिथ्यात्व परिणामसे संसारमें अनंतवार अनंत परिवर्तन करेहै, जब उसके, अर्ध पुद्गल परावर्तन प्रमाण संसारका भ्रमण बाकी रहेगा तब ज्ञानी जाने काललब्धी भई है (सम्यक उपजने योग्य भया) है अर अर्ध पुद्गल परावर्तनसे येक समय अधिक संसारमे जिसको भ्रमण रह्याहोय तो तिसकौ सम्यक्त न उपजे यह नियम है. जो जीव सम्यक्त पावे सो जीव अंतर्मुहूर्ततै लेकर अर्ध पुद्गल परावर्तन पर्यंत कभीही मोक्ष जायगा बाधानही. बहूत भ्रमेतो अर्ध पुद्गल परावर्तनसे जादाकाल न भ्रमै. इस भांति सम्यक्त पावे है, अर सम्यक्त कहां लडकोका ख्याल है ! सम्यक्त पावना महादुर्लभ है ॥ ६९ ॥

॥ ६३ प्रकृतीका नाशहोय तब केवलज्ञान उपजै है ॥ ३१ सा ॥

नरक, पशुगति, आनुपूरवि प्रकृति चार. पंचेंद्रि वीना चार, आताप, उदोत है ॥
साधारण सूक्षम, थावर, प्रकृति तेरे नर आव वीना तीन मीलि सोलह होत है॥
सैतालीस घाती याकि त्रेसठ प्रकृति सर्व नाश भये तीर्थंकर ज्ञानमइ जोत है ॥
देवनीकैदेव अरिहंत है परम पूज्य तीनहीकौ बिंबपूजि होहि उंच गोत है ॥७०॥

अर्थ—१ नरकगती १ तिर्यंचगती १ नरकगती अनुपूर्वी १ तिर्यंचगती अनुपूरवी. १ येकेंद्री १ बेंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ आताप १ उद्योत १ साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर ये १३ प्रकृती नामकर्मकी अर १ नरक आयु १ तिर्यंच आयु १ देव आयु ये ३ मिले तब १६ प्रकृति अघातियामेकी है. अर ९ दर्शनावर्णी ५ ज्ञानावर्णी २८ मोहनीकी ५ अंतराय ये ४७ घातियाकी ऐसे ६३ प्रकृतीका नाशहोय जब प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध, प्रदेशबंध, ये सर्व नाश होयहै तब तीर्थंकर देवकौ तीर्थंकर प्रकृतीका उदय होयहै. केवलज्ञान दर्शन ज्योतिमई निजस्वभाव, प्रगट होतहै, तब अर्हंत कहावे है ॥ इंद्रादिक सब देवमें अर्हंत देव श्रेष्ठहै, परम पूज्यहै, तिनके प्रतिबिंबकौ नमस्कारकीयेते पूजनकीयेते उंच गोत्रका बंध होहै, उंच कुलमे उपजेहैं ॥ ७० ॥

॥ इति कर्मबंध वर्णन समास ॥ ४ ॥



॥ अथ चतुर्दश गुणस्थान वर्णन प्रारंभः ॥ ५ ॥

॥ श्री गोमटसारग्रथके आदिमें नमस्कार ॥ छप्पै ॥

वंदौ नेमि जिनंद, नमौ चोवीस जिनेश्वर ॥ महावीर वंदामि, वंदिसब सिद्ध
महेश्वर ॥ शुद्धजीव प्रणमामि, पंचपद प्रणमौ सुख अति ॥ गोमटसार नमामि,
नेमिचंद आचारजनिति ॥ जिन, सिद्ध शुद्ध, अकलंक वर, गुण मणिभूषण
उदयधर ॥ कहूं वीस परूपणा भावसौ. यह मंगल, सब विघन हर ॥ ७१ ॥

अर्थ—श्री नेमिनाथ बावीसमा तीर्थंकरकौ वंदौ हूं, चौवीस जिनेश्वरकौ मेरा नमस्कार होहूं ॥ महावीर स्वामीकौ मेरी वंदना है, सब अनंत सिद्धोंकौ तीर्थंकरके ईश्वरकौ वंदना करूं हूं ॥ ज्ञानमयी शुद्ध जीवने मेरा नमस्कार है, पंच परमेठीकौ मेरा नमस्कार है ॥ गोमट (आत्म). सार ग्रंथकौ मेरा नमस्कार है, नेमिचंद्र आचार्यने मेरा नमस्कार है, जिन है, सिद्धहै, शुद्ध है अकलंक है, वर (विशिष्ट) है, ये सब विशेषण आठठोर मिलायलेने. अर गुण तेही भये रतनमयी आभूषण, तिन करिकै दैदीप्यमान है ॥ नेमिचंद्र आचार्य सिद्धांत चक्रवर्तिनें गोमटसार ग्रंथके आदिमें इन आठ ठोर नमस्कारकरी वीस प्ररूपणा भावसो कही है, इन आठो ठोरका नमस्कार महामंगलकारीहै. सब विघ्नोका हरनेवाला है, ॥ ७१ ॥

॥ चौदा मार्गणामे पांच प्ररूपणा गर्भित कहैहै ॥ ३१ सा ॥

जीवसमास, परजापत, मन वच श्वास, इंद्रि काय मांहि आउगतिमें वखानीये ॥
कायबल, जोगमांहि इंद्रि पांच, प्राणमाहि आहारक, परिग्रह, लोभमे वखानीये॥
क्रोधमांहि भय अरु वेदमाहि, मैथून है; ज्ञान ज्ञानमाहि दर्शदर्शमाहि जानीये ॥
पांचौ प्ररूपणा इह चौदहमें गर्भित है, गूणठाण मारगणा दोय भेद मानीये ॥७२॥

अर्थ– १ जीवसमास १ पर्याप्ति १ प्राण १ संज्ञा १ उपयोग, ये पांच प्ररूपणा चौदा मार्गणामें गर्भित है सो कहैहै. १९ जीव समास, ६ पर्याप्ति, १ मन प्राण १ वचनप्राण १ श्वासोच्छ्वास प्राण १ इंद्रीप्राण, ये काय मार्गणामें गर्भित है. अर आयुप्राण गती मार्गणामें गर्भित है॥ कायप्राण. योगमार्गनामें गर्भित है, अर पांचौ इंद्री, प्राणमें गर्भित है. आहारकसंज्ञा अर परिग्रहसंज्ञा, लोभ कषाय मार्गणामें गर्भित है ॥ अर भयसंज्ञा क्रोधमार्गणामें गर्भित आगई. मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणामें गर्भित आगई. ज्ञानोपयोग ज्ञानमार्गनामें आगया, अर दर्शनोपयोग दर्शन मार्गनामें गर्भित है ॥ ऐसे पांच प्ररूपणा चौदा मार्गणामें गर्भित है अर चौदामार्गणा, पांच प्ररूणा, अरगुणस्थान ऐसे वीस प्ररूणा है; सामान्यपणे दोय भेद है, येकगुणस्थान येक मार्गणा ॥ ७२ ॥

॥ सत्तावन जीव समास कहैहै ॥ छप्पै ॥

भूजबल, पावक, वाउ, नीत, ईतर, साधारन ॥ सूक्ष्म, बादर, करत होत

द्वादश उच्चारन ॥ सुप्रतिष्ठ, अप्रतिष्ठ, मिलि चौदे परवानो ॥ परज, अपरज, अलब्ध, गुणी ब्यालीस वखानो ॥ गुण बे, ते, चौ, इंद्री त्रिविधि सर्व एक पञ्चास भनी ॥ मनरहित, सहित, तिहु भेद सू. सत्तावन धरि दयामनी॥७३॥

अर्थ—जहां जीव पाइये सो जीव समास कहीये. १ पृथ्वीकाय १ जलकाय १ अग्निकाय १ वायुकाय १ नित्यनिगोद १ इतर निगोद (साधारण वनस्पति) इन छहमें सूक्ष्म अर बादर ऐसें दोय दोय भेद हैं, सब मिलि १२ भये ॥ वनस्पतीमे दोय भेद है सुप्रतिष्ठ, (जिसके आश्रय वहुत जीव होय) अतिष्ठ (जिसकै आश्रय और जीव नहोय) ये दोय मिले तब १४ भेद भये ॥ इन प्रत्येकमें पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, ऐसे तीन तीन भेद है. सब मिलि येकेंद्रीके जीवसमास ४२ हुये॥ वे इंद्री, तें द्री, चोइंद्री इन तीनूके पर्याप्त, अपर्याप्त अलब्धि पर्याप्त, ऐसे ९ भेद विकलत्रयके हुवे. संज्ञी पंचेंद्रीमे पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, अर असंज्ञी पंचेंद्रीमे पर्याप्त, अपर्याप्त, अलब्ध पर्याप्त, ऐसें पंचेंद्रीके ६ भेदहै. येकेंद्रीस्थावरके ४२ अर विकलत्रयके ९ सब ५७ जीव समास भये. इनपर दयाभाव रखना ॥ ७३ ॥

जिस जीवनै योग्य पर्याप्त (६) पूरीकीनी सो पर्याप्ति कहीये, अर जिस जीवने स्वयोग्य पर्याप्त करनी मांडी जवताई सब पूरी न होय तव ताई अपर्याप्त (निर्वृत्य ?) कहीये, अर जिस जीवने पर्याप्तका आरंभतो कीया परंतु १ भी पर्याप्त पूरी नकरै सो अलब्ध पर्याप्त कहीये

॥ अठ्याणवै जीव समास कहैहै ॥ ३१ ॥ सा ॥

इक्कावन थानजान थावर विकलत्रयकै, गर्भज दोय तीन सन्मूर्छन गाये है ॥
पांचसैनि औ असैनि जल, थल, नभचर, भोग भूमिभूचर खेचर, दोदों पाये है ॥
दोदो नारकि है देव, नवविध मनुषहै, चवभोगभू कुभोगभू म्लेंछ बताये है ॥
दोय दोय दोय तीन आरजमें राजत है, अठाणवै दयाकरै साधते कहाये हैं ॥७४॥

अर्थ– थावरके जीव समास ४२ है, विकलत्रैके ९ दोनू मिलके ५१ भये, अर पंचेंद्री गर्भज गौआदि थलचर पशुके दोय भेद है १ पर्यास १ अपर्यास, सन्मूर्छन पंचेंद्रीके तीन भेद है १ पर्यास १ अपर्यास १ अलब्ध पर्यास॥ ये पांचौमें दो दो भेद है १ सैनीय १ असैनी, सब दस भेद भये, वैसेही १० भेद मच्छ आदि जलचर पंचेंद्रीकेहै, ऐसेही नभचर पंचेंद्रीके १० भेदहै, ये तीस भेद कर्मभूमीके पंचेंद्री पशूके गर्भज अर सन्मुर्छेके है. भोगभूमीमें जलचर अर सन्मूर्छन जीव नाही. भोगभूमीमें गर्भज पंचेंद्री पशू थलचर, १ पर्यास. अपर्यास पक्षी १ पर्यास १ अपर्यास ये ४ भेदहै. नारकीको १ पर्यास १ अपर्यास, अर देवको १ पर्यास १ अपर्यास. देवमे नारकीमे अलब्ध पर्यास होता नाहीहै. सुभोग भूमीके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास, कुभोग भूमीके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास, म्लेंच्छ खंडके मनुष्य १ पर्यास १ अपर्यास आर्यखंडके मनुष्य १ पर्यास १ अपयसि १ अलब्ध पर्यास. ये मनुष्यके जीव समास ९ है, देवके २ है नारकी २ है, पंचेंद्री पशूके ३४ है, विकलयके ९ है, थावरके ४२ है, सब मिलके ९८ जीव समास है. इनपर दयाभाव करै सो साधु कहावे है ॥ ७४ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ५३ भाव त्रिभंगी कहैहै ॥ कवित्त ॥

चौतिस बत्तिस तेतिस छत्तिस इकतिस इकतिस इकतिस जान ॥ अठाइस अठाइस बाइस बाइस बाइस वीस बारमे थान ॥ तैरे चौदे अंतमे स्थानक पंचभाव सिद्धाले जान ॥ सम्यक् ज्ञान दरस बल जीवित निहचैसो तू आप पिछान ॥ ७५ ॥

अर्थ–भावके मूले भेद पांच है, १ उपशम १ क्षायिक १ मिश्र १ उदइक १ पारिणामिक.

उपशमके भाव दोय– १ उपशम सम्यक्त १ उपशम चारित्र.

क्षायकके भाव भेद नव है,– १ क्षायिक सम्यक्त्व १ क्षायिकज्ञान १ क्षायिकदर्शन १ क्षायिक चारित्र १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य.

क्षयोपशमिक (मिश्र)के भाव अष्टादश– १ सुमति १ सुश्रुति १ सुअवधि १ मनः पर्यय १ कुमति १ कुश्रुति १ कुअवधि १ चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन. पांच लब्धी– १ दान १ लाभ १ भोग १ उपभोग १ वीर्य. १ क्षयोपशमसम्यक्त १ क्षयोपशम चारित्र १ संयमासंयम.

औदयिकके भाव इकवीस–४ गति ४ कषाय ३ लिंग १ मिथ्यादर्शन १ कुज्ञान १ कुसंयम १ असिद्धत्व ६ लेश्या.

पारिणामिकके भाव तीन– १ जीवत्व १ भव्यत्व १ अभव्यत्व.

सिद्धनिकै पांच भाव है १ सम्यक्त १ ज्ञान १ दरसन १ वल १ जीवित. निश्चयनयकरि ऐसें तू आपकौ जान ॥ ७५ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ३४ भाव कहैहै ॥ सवैया ३१ सा ॥

पहले, मिथ्यात अभव्य, दूसरे विभंग तीन, लेश्या तीन नर्क अव्रत देव चारमें ॥
पशु पाचै, लेश्या दोय सातै लोभ दसैलग, क्रोध मान माया तीन वेदनौ विचारमें॥
सेसतेरे, नर भव जीवित असिद्धचौदै, पंचलब्धि अज्ञान चख अचख बारमें ॥
चवतीसौ भाव कहे चोदे गूण थानकमें, वे उनीस बारहमें मै हो अविकारमें ॥७६॥

अर्थ– १ पहिले मिथ्यात्व गुणस्थानके अंतमें, १ मिथ्यात्वभाव १ अभव्य भाव, ये २ घटे है.
२ सासादन गुणस्थानमें, १ कुमति १ कुश्रुति १ कुअवधिये ३ विभंग (कुज्ञान) ज्ञान घटे है.
४ में, १ कृष्ण १ नील १ कापोत १ अव्रत १ नरकगती १ देवगति, ६ भावविना अनंत व्युच्छित्ति है.
५ पांचमे देश (अनु) व्रत गुणस्थानमें १ तिर्यंच गतीकी व्युच्छित्ति (घटना) होयहै.
७ सातमे अप्रमत्त गुणस्थानकके अंत १ पीतलेश्या १ पद्मलेश्या, ये दोय भाव घटे है.
९ नवमे अनिवृत्ति करणमें १ क्रोध १ मान १ माया १ स्त्री १ पुरुष १ नपुंसक, ये ६ भाव घटे.
१० दसमे सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानमे १ सूक्ष्मलोभ घटेहै.
१२ बारमे क्षीणमोह गुणस्थानमें ५ क्षयोपशमलब्धि १ अज्ञान १ चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन ये ८ घटे.
१३ तेरमें संयोग केवली गुणस्थानकें अंत १ शुक्ललेश्या घटेहै.
चौदमें अयोग केवली गुणस्थानमें १ मनुष्यगती १ भव्यत्व १ जीवत्व १ असिद्धत्व, ये ४ घटे.
४ भावकी व्युच्छित्ति चौदा गुणस्थानमें कही ॥ ७६ ॥

॥ बारा गुणस्थानमें १९ भाव घटे है ॥ सवैया ३१ सा ॥

ऊपशम चौथे ग्यारे, वेदक चौथे सातै, क्षायक चौथे चौद है, देशविरत पांचमें ॥
ज्ञान तीन तीजै बारै, मनः पर्जै छठे बारे, चारीत सराग छठे दसै कह्यो साचमें ॥
औधि तीजै बारै, ऊपसम चारीत ग्यारै हि, क्षायक चारीत बारै चौदे कर्म वाचमें॥
पंचलब्धि क्षायीक दर्सज्ञान तेरै चौदे नमो भाव उनइस छूटै नरक आवमें ॥ ७७॥

अर्थ—१ उपसम सम्यक्त चौथे गुणस्थानते लेकै ११ गुणस्थानपर्यंत रहैहै.
१ वेदक (मिश्र) सम्यक्त, चौथे गुणस्थानतै लेकै सातमा गुणस्थानतक पाईये. (रहे) है.
१ क्षायक सम्यक्त, चौथे गुणस्थानसूं लेकै चोदमे गुणस्थानपर्यंत पाइये तथा सिद्धकौ पाइये.
१ देशव्रत (अनुव्रत) भाव, पांचमा गुणस्थानमेंही होय आगे अनुव्रत नाहीहै. ॥
३ सुज्ञान, चौथे गुणस्थानतै लेकै बारमा गुणस्थान पर्यंत पाइये.
१ मनःपर्ययज्ञान. छठा गुणस्थानते लेकै बारमा गुणस्थानतक मुनीकौ पाइयेहै.
१ सराग चारित्र, लठा गुणस्थानतै दशमा गुणस्थानक रहै, आगै वीतराग भाव हे ॥
१ औधि दर्शन, चौथे गुणस्थानतें बारमा गुणस्थानतक पाइये.
१ उपशमचारित्र, ग्यारमे गुणस्थानमेंही पाइयेहै.
१ क्षायिक चारित्र, बारमे गुणस्थानतै चौदमा गुणस्थानतक पाइये तथा सिद्धकौ पाईये.
५ लब्धी क्षायककी १ केवलदर्शन १ केवलज्ञान, ये ७ भाव तेरमें चौदमें गुणस्थानमें जानने

॥ चारौ गतीमें ५३ भाव है ॥ सवैया ३१ सा ॥

सासतौ स्वभाव पंचभाव सिद्धवंदत हौं, तीनौ गति वीना नरकै पचास दीस है ॥
क्षायकके आठवीना, मन परजै, चारीत है दोय ग्यारैवीना पशु ऊनतालीस है॥सुभ
लेश्यातीन अर नरनारिवेद देशव्रत छहौभाववीना, नारक तेतीस है ॥ हीन
तीन लेश्याषंड वेद चारी भाव वीना, शुभलेश्या नरनारि सूरके चौतीस है ॥७८॥

अर्थ– १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ क्षायिक सम्यक्त १ अनंतशक्ती १ जीवित्व. ये पांचभाव सिद्धनिमै सास्वत अविनासी है, तिनकौ मै भावसहित वंदौ हौ. १ नरकगति १ तिर्यंचगति १ देवगति. इन तीन भावविना वाकीके पचास भाव मनुष्यगतीमें सामान्यपणे है, तिरेपन भावकेनाम पीछेके ७५ कवीतमें है तहांदेखो ॥ तिर्यंच गतीमें ३९ भावहै– १ नरकगती १ मनुष्यगती १ देवगती ये तीन भाव अर क्षायक सम्यक्तविना बाकी क्षायकके ८ भाव, अर १ मनःपर्ययज्ञान १ उपशमचरित्र १ क्षयोपश चारित्र. ऐसें १४ भाव विना वाकीके ३९ भाव तिर्यंच गतीमें सामान्यपणेहै ॥

१ पीत १ पद्म १ शुक्ल १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद १ देशव्रत १, इह छह भाव ३९ भावमें घटाइये तव ३३ रहै, ये ३३ भाव नरक गतीमें सामान्यपणे है ॥

३ खोटीलेश्या १ नपुंसवेद ये ४ भाव ३३ भावमें घटाइये, अर ३ शुभलेश्या १ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद ये पांच भाव मिलाइये तब ३४ रहे ये ३४ भाव देवगतीमें सामान्यणे है ॥ ७८ ॥

॥ १४ गुणस्थानमें ५ मिथ्यात १२ अविरत २५ कषाय १५ योग, ये ५७ आश्रव ॥ कवित्त ॥

पचपन पचास तेतालिस छियालिस सेतीस चोवीस जान ॥ बाइस बाइस सोलै
दस अरु नव नव सात अंत वखान ॥ चौदे गुणथानकमें इह विधि आश्रव
द्वार कहे भगवान ॥ मूलचार, उत्तर सत्तावन. नाशकरौ धरि संवर ज्ञान ॥७९॥

अर्थ–१ मिथ्यात्व गुणस्थानमें ५५ आश्रवहै, १ आहारक १ आहारकमिश्र, ये २ विना.
२ द्वितय गुणस्थानममें ५० आश्रव है, ५ मिथ्यात्व १ आहारक १ आहारकमिश्र विना.
३ मिश्रगुणस्थानमें ४३ आश्रव है, ५ मिथ्यात ४ अनंतानु २ आहारक ३ मिश्र औदारिकादिविना.
४ अविरत गुणस्थानमे ४६ आश्रवहै. ऊपरके ४३ अर मिश्र ३ मिले.
५ गुणस्थानमें ३७ आश्रवे है, ४६ में ४ प्रत्याख्यान कषाय ४ योग १ त्रसवध ये ९ घटाये तब ३७ रहै.
६ गुणस्थानमें २४ आश्रव है, ४ अप्रत्यास्व्यानीकषाय ९ हास्यादि ९ जोग २ आहारक.
७ गुणस्थान मे २२ आश्रव है, ९ जोग ४ संज्वलन कषाय. ९ हास्यादि.
८ गुणस्थानमें २२ आश्रव है, उपरके ही. ९ गुणस्थानमें १६ आश्रव है. ९ जोग ४ संज्वलन कषाय ३ वेद.
१० गुणस्थानमें १० आश्रव है, ९ जोग १ सूक्ष्मलोभ.
११ गुणस्थानमें ९ जोग आश्रव हे. १२ वे गुणस्थानमे वेही ९ जोग आश्रव है.
१३ गुणस्थानमें, ७ आश्रव है, ३ काययोग २ वचनयोग २ मनयोग ये ७.

१४ गुणस्थानमें आश्रव नाहीं. मूल आश्रव ४ उत्तर आश्रव ५७ इनका सम्यक ज्ञानकरि नाश करो संवरकरो ॥ ७९ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें ५७ आश्रवका घटना कहैहै ॥ ३१ सा ॥

पहिले पांच मिथ्यात, दूजै अनंतानुबंधि, ग्यारह अविरत प्रत्यारूयानि पाच गहे॥
वैक्रियक औअप्रत्यारूयानि त्रसवध चौथे, आहारक छठे, षट हास्य आठलौल है ॥
तीन वेद तीन संजूलन नौमे, लोभदसै, असत उभै वचन मन बारहे कहे ॥
सतअनुभय वच मन औदारीक तेरे मिश्र कारमान चारि गूणस्थाने सदै है ॥८०॥

अर्थ– १ पहिलेगुणस्थानकेअंत ५ मिथ्यात्व घटे– १ येकांत १ विनय १ विपरीत १ संसय १ अज्ञान.
२ दुसरे सासादन गुणस्थानमें अनंतानुबंधीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ ये ४ घटे है.
४ गुणस्थानमें ७ घटे है अप्रत्यारूयानीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ त्रसघात वैक्रीयक १ वैक्रिमिश्र.
५ गुणस्थानमें. पांच इंद्री छठामन इनकी स्वच्छंदता ये ६ अर पांच थावरकी विराधना अर १ प्रत्यारूयानीक्रोध १ मान १ माया १ लोभ, ऐसें १५ आश्रव घटे है.
६ वे गुणस्थानमे १ आहारक १ आहारकमिश्रे ये २ आश्रव घटे है.
८ में–१ हास्य १ रति १ अरती १ शोक १ भय १ जुगुप्सा, यह ६ आश्रव घटे.
९ में–१ स्त्री १ पुरुष १ नपुंसक १ संज्वलनक्रोध १ मान १ माया ये छहकी व्युछिति होहै.

१० दसवे सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानमें १ सूक्ष्म लोभ आश्रव घटे है.
१२ वेमें १ असत्यमन १ उभयमन १ असत्यवचन १ उभयवचन. ये ४ आश्रव घटे है.
१३ वेमें सातयोग (१ सत्यमन १ सत्यवचन १ अनुभयमन १ अनुभय वचन १ औदारिक १ औदारिक मिश्र १ कार्माण. ये ७ आश्रव) घटे है ॥ ८० ॥

१ मिश्रजोग १ कर्माणजोग इनकी व्युछति, १ पहले १ दुसरे १ चौथे १ तेरमें इन ४ गुणस्थानमें होय सो जानना.

॥ चारौ गतीमें ५७ आश्रव कथन ॥ सवैया ३१ ॥

वैक्रियक दोयवीना नर पचपनद्वार. आहारक दोयवीना त्रेपन तिर्यंच है ॥
औदारीक दोय, दोय आहारक, षंड वेद पांच वीना देवनीके बावनको संच है ॥
आहारक दोय, दोय, औदारिक, नरनारि, छहोवीना इक्यावन नर्कमें प्रपंच है ॥
चारौगति माहि ऐसे आश्रव सरूप जानि नमो सिद्ध भगवान जहानाहि रंच है॥८१॥

अर्थ– मनुष्य गतीमें ५५ आश्रव सामान्यपणे है, १ वैक्रियक १ वैक्रियकमिश्र, ये २ विना. तिर्यंच गतीमें सामान्यपणे ५३ आश्रव है, १ वैक्रियक १ वै० मिश्र १ आहारक१आ० मिश्र, विना. देवगतीमें ५२ आश्रवद्वार है, १ औदारिक १ ओ० मिश्र १ आहारक १ अ० मिश्र १ नपुंसक, विना. नरक गतीमे ५१ आश्रव है, १ आहारक १ आहारक मिश्र १ औदारिक १ औदारिक मिश्र १ स्त्री १ पुरुष इन ६ विना.
श्री सिद्ध भगवानकौ रंचमात्रभी आश्रव नही है, तिनको मै नमस्कार करूं हूं ॥ ८१ ॥

॥ चारौ गतीमें १२० प्रकृतीका बंध कहैहै ॥ ३१ सा ॥

औदारीक दोय, आहारक दोय, नर्क देवगति आयु आनुपूरवि दसौ वखानि है॥
विकलत्रै सूक्षम साधारण अपर्याप्त सोलैवीन सतचार देवकै प्रवानि है ॥
एकेंद्रि थावर आताप तीन प्रकृतिवीना नर्क एकसत एक, बंधजोग ठानि है ॥
तीर्थंकर आहारकवीना पशु सोसत्तरै, नरकै विसासौ. सब नासोशीवथानि है॥८२॥

अर्थ— आठकर्मकी १४८ प्रकृती है परंतु १२० प्रकृती बंधयोग्य है बाकी गर्भीत है. सो कहै है. देवगतीमें १०४ प्रकृतीका बंध है— १ औदारिक १ औ०अंगोपांग १ आहारक १ आ० अंगोपांग १ नरकगती १ देवगती १ नरक आयु १ देवआयू १ नरक गत्यानुपूर्वी १ देवगत्यानुपूर्वी ये १० अर १ बेइंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त. ये ६ ऐसे १६ प्रकृती विना १०४ प्रकृतीका बंध है. १२० प्रकृतीका वर्णन ८७ कवीतमें है ॥
नरकगतीमें सामान्यपणें १०१ प्रकृतीका बंध है, उपरके १६ येकेंद्री १ थावर १ आतप १ इन ३ विना
तिर्यंचगतीमें ११७ प्रकृतीका बंध है, १ तीर्थंकर १ आहारक १ आ० अंगोपांग. इन ३ विना
मनुष्यगतीमें १२० ही प्रकृतीका बंध है. इन १२० सब प्रकृतीका नाशकरै तब मोक्ष होय ॥ ८२ ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें १२० प्रकृतीका बंध कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरह, येक येकसौ, चौहत्तरि, सतहत्तरिमान॥ सतसठ, तेसठ, उनसठ,

ठावन, वाइस, सतरै दसमे थान ॥ ग्यारम बारम तेरम साता येक, बंधनहि अंत निदान॥सब गुणस्थानक बंध प्रकृती. इम निहचै आप अंवध पिछान॥८३॥

अर्थ–पहिले गुणस्थानमे ११७ प्रकृतीका वंध है, आहारक, आहारक मिश्र, तीर्थंकर, इन ३ विना.

॥ चौदा गुणस्थानमें १२२ प्रकृतीका उदय कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरै, इकसौ ग्यारै, सो अरु सोचौ, सत्तासीय ॥ इक्यासी, छहत्तरि, बहत्तरि, छ्यासठ, अरु साठ उदीय ॥ उनसठ, सतावन, वियालिस प्रकृती बारै उदयहै जीय ॥ चौदे गुणथानककी रचना, उदै भिन्नतू सिद्ध सुकीय॥८४॥

॥ चौदा गुणस्थानमें १२२ प्रकृतीकी उदीरणा है तिनका कथन ॥ कवित्त ॥

इकसौ सतरै, इकसौग्यारै, सोचौ, सतासिजान ॥ इक्यासी, तिहत्तरि, उनहत्तरि, तेसठि, सत्तावन मान ॥ छप्पन, चौवन, उनतालिस तेरमें, अंतनही परवान॥ यह उदीरणा चौदै थानक करै ज्ञानबल सो सुज्ञान॥८५॥

बंध, उदय, उदीरणाकौ त्रिभंगी कहे है. ऊपरके ३ कवित्तोंका अर्थ हमकौ नहिमिला.

॥ चौदा गुणथानमें नानाजीव अपेक्षा १४८ प्रकृतीकी सत्ता है, सो कहै है ॥ ३१ ॥ सा ॥

पहले सोअठताल, दूजेमें सोपैताल, तीजैमाहि सो सैताल, चोथेमें अठतालसो ॥ पांचैगून सोसैताल, छट्टे सातैं आठें नौमें दशमें ग्यारमें ऊपशमिहै छीयाल सो ॥

आठे नौमे सोअठतीस, दशे ईकसो दोय, वारमें ईकसोईक आगे पंद्रै टालसो॥
चौदै तेरमे पीचासि सत्तानाश अविनाशि नमोलोकघन ऊर्ध्वं राजु हे सेतालसो॥८६

अर्थ—आत्मा परिणामतें कर्मबांधे तिसकों जबताई उदय नहि आवे तब ताई सत्ता कहीये.
१।४ इन दोय गुणस्थानमें आठ कर्मके १४८ प्रकृतीकी सत्ता हे.
२ में मिथ्यात्व, मिश्रमिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व, इन ३ प्रकृतीवीना. १४५ की सत्ता हे.
३।५ इन दोय गुणस्थानमें मिश्र मिथ्यात्व प्रकृती वीना. १४७ प्रकृतीकी सत्ता हे.
६।७।८।९।१०।११ इन चार गुनस्थानमें उपशम श्रेणीको १४६ प्रकृतीकी सत्ता हे.
८।९ में ४ अनंतानुबंधी, ३ मिथ्यात्व, ३ आयु (देव पशु नरक) इनवीना. १३८ सत्ता हे.
१० में ऊपरके १० प्रकृती अर ३६ प्रकृतीका क्षय नववे गुण स्थानमें होयहे, इनवीना. १०२
१२ में ऊपरके ४६ प्रकृती अर सूक्ष्म लोभ १ इनवीना. १०१ प्रकृतीकी सत्ता हे.
१३ में ८५ प्रकृतीकी सत्ताहे. इन प्रकृतीका वर्णन आगेके पृष्टमें हे, तहांते देखलेना.
१४ वे गुणस्थानमें ८५ प्रकृतीका नाश करके लोकके अंत (ऊर्ध्वलोक १४७ राजुके ऊपर) सिद्धस्थानमें आत्मा जाय है तिनकों नमस्कार करूं हूं ॥ ८६ ॥

॥ येकसोवीस प्रकृतीका बंध अर उदय कहे हे. ॥ ३१ ॥ सा ॥ कवित्त ८७

देवगति आउ आनु पूरवि प्रकृति तीन वैंक्रियक अंग आहारक अंग चारहे ॥
अजस येआठों उंचे बंधे नीचे उदे देय संजूलन लोभवीना पंद्रैको नीहारहे ॥

हासरतिभै गीलानि नरवेद नरआउ सुक्षम अपर्याप्त साधारण धारहै ॥
आतापमिथ्यात येछवीस बंध उदै साथि, नीचैबंध उंचैऊदै छीयासि विचारहै ॥

अर्थ—आठ प्रकृती ऊपरके गुणस्थान बंधै नीचेके गुण स्थान उदै आवै, २६ प्रकृती जिस गुणस्थानमें बंधै तिसमे उदै आवै है, ८६ प्रकृती नीचेके गुणस्थान बंधै उपरके गुणस्थान उदै आवै है. सो कहै है. १देवगति१ देव आयु १ देवगत्यानुपूर्वी १ वैक्रियक शरीर १ अंगोपांग १ आहारक शरीर १आहा० अंगोपांग १ अजस, ये ८ प्रकृती ऊपरके गुणस्थानमें बंधै अर नीचेके गुणस्थानमें उदय आवैहै. ४ अनंतानुबंधी ४ अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानी ३ संज्वलन, लोभविना. १ हास्य १ रति १ भय १ जुगुप्सा १ पुरुषवेद १ मनुष्य आयु १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्त १ आतप १ मिथ्यात्व, ये २६ प्रकृती जिस गुणस्थानमें बंधै तिस गुणस्थानमें उदै आवै है. १ नरक गति १ तिर्यंचगति १ मनुष्यगती १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १ मनुष्यगत्यानु पूर्वी १ येकेंद्री १ बे इंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ पंचेंद्री १ औदारिकशरीर १ औदारिक अंगोपांग १ तैजस शरीर १ कार्माण शरीर ४ वर्ण ६ संस्थान ६ संहनन १ निर्माण १ अगुरु लघु १ आतप १ परघात १ स्थान १ उद्योत २ चाल १ बादर १ पर्याप्त १ जस १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ सुभग १ दुर्भग १ प्रशस्त १ अप्रशस्त १ आदर १ सुस्वर १ स्पर्श १ रस १ गंध. १ दर्शन विशुद्धी तीर्थंकर ये ५६ प्रकृतीनाम कर्मकी अर ५ ज्ञानावरणकी ९ दर्शनावरणकी २ वेदनी २ गोत्र ५ अंतराय १ दर्शन मोहनीय १ अरती १ शोक १ स्त्री १ नपुंसक १ संज्वलनलोभ १ आयु,

ये ३० प्रकृती, सबमिली ८६ प्रकृती भई, इनका बंध आठमा गुणस्थानका छट्टा भागपर्यंत है. अर उदय तेरमा गुणस्थानका उपपांत समय (अंतके दोनसमय) पर्यंत है.

१ हुंडकको बंध पहले गुणस्थानमें, १ वामन १ कुब्जक १ स्वातिक १ परिमंडळ, इनको बंध दुसरे गुणस्थानपर्यंत, १ समचतुरश्रको बंध आठमा गुणस्थानके छट्टाभागपर्यंत है, ६ संस्थानका उदय १३ गुणस्थानपर्यंत है. १ वज्र वृषभ नाराचको बंध चौथेपर्यंत, १ वज्रनाराच १ नाराच १ अर्धनाराच १ कीलक, इन ४ कोबंध दूसरे गुणस्थानतक है, १ असंप्राप्तस्फाटिकको बंध पहले गुणस्थानमें है.

१ अर्धनाराच १ कीलक १ स्फाटिक इन ३ संहननका उदय सातमा गुणस्थानपर्यंत है, १ नाराच १ वज्रनाराच इनका उदय ग्यारमातक, १ वज्रवृषभ नाराचको तेरमातक है.

१ निर्माणको बंध आठमा गुणस्थानके छट्टाभाग लौ, उदय तेरमा गुणस्थानपर्यंत है.

१ अप्रशस्त चालको बंध दुसरे गुणस्थान लौ, १ प्रशस्त चालका बंध आठमें गुणस्थानके छट्टा भागपर्यंत है, १ प्रशस्त १ अप्रशस्त दोउ चालको उदय तेरमें गुणस्थानपर्यंत है.

१ उथाराको बंध दुसरा गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थानपर्यंत है.

१ अगुरुलघु १ अपघात १ परघात १ उस्वास इनका बंध ८ वेके छट्टा भागलौ, उदय तेरमातक

१ निद्रानिद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानगृद्धी इनका बंध २ गुणस्थानपर्यंत, उदय छट्टापर्यंत.

१ नरक आयु १ गती १ आनुपूर्वी इनको बंध पहिले गुणस्थानमें, उदय चौथे गुणस्थानतक.

१ तिर्यंच गती १ तिर्यंच आयुको बंध दुसरा गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थानतक है.

१ तिर्यंच गत्यानुपूर्वीको वंध दूजा गुणस्थानलौ, उदय चौथे गुणस्थान पर्यंत है.

१ मनुष्यगतीको १ मनुष्य आयुको वंध चौथे गुणस्थानलो, उदय चौदमा गुणस्थानपर्यंत है.

४ विकल चतुष्क २।३।४।५ इंद्रीको वंध पहले गुणस्थानमें है, उदय दूजा गुणस्थानतक है.

१ औदारिक शरीर १ अंगोपांग इनको वंध चौथे गुणस्थानलौ है, उदय चौदमाका अंतपर्यंत है.

१ पंचेंद्रीको वंध आठमा गुणस्थानके छट्ठाभागलौ, उदय चौदमा गुणस्थानलौ है.

१ तैजस १ कार्माणको वंध आठमाका छट्ठा भागलौ है, उदय चौदमाका उपकांत समैतक है.

५ प्रकृती ज्ञानावर्णकी ४ दर्शनावर्णकीको वंध १० मापर्यंत उदय बारमाके अंत १४ समै पर्यंत है.

१ यश कीर्ति १ उंचगोत्र इनकावंध दशमा गुणस्थानतक, उदय चौदमाका अंततक है.

१ सातावेदनीको वंध तेरमा गुणस्थान पर्यंत, उदय चौदमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ नीच गोत्रको वंध पहला गुणस्थानतक, उदय पांचमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ असाता वेदनीको वंध छट्ठा गुणस्थान पर्यंत, उदय बारमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ नपुंसक वेदको वंध पहिले गुणस्थानमें है, उदय नवमा गुणस्थानके ४ भागलौ है.

१ स्त्री वेदको वंध दूजा गुणस्थान तक होय, उदै नवमा गुणस्थानके चतुर्थ भागलौ है.

१ संज्वलन लोभको वंध नवमा गुणस्थान पर्यंत है, उदै दशमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ अरति १ शोक इनको वंध छट्ठा गुणस्थान पर्यंत, उदय आठमा गुणस्थान पर्यंत है.

१ निद्रा १ प्रचला इनको वंध आठमा गुणस्थानका प्रथम भागतक, उदै ग्यारमातक है.

१ वटको बंध पहले गुणस्थानमें, उदय दूजा गुणस्थानपर्यंत है.

१ त्रस १ बादर १ पर्याप्तको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभागतक, उदय चौदमा पर्यंत हैं.

१ प्रत्येक शरीरको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभाग पर्यंत, उदय तेरमा पर्यंत है.

१ अस्थिर १ अशुभ इन २ प्रकृतीको बंध छट्टा गुणस्थानतक, उदय तेरमा पर्यंत है.

१ थिर १ शुभ १ सुस्वर इनको बंध आठमाका छट्टाभागलौ, उदय तेरमा गुणस्थानलौ है.

१ सौभाग्य, १ आदर इनको बंध आठमा गुणस्थानका छट्टाभागलौ, उदै १४ गुणस्थान लौ है.

१ दुर्भाग्य १ दुस्वर १ अनादर इनको बंध दूजा गुणस्थान लौ, उदय चौदमा गुणस्थानतक होय.

१ तीर्थंकर प्रकृतीको बंध चौथे गुणस्थानते आठमाका छट्टाभागलौ, उदय चौदमा गुणस्थानलौ है.

॥ मिथ्यात्व गुणस्थानमें ६ लेश्यावालेका कर्मबंध कहै है ॥ ३१ सा ॥

विकलत्रै सूक्षम साधारन अपर्यापत नरकगति आनुपूर्वि नरक आवहे ॥
मिथ्या माहि लेश्यातीन बांधे इकसो सतरै नऊ वीना पीतकै अठत्तरसौ भावहे ॥
येकेंद्रि थावर ओ आताप ईन तीन वीना पदम येकसौ पांच बंधको उपाव है ॥
पशुगति आठ आनुपूरवि उदोत वीना सूकल एकसौ एक बंध पुन्य चाव है ॥८८॥

अर्थ– १ वेंद्री १ तेंद्री १ चौइंद्री १ काहूतै नरूके सो सूक्ष्म १ अनंत जीवका समुदाय सो साधारन १ अपर्याप्त (अंतरालवर्ति) १ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ नरकआयु, इन ९ प्रकृतीवीना मिथ्यात्व गुणस्थानमें कृष्ण, नील, कापोत, तीनलेश्यावाले जीव ११७ बंधकरै.

ऊपर कहे ९ प्रकृती वीना मिथात्व गुणस्थानमे पीतलेश्यावाले जीव १०८ प्रकृतीका वंधकरै ॥ ऊपरके ९ अर १ येकेंद्री १ स्थावर १ आताप, इन १२ प्रकृती वीना मिथ्यात्वमें पद्मलेश्यावालेजीव १०५ प्रकृतीका वंधकरै ॥ ऊपरे १२ प्रकृती अर १ तिर्यंचगती १ तिर्यंच आयु १ तिर्यंच गत्यानुपूर्वी १ उद्योत, इन १६ प्रकृती वीना शुक्ललेश्यावाले जीव मिथ्यात्व गुणस्थानमें १०१ प्रकृतीका वंधकरै है ॥ ८८ ॥

॥ चौदागुणस्थानमें ४ आयुकावंध कहे है ॥ ३१ सा ॥

नरक आयु पहिले वंधै, उदै चौथेलौ है. पसु आउ दूजैवंधै, उदै पांचमै कहि ॥
नरआउ चौथेलग बंध, उदै चौदहलौ. सूरआउ सातैवंध, उदै चारमैलहि ॥
नरपसु जीव नरक पशु नर आउ बंध चौथेते आगे चढिवेकि सक्ति नगहि ॥
चारौआउ तीजे गूणथानकमें वंधैनाहि. आउनासभये सिद्धतीनकौ वंदौसहि॥८९॥

अर्थ– १ नरक आयुको बंध मिथ्यात्व गुणस्थानमेही है, उदै चार गुणस्थानतक है.
१ तिर्यंच आयुको बंध १ मिथ्यात्व १ सासादन, दोय गुणस्थानमें है, उदै ५ गुणस्थानतक है ॥
१ मनुष्य आयुको बंध चौथे गुणस्थान पर्यंतहो है, उदय चोदमें गुणस्थान पर्यंत है.
१ देव आयूकोवंध सातमा गुणस्थान पर्यंत है उदय चोथे गुणस्थान पर्यंत है आगैनही.
देव आयूका बंधवालामुनी ग्यारमा गुणस्थानतक चढसकैहै कोउबाधानाहीं
कोऊ मनुष्यनै, सरल वा वक्र परिणामकरी नरक आयु तथा तिर्यंच वा नरआयु बांधी होय,

कोऊ तिर्यंचने, सरल वा वक्र परिणामकरी नरक वा पसू तथा मनुष्य इनकी आयूबांधी होय, ऐसें आयुबंधवाला जीव चौथे गुणस्थानतक चढे आगै नजाय यह नियम है ॥

अर चारौ आयूमें कोईही आयूका बंध तीजै मिश्र गुणस्थानमें होय नही है.

नरक, तिर्यंच, देव,मनुष्य, इन चारौ आयूकर्मका नाशकरीके सिद्धपरमेष्टी भये है तिनकौ भावसहीत वंदो हौ ॥ ८९॥

॥ उपशमीके ११ गुणस्थानके चढने पडनेकी चाली कहैहै ॥ छपै ॥

मिथ्या मारग चार, तीन चउ पांच सात भनि ॥ द्वितिय एक मिथ्यात, तृतिय
चौथो पहलो भनि ॥ अव्रत मारग पांच तीन दोय एक, सात पन ॥ पंचम
पंचसु सात चार तिय दोय एक भन॥ छट्टे षट इक पंचम. अधिक सात आठ
नव दस सुनौ॥ तिय अघ उरध चौथे मरन ग्यार बार विन दो मुनौ ॥९०॥

अर्थ–कोई जीव मिथ्यात्व गुणस्थानतै निकसी तिसरे गुणस्थानमें जाय, कोई जीव चौथे गुणस्थानमें जाय, कोई पाचवे गुणस्थान चढे, कोई सातवे जाय, ये चार मारग चढनेके है ॥

दुसरा सासादन गुणस्थानका येकमार्ग है, सासादनतै पडे तव मिथ्यात्व गुणस्थानमें जाय.

तिसरे गुणस्थानके दोय मार्ग है, ऊपर चढेतो चौथेमे जाय. नीचे पडे तो पहिलेमे आय हैं ॥

चौथे गुणस्थानके पांचमार्ग है; तलै पडैतो तिसरेमें वा दूसरेमें वा पहिलेमे पडै है अर चौथे गुणस्थानतै ऊपर चढे तो पाचवा गुणस्थानमें जाय वा सातवा गुणस्थानमें चढे ॥

पांचवा गुणस्थानके पांच मार्ग है, पाचवातै ऊपर चढैतो सातवा गुणस्थानमें जाय. अर पांचवा गुणस्थानतै नीचै पडैतो चौथमें आवे वा तीसरेमें वा दूसरेमें वा पहिलेमें आवै ॥

॥ छट्टे गुणस्थानके छहमार्गहै, छट्टेतै ऊपर चढैतो सातवे गुणस्थानमें जाय अर नीचै पडैतो पांचवामें वा चौथेमें वा तीसरमें वा दूसरेमें वा पहिले गुणस्थानमें जाय.

१ सातवेगुणस्थान १ आठवे गुणस्थान १ नवमा गुणस्थान १ दशमा गुणस्थान. ये ४ गुणस्थानमें उपसम श्रेणी है, अर क्षायक श्रेणी है. इन चारौ गुणस्थानके उपसम श्रेणीकी तीन तीन चाल है तले पडेतो अनुक्रमतै एक एक गुणस्थान उतरे, अर ऊपर चढैतो अनुक्रमेते एक एक गुणस्थान. चढै, इन चारो गुणस्थानमें मरण करैतो तौथे गुणस्थानके परिणाम होजाय तव अव्रतरूप कार्माण देह निकसी देवगतीमें लेजाय यह नियम है.

ग्यारवा गुणस्थानके दोय मार्ग है, तले पडैतो दशमा गुणस्थानमें आवै. अर मरेतो चौथे गुणस्थानरूप अव्रती होय, देवगतीमे ले जाय, ग्यारवा गुणस्थानवाला ऊपर नही चढै है. क्षायक श्रेणी वाला मुनी तले नहि पडैहै, अर ऊपर चढैतो ग्यारमें गुणस्थान नहिजाय, वारमें गुणस्थानमें जाय, अर बारमेके अंत तेरमेके आदि केवलज्ञान उपजे है.

तेरमें गुणस्थानतै चौदमें गुणस्थानमें जाय, अर चौदमेके अंत मोक्ष पावै है ॥ ९० ॥

॥ चौदा गुणस्थानमें जीव मरिकरि कौन गतीमें जाय सो कथन ॥ छप्पै ॥

मिश्र खीन संजोग तीनमें मरनन पावै ॥ सात आठ नव दसम ग्यार मरि चौथे

आवै ॥ प्रथम चहूगतिजाय दुतिय विन नरक तीनगति ॥ चौथे पूरव आव
बंधतै चहुगति प्रापति ॥ पंचम ग्यारम सातगुणमरे सुरगमे औतर है ॥
बंदौ इक चौदम स्थानक तजी अजर अमर पद सिवपद लहै ॥ ९१ ॥

अर्थ–तिसरा मिश्रगुणस्थान, बारमा क्षीण कषाय गुणस्थान, तेरमा सयोग केवली गुणस्थान-
इन तीन गुणस्थानमें जीव मरण नही पावै यह नियम है ॥ सातमा, आठमा, नवमा, दसमा,
ग्यारमा, ये पांच गुणस्थान उपशमके है. तहां मरण करैतो चौथे गुणस्थान आवै, अंत समय
अव्रतरूप कार्माण निकसै देवगतीमे लेजाय है ॥
मिथ्यात्व गुणस्थानमें मूवाजीव चारौही गतीमें जाय, परंतु देवगतीमे ग्रैवयकतक जाय, ॥
दूसरे गुणस्थानमें जीव मरण करी १ तिर्यंच १ मनुष्य १ देवगती. इन ३ गतीमेंसे कोउयेक
गतीमें जाय. जीवनें मिथ्यात्वके परिणामतै नरक आयु, देवआयु, तिर्यंचआयु, मनुष्यआयु,
इन चारो आयूमें कोऊएक आयूका प्रथम बंधकीया होय अर पीछे सम्यक्त परिणामतै चौथा
गुणस्थान होय मरण करे तो जिस आयूका बंधकीया होय उस गतीमे जाय,
चारो गतीमे कोई १ गतीमें जासके परंतु इसिमें इतना विशेष है की ! सम्यक्ती जीव मरिकरी
तीजा नरक तक जाय आगै ४।५।६।७ में नजाय अर क्षायक सम्यक्तवाला पहले नरकमेहि
जाय आगे २।३।४।५।६।७ मे नजाय यह नियम है. अर प्रथम तिर्यंच गतीका बंधकीया होय
पीछें सम्यक्त ग्रहणकरी मरणकरै तो भोग भूमीमें तिर्यंच हो जाय,

मिथ्यात्व गुणस्थानमें देवगतीका बंधकीया होय, पीछै सम्यक्त ग्रहणकरी मरणकरै तो स्वर्गमेंहि औतरे. सम्यक्ती मरणकरी पातालवासी देव, ज्योतिषी देव, व्यंतरवासी देव, इनमें नहि उपजे है, सम्यक्त ग्रहण करनेके पहले कोई आयूका बंध नहीकिया होयतो, सम्यक्ती मरिकरी स्वर्गमेंही औतरे बडा देवहोय, और गतीमें नजाय ॥

पांचमा, छट्टा, सातमा, आठमा, नवमा, दसमा, ग्यारमा, इन सातौ गुणस्थानमें मरण करै सोजीव आवश्य देवगतीमें स्वर्गहीजाय उपजे, भुवनत्रिकमें नजाय ॥

चौदमो अयोग केवली गुणस्थानमें अंतके दोय समयै ७२।१३ पिच्यासी प्रकृतीका नाश करिकै पंडित पंडित मरणसूं देहका संबंध छूटै सो येक समयमें मोक्ष जाय, जहां जरा अर मरण नही, ऐसा मोक्षपद अनंत सुखका निवास प्राप्त हुवा होय, तिन सिद्धपरमेष्ठिनिकौ मेरा वारंवार नमस्कार है ॥ ९१ ॥

॥ पांचलब्धी वर्णन कहै है ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

थावरतै सैनिहोय यहि खै ऊपसम है, दान पूजा उद्योत विशेष ऊपयोग है ॥
गूरु ऊपदेश तत्वज्ञान सोहि देसनाहै, अंतकोडाकोडि कर्मस्थीतिकौ प्रायोगहै॥
जगमे अनंतवार चारलब्धिपाइ ईन कर्णलब्धिवीना समकीत कौ न जोग है ॥
अधो अपूरव अनिवृत्तिकर्ण तीनकरै मिथ्यामाहि पीछै चौथे सम्यक नीयोगहै ९२

अर्थ– अनादि मिथ्यादृष्टी वासादि मिथ्यादृष्टी जीव अनादिकालका येकेंद्रीमें भ्रम्या, सो

कालपाय कर्मोंका क्षयोपशम हूवा (कषायका रस मंदपडा) तव थावरते निकसि जीव सैनि पंचेंद्री होय है, तव तिसकानाम क्षयोपशम लब्धि कहीये.

यह जीव काल पायकै शुभकर्मके उदयते दान, पूजा, संजम, शील, इन शुभपरिणाम रूप परिणमें है, तव तिसकानाम विशुद्धि लब्धि कहीये.

कालपाय पुन्यकर्मके उदयतै सतगुरुका साचा उपदेश पाय तत्वका जानपना होयहै, तव तिसकौ देशना लब्धि कहिये.

काल पाय महाव्रतभी धरै, महिना महिना उपवास करे महा तपस्या करिकै शरीर क्षीण-करै है, तव तिसकै पुन्यवल करिकै आयु कर्मविना सातौ कर्मकी स्थिति अंतःकोडाकोडी सागर प्रमाण राखना, तिसका नाम प्रायोग्य लब्धि कहीये.

कोटकौ कोटने गुणिये वो संख्याकौ कोडाकोडी कहै है, कोटके ऊपर अर कोडाकोडीके माहि संख्याकौ अंतःकोडाकोडी कहै हैं.

इस४ लब्धीमें ३४ बंधापसरण हो है, १ क्षयोपशम १ विशुद्धि १ देशना १ प्रायोग्यता, ये ४ लब्धि संसारमें अनंतवार पाई परंतु पांचमी कर्णलब्धि पायेविना जीवके सम्यक्तका लाभ होयनही, है कर्णलब्धि आवै जब सम्यक्त पावै यह नियम है ॥

१ कर्णनाम परिणामका है, कर्णलब्धिका अर्थ ऐसा है ! मिथ्यातके तीनभाग करै. येक अधः-करण, येक अपूर्व करण, येक अनिवृति करण, आन्यवृत्तिके अंतसमैमें सम्यक्त होय है.

१ ऊपरले समयके परिणाम, नीचेके समयके परिणाममें संख्यादिक करि समान होय मिलै, तातै अधःकर्ण कहीये. अधःकर्णमें समय समयमें अनंतगुणी विशुद्धता होयहै अर स्थितिकांड घातादिक नहीहोय.

१ अपूर्व कर्णमें, अपूर्व अपूर्व परिणाम होहै. कोई समयके परिणामकौ कोई समैका परिणाम नहिमिले हैं, तातै याका नाम अपूर्व कर्ण है. यामें श्रेणी, गुण संक्रमण, स्थितिकांड घात, अनुभाग कांड घात, ये ४ कार्य होय है.

१ अनिवृत्ति करणकै येक समयमें तिष्ठते जीव, तिन सबका परिणाम समान होहै ॥ गुणस्थान घाटि वादि पलटणी नाही, तब सम्यक्त होय, चौथा गुणस्थान कहजावे है ॥ ९२ ॥

॥ प्रमादके ३७५०० भेद है सो, कहै हैं ॥ छप्पै ॥

विकथारूप पचीस और पणवीस कषायनि ॥ गुणतै छसैसवा, पांच इंद्री मनसौं गुनि ॥ पौनाचार हजार, पांच निद्रासौ गुनिये ॥ सहस पौन उनईस नेह अरु मोहसु गुनिये ॥ साढेसैतीस हजार सब भेद प्रमाद प्रवानिये ॥ छट्टे गुनस्थानकलौं कहे, त्याग आपथिर ठानिये ॥ ९३ ॥

अर्थ—विकँथा २५ है, तिनकौ २५ कषायसे गुणिये, तब सवा छसै ६२५ भेद भये. तिनकौ ५ इंद्री १ मन इन छसौ गुणिये, तब पौनाचार हजार ३७५० भेदभये. तिनकौ ५ निद्रासे गुनिये, तब पौना उगनीस हजार १८७५० भेद होहै.

तिनकौ १ स्नेह १ मोह इन दोसौ गुनिये, तब सादा सेतीस हजार ३७५०० भेद भये. ये प्रमादके भेद, प्रथम गुणस्थानसे छट्टे गुणस्थान पर्यंत है, ताते छट्टे गुणस्थानका नाम प्रमत्त है. सातवे गुणस्थानका नाम अप्रमत्त है, तहां अंसमात्रभी प्रमाद नहीहै. ऐसा प्रमादकों त्यागीकै आप आत्मामें स्थिरभूत होय, तब संसारका भ्रमण मीटे, मोक्षका सुख प्राप्त होय है ॥ ९३ ॥

* राजकथा, भोजकथा, स्त्रीकथा, चोरकथा, धन, वैर, परखंडन, देश, कपट गुणवंध, देवी, निष्ठुर, शून्य, कंदर्प, अनुचित भंड, मूर्ख, आत्मप्रशंसा, परवाद, ग्लानि, परपीडा, कलह, परिग्रह, साधारण, सांगीत.

॥ तीनघाट नवकोट मुनीकी संख्या ॥ सवैया २३ सा ॥

पांच किरोड तिरानवै लाख हजार अठानवै दोसै छजानो ॥ जीव छटे गुणतै
अध सातमे, ग्यारसै छ्यानवै चारि ठिकानो ॥ आठ नवै दस बारह चौदहमे
उनतीस निवै परवानो॥तेरमे आठहि लाख हजार अठानवै पांचसै दोय वखानो९४

अर्थ–छट्टे गुणस्थानमें मुनि पांचकोट, तिरानवेलाख, अठानवे हजार, दोसे छे हे. ५९३९८२०६
सातवे गुणस्थानमें दोयकोट, छ्यानवेलाख, नवेनौ हजार, येकसो तीन है. २९६९९१०३
आठवेमें २९९ नववेमें २९९ दशवेमें २९९ ग्यारवेमे २९९ इन ४
गुणस्थानमें उपसम श्रेणीमांडे, है ताके चारोंके जोड. ११९६
आठवेमें ५९८ नववेमें ५९८ दशवेमें ५९८ बारवेमें ५९८ चौदवेमें, ५९८

इन ५ गुणस्थानमें क्षायक श्रेणीमांडे, है ताके चारोंके २९९०
तेरमा गुणस्थानमें उत्कृष्ट केवली भगवान येकेकाल होवे तो ८९८५०२

नव स्थानका सब जोड. आठकोटि, निन्यान्वेलाख, निन्यान्वे हजार, नौसें, सत्यांनवे. ८९९९९९७

॥ भावार्थ ॥ अढाई द्वीपमें मुनी संख्या उत्कृष्ट होवे तो येके कालमें, छट्टे गुणस्थानतें चौदमा गुणस्थान पर्यंत, तीन घाट नवकोट मुनी होय है. इनतें वधती नही पावे ॥ ९४ ॥

पहले गुणस्थानमें अनंतानंत जीवहै, दुसरेमें १३ कोट तीसरेमें ५२ कोट, चौथेमें ७०० कोट, पांचवेमें १०४ कोट.

॥ १४ गुणस्थानमें १४८ प्रकृतीका क्षय ॥ छपै ॥

॥ सात प्रकृतिको घात ठीक सातम गुणठानै ॥ तीन आवनहि होय
नवम छत्तीसो भानै॥दशमें लोभ विदार, बारमें सोलमिटावै ॥ चौदमेके
अंत बहत्तरि तेर क्षिपावे ॥ इमतोरिकर्म अठतालसौ मुक्तिमाहि सुख
करतहे ॥ प्रभुमोहि बुलावो आपढिग हमहूं पायनि परत है ॥ ९५ ॥

अर्थ– अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, मिश्रमिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, इन ७ प्रकृतीको घात सातमें अप्रमत्त गुणस्थान पर्यंत कहांही येक गुणस्थानमें होय है ॥ सो अप्रमत्त दोय प्रकार है, १ स्वस्थान अप्रमत्त १ सातिशय अप्रमत्त (श्रेणीकेसन्मुखहोय) मोक्षगामी जीवकै येक मनुष्य आयु है. नरक, पशु, देव, इनतीन आयुकी सत्ता होय नही.

नववे गुणस्थानमें ३६ प्रकृतीकाक्षय होय है ॥ दशमें गुणस्थानमें १ सूक्षमलोभका क्षय होय. ज्ञानावरणकी ५ प्रकृती–मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, केवल. दर्शना वर्णकी प्रकृती ६ चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला. अंतरायकी ५ प्रकृती–दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य. इन सोलं १६ प्रकृतीका नाश वारमे गुणस्थानमें होय है ॥

सातवे गुणस्थानमें ७ प्रकृती, नवे गुणस्थानमे ३६ प्रकृती, दशमें गुणस्थानमे १ प्रकृती, वारमे गुणस्थानमें ३६ प्रकृती. ऐसें ६३ प्रकृतीका क्षय होय, तव १३ वे गुणस्थानमें केवलज्ञान होहै ॥ चौदवे गुणस्थानके अंतमें दोय समय वाकीरहे तव पहले समयमे ७२ अर दूसरे समयमें १३ ऐसे ८५ प्रकृतीका* क्षयकरै तव आत्मा मोक्षकौ जावे है, तहां अनंत सुखका अनुभवले. मोक्षके येक समयके सुखकौ उपमा देनेकौ तीन लोकमें कोऊभी सुख नाही ॥ हे सिद्ध परमेष्ठी ! मै आपके चरणकमलकौ नमस्कार करूहूं मोकौ आपढिग वुलावो. ॥ ९५ ॥

* ८५ प्रकृतीका वर्णन १।२।३।८।११।१३ पृष्ठमे है, तहां देखलेना. इन गुणस्थानमें कोई प्रकृती क्षयहोय नहीं.

॥ नववे गुणस्थानमें ३६ प्रकृतीका क्षय हो है ॥ ३१ सा ॥

प्रत्यारुयानि चार, औ अप्रत्यारुयानि चारभेद, संजुलन तीन, नवनो कषाय जा-
नीये॥ येकेंद्रि विकलत्रय थावर आताप उदोत सूक्षम साधारन जीवनिकौ मानीये॥
निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचला अरु स्त्यानगृद्धि नींदतीनौ महाखोटि कवहून ठानीये॥
नरक पशु गति आनु पूरवि प्रकृति चार नवे गूणथानक ये छत्तीस मानीये॥९६॥

अर्थ—प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ. संज्वलन क्रोध, मान, माया, हास्य, रती, अरती शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री, पुरुष, नपुंसक, ये २० प्रकृती कषायकी. येकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौइंद्री, स्थावर, आताप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारन ये ९ प्रकृती जीव विपाकी की ॥ निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ये ३ निद्रा महा खोटी है, चित्तमें कबहू नलाइये ॥ नरकगति, पशूगती, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, ये ४ सब मिलिके ३६ प्रकृती भई. इसीका नववे गुणस्थानमें क्षपक श्रेणीवाला मुनी सत्तातें नाशकरे है॥ ९६ ॥

॥ तेरमे गुणस्थानमें ७ त्रिभंगी ॥ छपै ॥

साताराजु आश्रव द्वार इक साता कहिये ॥ चौदे भाव, प्रमान पिच्यासी
सत्ता लहिये ॥ अस्सी चौरासि इक्यासि और पिच्यासी ॥ यह सत्ता
चउभेद, विशेष जिनेश्वरभासी ॥ इक कमी चालीस उदीरना, उदे बिया
लीस मानिये ॥ यह तेरम गुणस्थानमें सात त्रिभंगी जानिये ॥ ९७ ॥

अर्थ– १ सत्यमन १ अनुभयमन १ सत्यवचन १ अनुभयवचन १ औदारिककाय १ औदारिक मिश्र १ कार्माण. इन ७ आश्रवतें केवली भगवानके कर्म आवे है ॥

तेरवे गुणस्थानमें १४ भाव पाइये, सो भावत्रिभंगीतें, देखिलेना, कवित्तमे है

तेरमे गुणस्थानमें ८५ प्रकृतीकी सत्ता पाईये, किसी जीवके ८० प्रकृती सत्ता पाईये, ४ आहारक चतुष्क १ तीर्थंकर प्रकृती विना किसीकौ तीर्थंकरविना ८४ की सत्ता पाइये. किसी

जीवके आहारक चतुष्क विना ८१ प्रकृतीकी सत्ता पाईये, ऐसे सत्ताके ४ भेद है, सो नाना जीव अपेक्षा है. सर्वज्ञ वीतराग जिनेश्वर देवने दिव्यध्वनीकरी द्वादशांग सूत्रमें कहे है ॥ तेरमे गुणस्थानमे ३९ प्रकृतीकी उदीरना (कर्मकौ जोरावरीते उदय आणिकै क्षपावे) है, अर ४२ प्रकृतीका उदये है. ८५।८४।८१।८० ये सत्ताके चार भेद अर भाव, उदै, उदीरना ये ३ भेद, ऐसौ ७ त्रिभंगी तेरमे गुणस्थानमें जाननी ॥ ९७ ॥

॥ चौदमे गुणस्थानमें ७ समुदघात ॥ ३१ ॥ सा

पहले समैमें करै दंड, आठमें सवरै. परदेश आतमा औदारीक प्रवानीये ॥ दूजे
कपाट होय, सातमे संवरे. सोय प्रतर छट्ठे मिश्रजोग औदारीक जानीये ॥ तीसरै
प्रतर, चौथे पूरन सर्वलोक, संवरे पांचमें पूरन कारमान मानीये ॥ आठ समै
माहिजात केवल समूदघात निर्जरा असंख्य गूनि देव सो वखानीये ॥ ९८ ॥

अर्थ–आयूके छमहिना बाकी रहै पीछे केवलज्ञान उपजै तेते मुनी नियमथकी समुदघातकरे है, अर जिनके छहमहिना पूर्वी केवलज्ञान उपज्या होय ते समुदघात करेभी अर नाहीभी करै, करनेका सर्वथा नियम नाही. चौदमे गुणस्थानके अंत, आठ समय बाकी रहिजाय तव, आयुकर्मके स्थिति समान तीन कर्म (गोत्र, वेद, नाम) की स्थिति होनेके अर्थि, केवली भगवानके आत्माका प्रदेश शरीके वाहेर निकसै है, पहिले समयमें प्रदेश दंडवत् निकसै सो आठवे समयमें संवरे (निमटे) है, तहां औदारि काय योग है ॥

दूसरे समैमे प्रदेश कपाटरूप फैले, सो सातवे समैमें संकोचै है. तहां औदारिक मिश्रयोग है ॥ तीसरे समैमें प्रदेश प्रतररूप (विलोनी रईका फूलसम) फैले सो छट्टे समैमें संकोचे है. तिसरे समै कार्माण योग है, और छट्टे समैमें औदारिक मिश्रयोग है.

चौथे समैमें आत्माके प्रदेश लोकपूरन (तीन लोकमें सर्वत्र जागा) फैले, सो पांचवे समयमे संकोचरूप होय है, चौथे अर पांचवे समयमें कार्माण योग है. या प्रकार आठ समयमे केवलज्ञानी केवलसमुद्घात करके तीनोकर्मकी स्थिति आयुकर्म बराबर (समान) करै, जो समय समय निर्जराथी तिससमय असंख्यातगुणी निर्जराकरै, तिस आत्माकौ देव कहीये ॥ ९८ ॥

॥ इति गुणस्थान वर्णन समाप्तं ॥ ५ ॥

॥ जिनवाणीके पदोकी संख्या. अथ ज्ञानवर्णन ॥ सवैया ३१ ॥ सा ॥

सोलासै चौतीस कीरोर तिराऐसि लाख अठत्तरसैं आठऐसि अक्षरये लेखीये ॥
इक्यावन कोट आठलाख सहसचौरासि छसै साडे ईकईस सीलोकये पेखीये ॥
ताकौ पद एकजोर, एक सौबारे कीरोर तीरासि लाख सहस अठावन देखीये ॥
पंचपद येतेसब द्वादशांग जीनवाणि वंदौ मनवच काय ज्ञानकौ विशेषीये ॥९९॥

अर्थ–श्रीसर्वज्ञ जिनेंद्र देवके दिव्यध्वनी (जिनवाणी) कौ, चार ज्ञानकेधारी गणधरदेवने द्वादशांगरूप रचना गूथी (करै) है, तिस द्वादशांग वाणीके पदौकी संख्या कथन करै है. जिनवाणीके एकपदके अक्षर १६३४८३०७८८८ है. ये अक्षरके श्लोक करिये (३२ अक्षरका १ श्लोक) येक पदके श्लोक ५१०८८४६२१॥- भये, इतने श्लोकका येक पद भया. अव

च्या

०॥

द्वादशांगवाणीके सब पदोकी संख्या कहेहै. येकसौ, बाराकोट, तिरासिलाख, अठावन हजार, पांच पद है ११२८३५८००५ इस भांति जानने, ऐसें द्वादशांग वाणीको मन वचन काय करि भाव सहित वंदोहो स्मरौहो पढौ हो ध्यावोहो तिसतै भेद विज्ञान होय, ग्यानकी दृष्टी होयहै ॥९९॥

॥ अक्षर गिणतीके ११ भेद कहे है ॥ छपैं ॥

ग्यारअंक पदयेक, दस सबपद जाणी ॥ पूरवचौदे अंक, वीस अक्षर जिनवाणी ॥ उनतिस अंक मनुष्य, पल्य पैतालिस अक्षर ॥ सरसौ कुंड छियाल, डेढसे थिति अक्षरवर ॥ इकतीस अंक पल कलपके जंबू फलावटि दस वरन ॥ सब वातवलै ग्यारै वरन धन जैनवैन संसै हरन ॥ १०० ॥

अर्थ– १ जिनवाणीके येक पदके ग्यार अंक–१६३४८३०७८८८ है,
१ द्वादशांग वाणीके सब पदौके दशअंक ११२८३५८००५ है ॥
१ पूरवके चौदह अंक– ७०५६०००००००००० सत्तरलाखकोट, छप्पन सहस कोट. ॥
१ द्वादशांग वाणीके अक्षरकै वीस अंक १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५, है.
१ पर्याप्त मनुष्य २९ अक्षर प्रमाण है. ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५३६०,
१ पल्यके पैतालीस अक्षर है, येक योजनका उंडाचौडा गोल कुंड रोमकरि भरिये, सो सो वर्षसे येक येक रोम निकारिये, जब कुंडखाली होय, तिसका नाम पल्य कहिये. वो ४५ अक्षर है. ४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२००००००००००००००००००० ॥

१ लाख योजनका लंबा चौडा, हजार योजनकाउंडा कुंडकरी सरसु सिगाऊ भरिये ते सरसू ४६ अंक है. ऊपरके माफक तीन कुंड संपूर्ण भरके खाली करे, तहां डेदसे अक्षर प्रमाण सरसूं माई है ॥

१ कल्प काळके ३१ अंक है, दसकोडाकोडी पल्पका ये सागर अर वीस कोडाकोडी सागरका येक कल्पकाळ कहीये, तिस एक कल्पकाळके ३१ अंक प्रमाण पल जानने.

१ जंबूद्वीपको चौरसकरि तिसका घनाकारक फैलाइये तो तिस घना कारके, प्रमाण योजन दस अंक ७९०५६९४१५० है. अरस्थूलयोजन दश अंक ७५०००००००० हो हैं ॥

१ वात वलोकी फलावट ११ अंक १०२ ४१९८३४८७ प्रमाण है, जगत प्रतरको गुणाकार ११ अंक है. ऐसें ग्यारा अंक गिणतीके भेद, जिनेंद्र देवके दिव्य ध्वनीमें कहेहै, ती दिव्यध्वनी धन्य है, सत्य है, जिनके सुनवेते अनादि कालका संशय दूर होजाय है ॥ १०० ॥

॥ सप्तभंग जिनवाणीके भेद कहे है ॥ सवैया ३१ ॥

द्रव्य क्षेत्र काल भाव आपने चतुष्टय अस्ति, परके चतुष्टै सेन नास्ति दरवहे ॥
आपसे हे परसेन येक समै अस्ति नास्ति ज्योके त्यो न कहेजाहि अव तव तच्छ हे ॥
अस्तिक हैं नास्तिका अभाव अस्ति अव तव नासक है, अस्तिनाहि नाश अव तव हे॥
येकठे कहे न जाय अस्ति नास्ति अव तव स्यादवादसेति सात भंग सधे सव है १०१

अर्थ–१ प्रत्येक पदार्थ अपने द्रव्य क्षेत्र काल भाव, (चतुष्टय) अपेक्षासे अस्तिरूप (आपसा) है, तातै यह, स्यात (कथंचित) अस्ति कहीये.

१ अर वोही पदार्थ अन्य द्रव्य क्षेत्र काल भाव, चतुष्टय अपेक्षा से नास्तीरूप है, आपसा नाही है, तातै यह स्यात् नास्तिकहीये.

१ अपने अपेक्षा करि अस्तिरूप है, परके अपेक्षा करि नास्तिरूप है, तातै एकै कालमें पदार्थ स्यात् अस्ति नास्ति कहीये.

१ पदार्थका स्वरूप एकांतकरि ज्योका त्यो सर्वथा कह्या न जाय, अस्तिकहै तो नास्तिका अभावआवे, नास्तिकहै तो अस्तीका अभाव आवै, अस्ति नास्ति येके काल कह्या न जाय ताते स्यात् अवक्तव्य है.

१ जो सर्वथा अस्ति कहिये तो नास्तिका अभाव होयगा, द्रव्य अस्ति रूप है, परजाय नाहीं तातै, पदार्थ स्यात अस्ति अवक्तव्य कहीये.

१ दव्यके नास्ति कहिये तो अस्तिताका अभाव होय, पदार्थ नास्तिरूप है पररूप कह्या जाता नाही. तातैं यह स्यात् नास्ति अवक्तव्य कहीये.

१ अस्तीके कहनेमें नास्तिका अभाव, नास्ति कहनेसें अस्तीका अभाव, द्रव्य अस्ति नास्ति येके कालमे है परंतु कह्या जाता नाहीं, वचन क्रमवर्ति है तातै स्यात् अस्तिनास्ति अवक्तव्य कहीये. ये ७ भंग अधीक नही अर कम नही है, लोकके अनुप्रश्नके वश अर व्यवहारमें चलन साध्य है, तातै पदार्थोंका अनेकांतरूप सधे है अर व्यवहारमे बाधा आतिनाही. जे सप्त भंगनही सधै, ताकौ एकांतरूपमे अनेक दोष आते है ॥ १०१ ॥

॥ जीव (आत्माकी) महिमा वर्णन ॥ सवैया ३१ सा ॥

जीव है अनंत, एक जीवके अनंतगूण, एक गूणके असंख परदेस मानीये ॥
एक परदेसमै अनंत कर्मवर्गनाहै, एक वर्गना अनंत परमानु ठानीये ॥
अनूमें अनंत गूण, एक गूणमैं अनंत परजाय एककै अनंतभेद जानीये ॥
तीनतेहुं ये अनंत तातै होहिंगे अनंत सबजानै समैमाहि देवसो वखानीये॥१०२॥

अर्थ—जीव अपनी अपनी सत्तालिये है, जीव अनंत है, जीव राशीके संख्याका प्रमाण द्विरूप वर्ग धारामें कहां है तहां ते जाननां अर येक जीवके अनंत गुण है, ते जीवराशीते भी अनंत गुणे है तोभि, आलापकरी अनंतही कहेजाय है. जीव है सो असंख्यात परदेशी है निश्चय नयकरी जीव अर गुण इनमे भेद नाहि है, अभेद है, तातै एकगुण असंख्यात असंख्यात परदेशी जानने ॥ जीवकै येकेक परदेश ऊपर अनंत अनंत कर्म वर्गना है, सो संसारी जीवके प्रदेशमें एकावगाहि होय, परस्पर तिष्ठहै. येकेक कर्म वर्गनामें अनंतानंत पुद्गल परमाणू है, क्योकी अनंत परमाणू मिलेविना कर्मरूप वर्गना होवै नाहि, यह नियम है ॥ अर पुद्गलके येकेक परमाणूमें अनंते गुण है, येकेक गुण अनंतानंत परजाय रूप परिणमें है, येकेक परजायके अनंतानंत भेद है, सो जानना. द्रव्यके भी अनंत भेद है, सो वर्तमान कालमें अनंत प्रकार रूप परिणमे है॥ वर्तमानतै अतीत कालमें अनंत अर अतीत कालतै अनागत कालमें अनंत गुणे व्हे है. ये सबको एक समैमे साक्षात् देखै अर जानै सो सर्वज्ञ देव कहीये ॥ १०२ ॥

॥ ग्रंथके समाप्तीके अंत मंगल ॥ छप्पै ॥

नमहु नाम अरिहंत, थुनहु जिनबिंब कलिलहर ॥ परमौदारिक दिव्यबिंब, निर्वाण अवनिपर ॥ कहौ कल्यानक काल, भजहु केवल गुण ग्यायक ॥ यह षटविधि निक्षेप महा मंगल वरदायक ॥ मंगल दुभेद सब जायगल, मंगल सुख लहै जीवरा ॥ यह आदि मध्य परजंतमैं मंगल राखो हीयरा ॥ १०३ ॥

अर्थ—१ प्रथम अर्हंत देवकौ नामलेना नमस्कार करना सो महामंगल कारी है.
१ जिनेश्वर देवके बिंबकी स्तुती करना सो पापकी हरन हारीहै, मंगल कारी है ॥
१ समव सरणमें गंधकुटीमें विराजमान अर्हंत देवकौ परमौदारिक शरीरका दर्शन महामंगल है ॥
१ केवली भगवान् जहांतें निर्वाण गये सो पृथ्वी सम्मेदाचलादिकका दर्शन महा मंगल है ॥
१ तीर्थंकरके पाचौ कल्याणकका काल (मित्ति) परम पवित्र दिनहै, मंगल कारीहै.
१ केवली भगवान (अर्हंत) के गुणोकी भक्ति करना, पढना सो महा मंगल कारी है ॥
यह छहप्रकार मंगलकी स्थापना महामंगल वरदायकहै ॥ मं (पाप मैल) दो प्रकार है, अंतरंग मैल, बाह्यमैल, सो गलजाय है. मंग (सुख) ललाति (देवै) आत्माकौ सुख देवै सो मंगल कहीये ॥ ग्रंथकी आदि मध्य अंतमें छहविधि मंगल हिरदेमें राखौ, जातै ग्रंथकी समाप्ति निर्विघ्न सुखसौ होय है ॥ १०३ ॥

॥ इतिश्री द्यानतरायकृत चरचाशतक समाप्त ॥

॥ कविका अनुग्रह ॥ **भूमिका** ॥ (हेतु) छपै ॥

॥ चरचा मुखसौं भने, सूनै नहि प्राणीकानन ॥ केई सुनि घरजाय नाहि
भाखै फिरि आनन ॥ तिनिकौं लखि, उपगार सार यह शतक बनाई ॥ पढत
सुनत व्हे बुद्धि, शुद्ध जिनवाणी गाई ॥ इसिमें अनेक सिद्धांतका कथन,
मथन द्यानत कहा ॥ सब माही जीवको सार हे, जीवभाव हम सर्दहा ॥१०४॥

अर्थ—जे पुरुष सज्जन हैं, उपगारी है, शास्त्रके ज्ञाता हे, ते पुरुष बुद्धिबलकरी, सूत्रमाफिक वचनिकारूप चरचा मुखसों करै है, सभामें सुनावे हे, परंतु केई प्राणी कान देके सुनै नाहि, सुननेविषे मन लगावे नाहि. अर केई प्राणी सुनकरि घरधंदेमें फसिकरि विसरी जाय है, यादि राखे नाहि. ऐसे देखिके उपगारके अर्थ, द्यानतरायजीने सार (मनोज्ञ) गंभीर अर्थके भरे सो १०० कवित्त बनाये, तिसीका नाम चरचा शतका धन्या. शत श्लोकेन पंडितः ये सो कवित्त सुननेते पढनेते महा तीक्ष्णबुद्धि होय हे. इस सो कवित्तमे जिनेश्वर देवके शुद्ध वानीका वर्णन है. बालबुद्धिनिको अध्यात्म जिनशास्त्रमें प्रवेश होनेके अर्थि सं० १७८० चेत्र वद्य १२ गुरुवारे द्यानतराय कवीने अनेक सिद्धांतका कथन भलेभांति मथन करिके तत्वका सार जीवद्रव्य काढ्या हे. सो हमने श्रद्धा न कीया है. सकल सिद्धांत (द्वादशांग जिनवाणी) जीव द्रव्यके जाननेके वास्ते है ॥ १०५ ॥